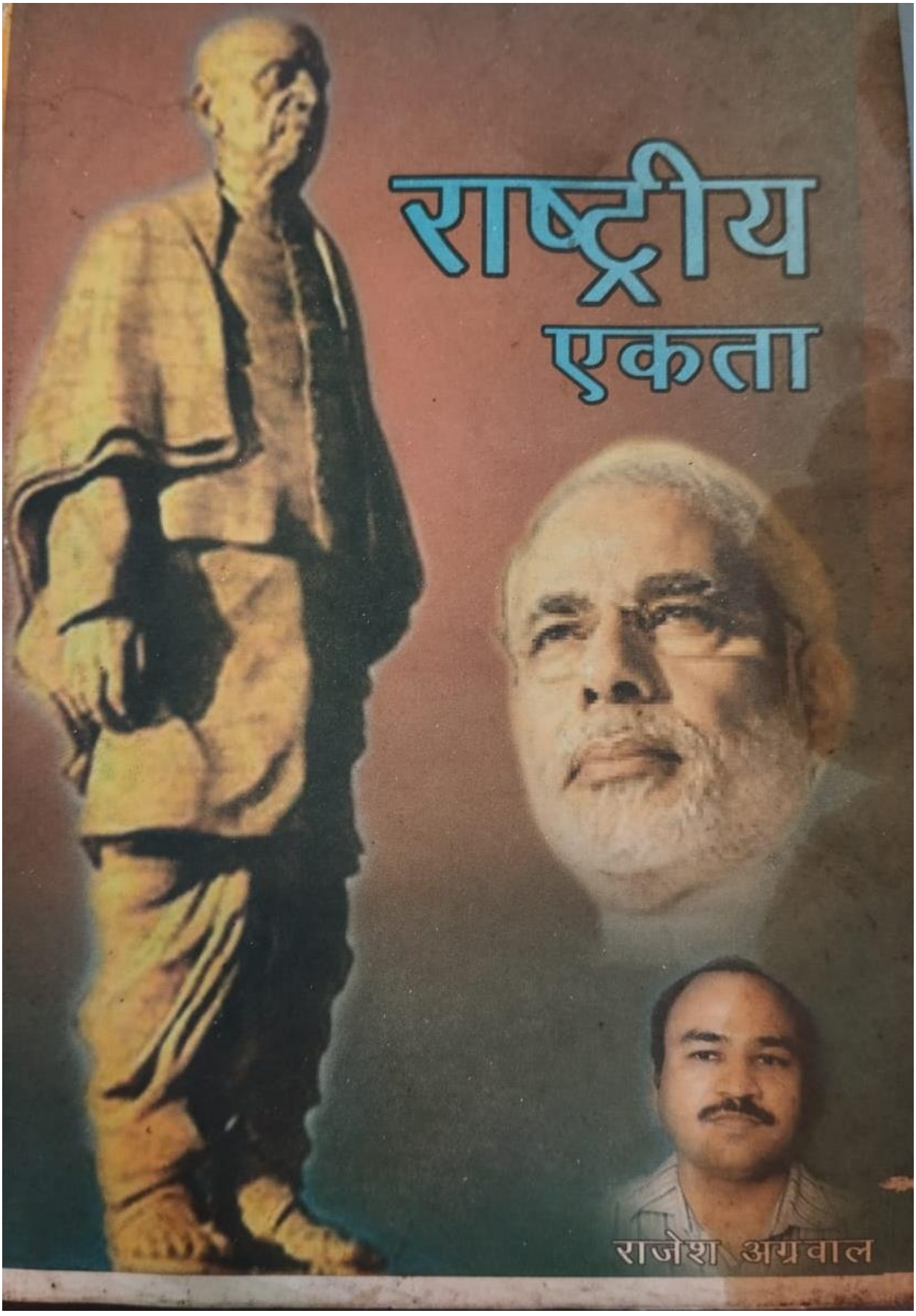
राष्ट्रीय
एकता
राजेश अग्रवाल

''राश्ट्रीय एकता'' का यह द्वितीय संस्करण 2015 में प्रकाषित हो रहा है। प्रथम संस्करण जनवरी 1992 में प्रकाषित हुआ था। इस पुस्तक में प्रकाषनार्थ जिन महानुभावों के लेख,कविताएं एवं संदेष हमें प्राप्त हुए थे उन सभी के हम आभारी हैं ।

आदरणीय बलराज मधोक जी जैसे महान विभूति का लेख प्रकाषित करते समय हमें एक विषेश प्रकार के गौरव की अनुभूति हो रही है। उन्होंने अपने पत्र में लिखा था कि कष्मीर मामले के वे जीवित गवाह हैं और इस विशय पर वे अपना लेख टाइप किये हुए की अपेक्षा हस्तलिखित ही प्रेशित करना उचित समझे। इसका उल्लेख भी पत्र में उन्होंने किया। उनके प्रत्येक षब्द में उनकी महानता की झलक के दर्षन कर हम गौरव का अनुभव करते हैं। अपेक्षा है कि हम सब उनकी देषभक्ति से प्रेरणा प्राप्त करेंगे। आदरणीय बलराज मधोक भाजपा से पूर्व की जनसंघ के अध्यक्ष रह चुके हैं। अ.भा. विद्यार्थी परिशद,जम्मू की प्रजा परिशद एवं जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। रा. स्व. संघ से एवं षिक्षा जगत से उनका निकट का संबंध रहा है।

कवि एवं स.पा. सांसद उदय प्रताप सिंह प्रकृति को माध्यम बनाकर जीवन की सच्चाइयों को अपनी कवितों में उतारते हैं। प्रकाषनार्थ कविता प्रेशित करते हुए उन्होंने पत्र में लिखा था कि वे भाजपा की नीतियों से असहमत हैं और समाजवादी पार्टी के सांसद हैं। परन्तु राश्ट्रीय एकता एक ऐसा विशय है जिस पर हमें व्यक्तिगत एवं संस्थागत बातों से ऊपर उठ कर सोंचने और करने की आवष्यकता है।

कवि के उक्त षब्दों की झलक आज हम अपने अधिकांष नेताओं में अलग प्रकार से देखते हैं। वे भी समय समय पर एक हो जाते हैं परन्तु राश्ट्र की समृद्धि और राश्ट्रीय एकता की अपेक्षा अपने अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये अधिक।

छत्तीसगढ़ के वरिश्ठ पत्रकार श्री रमेष नैयर का लेख ''गीताः विष्व समुदाय का जीवन–षास्त्र'' भी राश्ट्रीय एकता की श्रृखला को मजबूती प्रदान करता है। रामकृश्ण मिषन छत्तीसगढ़ रायपुर के प्रमुख स्वामी सत्य रूपानंद जी महाराज इस लेख की प्रषंसा करते हुए लेखक को आषीर्वाद प्रदान कर चुके हैं। उल्लेखनिय है कि इस पुस्तक के संपादक प्रेमेन्द्र अग्रवाल के भी आत्मीय संबंध स्वामी जी से रहे हैं जब वे विद्यार्थी जीवन में संघ के स्वयंसेवक रहते हुये विवेकानंद आश्रम की स्थापना रायपुर में करने हेतु संघर्शरत थे।

श्री गुमान मल लोढ़ा राजस्थान एवं असम के मुख्य न्यायाधीष रह चुके हैं। आपके अनेक निर्णय ऐतिहासिक रहे हैं। सुप्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी श्री चेतन चौहान अमरोहा उ.प. से भाजपा के सांसद रह चुके हैं। कवि ब्रजभूशण सिंह आपके मांमा हैं ।

रायपुर के पूर्व जिलाधीष एवं म.प्र. के पूर्व सचिव श्री सुषील चन्द्र वर्मा के विचार भी इसमें प्रकाषित हैं। युवकों के प्रेरणा स्रोत स्वर्गीय दिलीपसिंह जूदेव जी के प्रयासों से सरगुजा क्षेत्र के हजारों आदिवासी जो इसाई मिषनरियों के छलकपट से इसाई बने थे पुनः अपने हिन्दूधर्म में घर वापसी मुहिम के तहत लौटे हैं। हिन्दू हित के लिए सदैव सब कुछ करने को तत्पर रहे रायपुर के स्वर्गीय कुन्तल कुमार चौहान एडव्होकेट की चर्चा जूदेव जी के साथ होना स्वाभाविक है।

रायगढ़ के वर्तमान विधानसभा सदस्य श्री रोषन लाल अग्रवाल का अपने क्षेत्र के लोगों के हित के लिए सदैव जूझते रहना स्वभाव बन चुका है।

माखनलाल चतुर्वेदी राश्ट्रीय पत्रकारिता वि.वि. भोपाल के पूर्व महानिदेषक श्री राधेष्याम षर्मा 'युगधर्म' दैनिक एवं अंग्रेजी दैनिक ''ट्रिव्यून'' से भी जुड़े रहे हैं।

छद्म धर्म निरपेक्षता के प्रबल विरोधी कानपुर के अंसार कंबरी जी की राम पर लिखी कविताएं सम्पूर्ण देया में चर्चित हैं। सर्वश्री रामेष्वर षुक्ल अंचल, माणिक वर्मा,चन्द्रसेन विराट,एवं चंन्द्रहास षुक्ल म.प्र. के कवि हैं। डा. हरिहर बख्ष सिंह म. प्र. साहित्यि सम्मेलन के अध्यक्ष रह चुके हैं। हल्दीघाटी पर लिखा उनका महाकाव्य 'युगधर्म' दैनिक में धारावाहिक रूप से प्रकाषित हो चुका है।

इस पुस्तक के सम्पादक प्रेमेन्द्र अग्रवाल की प्रेरणा से मैं 'एकता–यात्रा' में सम्मिलित हो काष्मीर जा सका और 'राश्ट्रीय एकता' पुस्तक का प्रकाषन जनवरी 1992 में कर सका। द्वितीय संस्करण अब 2015 में कामर्षियल सर्विसेज् रायपुर द्वारा राश्ट्रीय एकता के पवित्र कार्य में अपना योगदान देने हेतु किया जा रहा है। इसकी प्रेरणा इस संस्थान को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उद्घाटित 'एकता की दौड़ (Run for Unity) से प्राप्त हुई है।

–राजेष अग्रवाल

पूर्व उपाध्यक्ष भा.ज.युवा मोर्चा रायपुर जिला

ISBN -978-81-930512-2-1

राष्ट्रीय एकता

सम्पादक

प्रेमेन्द्र अग्रवाल

©Copy Right

कामर्षियल सर्विसेज स्टेष्नरी हाऊस सिंधी स्कूल के पिछे,रामसागर पारा,रायपुर,492001
फोन नं. 0771–4075078

मुद्रक

साधूराम अग्रवाल, बी. ई. (मेके), डिप्लोमा बी.एम.
अषोक प्रेस, स्टेषन रोड, रायपुर छ.ग.

प्रकाषक	–	कामर्षियल सर्विसेज स्टेष्नरी हाऊस सिंधी स्कूल के पीछे,रामसागर पारा रायपुर, छ.ग. 492001
सर्वाधिकार	–	सुरक्षित
संस्करण	–	द्वितीय,2015
भाशा	–	हिन्दी
पृश्ट	–	122
अनुवाद	–	श्री प्रेमेन्द्र अग्रवाल
मूल्य	–	150 रू.
साईज	–	9"x5.5" हार्डबोर्ड कवर

ISBN -978-81-930512-2-1

अनुक्रम

01	सम्पादकीय	प्रेमेन्द्र अग्रवाल	01–11
02	भारत की एकता और संविधान की धारा 370	प्रो. बलराज मधोक	12–17
03	एकता गीत (कविता)	उदय प्रताप सिंह	18–19
04	गीता : विष्व समुदाय का जीवन–षास्त्र	रमेष नैयर	20–24
05	जिसका हिंदुस्तान है, उसका है कष्मीर (कविता)	अंसार कंबरी	25–26
06	गजल व संदेष		27
07	हमारी सांस्कृति विरासत और आज की व्यवस्था	सुषील चन्द्र वर्मा	28–34
08	होंगे रचना मग्र वही विद्रोही बागी (कविता)	रामेष्वर षुक्ल 'अंचल'	35
10	लाल चौंक पर तिरंगा कैसे फहरा	जस्टिस गुमानमल लौढ़ा	37–40
11	मचल उठा है एक एक जन एक सूत्र में बंधने को (कविता)	चन्द्रहास षुक्ल	41
13	एकता यात्रा के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी		43–45
14	जहां हुए बलिदान मुखर्जी वह कष्मीर हमारा है	चेतन चौहान	46–47
15	देषभक्ति बन अंगार दहकी व व्यंग–गजल (कविता)	ब्रजभूशण सिंह गौतम मानिक वर्मा	48
16	राश्ट्र को एक भारतीय आत्मा की दृश्टि से देखें	राधेष्याम षर्मा	50–53
17	कविता		54
18	गमला संस्कृति व एकता यात्रा		55
19	भगवान षंकर मुस्लिमों के प्रथम पैगंबर एकता के प्रतीक		56–58
20	एकता–यात्रा पर संस्मरण	दिलीप सिंह जुदेव	60–63
21	हम सब हिन्दुस्तानी (कविता)	चन्द्रसेन 'विराट'	64
22	प्राचीन भारतीय साहित्य में राश्ट्रीयता के स्वर		65–68
23	हिन्दी को अपनायें	राधा अग्रवाल	69
24	संविधान की धारा 370 देषद्रोह पूर्ण है	कुन्तल कुमार चौहान	70–72
25	पृथ्वीराज चौहान की अस्थियां: भारत का वज्र–सम्मान वापस लाये		73–78
26	राश्ट्रीय एकता में नारी का महत्व	लक्ष्मण प्रसाद वर्मा	79–80
27	रामलला को तंबू में देखकर कांषी की महिलाएं भी दुखी है।		82–84
28	एकता की भावना को त्याग के तप से तपाये	ष्यामलाल चतुर्वेदी	85–86
29	राश्ट्रीय एकता और हिन्दी	श्रीमती वन्दना सक्सेना	87
30	गऊ कथा करते भगवा वस्त्रधारी मुस्लिम कथाकार		88
31	एकता का प्रतीक		89
32	एकता के आधार स्तम्भ	विनोद कुमार अग्रवाल	91
33	षहीदों को समझने पर ही राश्ट्रीय एकता	राजेष कुमार अग्रवाल	92–93
34	मदरसों में दिए जा रहे हैं हिंदू संस्कार		94–96
35	लोकमान्य तिलक	सुरेष कुमार अग्रवाल	97
36	घर वापसी समर्थक डॉ. आंबेडकर एवं आफ्रिका से गांधी का भारत लौटना		99–102
37	राश्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर राजपथ से प्रधानमंत्री के ''रन फॉर यूनिट'' भाशण का मूल पाठ		103–106
38	मैं हिन्दू और मुस्लिम दोनों हूं: सलमान खान		107–108

राश्ट्रीय एकता

प्रेमेन्द्र अग्रवाल

हम कौन हैं, हमारा भारत क्या है, हमारे पूर्वज हमारे राश्ट्रपुरूश कौन थे, हमारी संस्कृति और सभ्यता क्या है, इन सब प्रष्नों के सही उत्तर प्राप्त किये बिना राश्ट्रीय एकता को समझना और इसके लिए कुछ करना मृगमरीचिका के समान ही निरर्थक प्रयास होगा। हमारी राश्ट्रीय एकता में सबसे बड़ी बाधा हमारी अभारतीय षिक्षा व कृत्रम विकृत इतिहास है जिसे अग्रेजी षासन काल में बड़े योजनाबद्ध रूप से गढ़ा गया और आज स्वतंत्र भारत में भी उसी का अनुसरण हम कर रहे हैं।

हिन्दू बाहर से नहीं आये

हमें इस ऐतिहासिक सत्य को स्वीकार करना चाहिए कि 'आर्य' षब्द सर्वप्रथम विष्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदो में श्रेश्ठ विषेशण के रूप में प्रयुक्त हुआ।

प्राचीन काल से सिन्धु घाटी के इस पार रहने वालों को हिन्दू कहा जाता रहा है। हिन्दू में आर्य और द्रविण अर्थात ऊत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय दोनो सम्मिलित हैं। आर्य और द्रविण एक दूसरे के अभिन्न अंग रहे हैं, बन्धु रहे हैं,दुष्मन नहीं। हमारे ईष्वर के प्रमुख मनुश्य अवतारों राम, कृश्णा, बुद्ध, आदि का रंग सांवला (द्रविणों जैसा) ही है।

हिन्दू का वह सहज धर्म जिससे हिन्दू हिन्दू कहलाता है। हिन्दूधर्म नहीं हिन्दुत्व हैं। किसी समुदाय के धर्म का भ्रम उससे नही होना चाहिए। इस तथ्य की पुश्टि हमारे प्रायः सभी महापुरूशों ने की है।

महात्मा गांधी ने कहा – '' हिन्दुत्व सत्य के अनवरत षोध **का** ही दूसरा नाम है।''

भू.पू. राश्ट्रपति महान दार्षनिक डा. राधाकृश्णन की मान्यता रही है कि '' हिन्दू तो एक जीवन पद्धति (Way of Life) है। यह हमारे जीवन का अंग है, हमारे धर्म का नहीं।

'महाभारत' दूरदर्षन धारावाहिक के संवाद लेखक डा. राही मासूम रज़ा जिनका स्वर्गवास **हो चुका** है ने एक लेख में कहा था–

'' हिन्दू षब्द किसी धर्म से ताल्लुक नहीं रखता। ईरान और अरब के लोग हिन्दुस्तानी मुसलमान को भी हिन्दू कहते हैं। यानी हिन्दू नाम है हिन्दुस्तानी कौम का, मैंने अपनी थीसिस में यही बात लिखी थी तो उर्दू के मषहूर विद्वानने यही बात काट दी थी'' अतएव हम सभी भारतीयों को चाहे किसी भी धर्म के अनुयायी हों हिन्दू षब्द को वास्तविक अर्थ में अपनाना चाहिए।

भारत नया निर्माणाधीन राश्ट्र नहीं

भारत का निर्माण एक दिन में .....हुआ है। हां भारत का विभाजन जरूर रातों रात एक दिन में अंग्रेजों के क्रुचक्र में फंस कर हुआ है। हमारे भारत का इतिहास विष्व का प्राचीनतम इतिहास है। आज हम जिस भारत भूमि के वासी हैं उसी भारत भूमि के वासी सहस्त्रों वर्शों से हमारे पूर्वज रहें हैं, हमारे राश्ट्रपुरूश एक हैं, संस्कृति एक है, सभ्यता एक है। विश्णु पुराण में एक ष्लोक है जिसका भावार्थ है कि जिसके उत्तर में हिमालय, दक्षिण में समुद्र है उसी का नाम भारत है उसी की संतान हम भारतीय हैं। अतएव भारत कोई नया निर्माणाधीन राश्ट्र नहीं है, अति पुरातन सनातन राश्ट्र है।

कृत्रिम या निर्माणाधीन राश्ट्र के समक्ष किस प्रकार की अजीबो गरीब स्थिति पैदा हो जाती है इसे समझने के लिये हम पाकिस्तान का ही उदाहरण लें। सन् 1947 के पहले पाकिस्तान भारत का ही एक अंग था। 1947 के पहले का उसका अलग से कोई इतिहास या संस्कृति नहीं है। इसलिए पाकिस्तान को इस सत्य को झुठलाने में बड़ी कसरत करनी पड़ रहीं है।

पाकिस्तान के दिल्ली स्थित राजदूत अफजल इकबाल ने एक अवसर पर कहा था कि इकबाल की नज्म 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' से यह नहीं समझना चाहिए कि उन्होने हिन्दुस्तान की षान में यह लिखा नहीं, उन्होंने यह समूचे विष्व के लिए लिखा है। इस प्रकार के कुतर्क क्यों करने पड़ रहे हैं?

इसी प्रकार का दूसरा उदाहरण बसन्त पंचमी का है। सैकड़ों वर्शो से इसे हिन्दू और मुस्लिम दोनों मनाते हैं। आज भी भारत के समान ही पाकिस्तान के सूबा पंजाब में भी बसंत पंचमी धूमधाम से मनाई जाती है। परन्तु अब वहां के

कट्टर पंथी जनता से इसे न मनाने का फतवा जारी किये हैं उन्हें इसमें भारतीय संस्कृति की सुगंध मिल रही हैं।

हमारे राश्ट्रपुरूश कौन हैं?

न गोरी रहा है न बाबर रहा है
मगर राम युग युग उजागर रहा है

अधिकांष मुस्लिम बंधुओं को उनके कट्टरपन और हमारी सरकार की तुश्टीकरण की नीति ने यह सोचने ही नहीं दिया कि मुगलकाल से पहले भीभारत था। वे भी मुगलकालीन भारत के ही नहीं विष्व के सर्वाधिक प्राचीन गौरवषाली जगत गुरू, भारत के वंषज हैं। यही बात ईसाइयों पर भी लागू होती है। भय और लोभ के कारण अनेक लोगों ने धर्म परिवर्तित किया और कुछ लोगों ने जीवन पद्धति भी बदल डाली। अंग्रेजों ने भी अपने षासनकाल में अनेकों को इसाई बनाया और जो इसाई नहीं बने उन्हे लार्ड मेकाले की षिक्षा नीति ने अंग्रेजी सभ्यता का गुलाम बना दिया इन सब बातों का प्रभाव हम आज भी भारत में देख रहे हैं और ये ही बातें राश्ट्रीय एकता में बाधक है।

डा. हेडगेवार ओर वीर सावरकर ही नहीं डा. राधाकृश्णन जैसे महान व्यक्तियों के विचार रहे हैं कि धर्मान्तरण करने वाला संस्कृति की दृश्टि से हिन्दू रह सकता है।

प.पू गुरूजी माधव सदाषिव गोलवलकर ने कहा है व्यक्ति के तीन धर्म होते है– व्यक्ति धर्म, कुलधर्म, राश्ट्रधर्म। व्यक्तिधर्म यानी उपासना पद्धति परिवर्तन से कुल धर्म और राश्ट्रधर्म परिवर्तित नहीं होना चाहिए। फिर इसाई या मुसलमान अपने नाम राम, कृश्ण, अषोक आदि न रख कर जान, थामस, अली, हसन, आदि क्यों रखते हैं। षेख और सैयद अरब की जातियां हैं। फिर भी अधिकांष भारतीय मुसलमान अपने को उनका वंषज कैसे अनुभव करते है यह समझ से परे हैं। मां बाप प्रायः उनके जो आदर्ष रहे हैं उन्हीं जैसा नाम अपनी संतानों का भी रखना चाहेंगे। रावण, कुम्भकरण, जयचंद अपने लड़के का नाम नहीं रखना चाहेंगे। अतएव सिर्फ इस्लाम धर्म के अनुयायी कोई है इसी आधार पर अपनी संतानों का नामकरण नहीं करना चाहिए। हमारे राश्ट्रपुरूशों और हमारी संस्कृति के अनुरूप ही हमें नामकरण करने चाहिए। इससे राश्ट्रीय एकता को बल मिलेगा।

अभी हाल ही मे ईराक में युद्ध भड़का लाखो भारतीय जिनमें अधिकांष मुस्लिम व इसाई थे भारत में ही वापस लौटे, पाकिस्तान, अरब देष या इंलैण्ड नही गये। भारत हारता है और पाकिस्तान जीतता है क्रिकेट मैच मे तो फिर फटाके नहीं फूटने चाहिए। ये बातें साधारण सी है पर इन पर षांत मन से विचार करना चाहिए।

डा. राही मासूम रज़ा ने लिखा था–''मैं एक मुसलमान हिन्दू हूं। कोई विक्टर इसाई हिन्दू होगा और कोई 'मातादीन' वैश्णव या आर्य समाजी हिन्दू एक देष में कई धर्म समा सकते हैं परंतु एक देष में कई कौमें नहीं समा सकती। मेरे पुरखों में गालिब और मीर के साथ सूर, तुलसी और कबीर भी आते हैं।''

प.पू. गुरूजी का एक संस्मरण है – एक बार एक वरिश्ठ अमेरिकी प्रोफेसर ने गुरूजी से प्रष्न किया– मुसलमान और इसाई इसी देष में है, आप उन्हें अपनों में ही क्यों नहीं समझते। उत्तर में गुरूजी ने उन्ही से उल्टे एक प्रष्न कर दिया– ''मान लीजिये हमारे देष का ही व्यक्ति अमेरिका जाता है, बसने लगता है और वहां का नागरिक बनना चाहता है। किंतु वह आपके लिंकन, वाषिंगटन, जेफरसन तथा अन्य राश्ट्रीय महापुरूशों को स्वीकार करने से इंकार करता है, स्पश्ट उत्तर दीजिये कि क्या आप उसे अमेरिका का राश्ट्रीय कहेंगे।'' उन्होने कहा नहीं।

एक ओर हम महाराश्ट्र में हिन्दू वोट बंटोरने के लिये छत्रपति षिवाजी की स्टेच्यु का अनावरण करने के लिये दौड़ पड़ते हैं, महाराणा प्रताप के वंषज जो म. प्र. में कहीं रहते हैं, उनके समर्थन को चुनावी माहौल में प्रचारित करते हैं और दूसरी ओर आक्रमककारी आततायी मुगल महिमा मंडित हों इसका वातावरण बनाने हैं या बनने देते हैं। वोट की राजनीति का यह खेल देषहित को बलायेताक रखकर आखिर हम कब तक खेलते रहेंगे?

छद्म धर्म निरपेक्षता का चक्कर

अपने षासन काल में कांग्रेस ने हमें यही सिखाया और पढ़ाया कि कांग्रेस का और वह भी कांग्रेस के नरम दल का स्वतंत्रता आंदोलन और पं. नेहरू तथा उनके परिवार का षासन ही भारत का इतिहास है। इसके अलावा और कुछ जानने योग्य है ही नहीं। व्यर्थ में गड़े मुर्दे उखाड़ना है। कांग्रेस ने अपने षासनकाल में पं. नेहरू के कृत्रिम राश्ट्रवाद और अनीष्वरवादी छद्म धर्मनिरपेक्षता का जो चक्कर चलाया उसके कारण से हम गुमनाम, बिना पहचान और भटके हुये दिषाविहीन राहगीर की भांति हो गये है।

ऐसे समय में स्वामी विवेकानन्द के इस उद्धरण का हमें स्मरण करना चाहिए ''मुझे अपने पूर्वजों को अपनाने में कभी लज्जा नहीं आई। मैं सबसे गर्वीले व्यक्तियों में से एक हूं।.....जितनी ही मैंने भूतकाल पर दृश्टि डाली यह गर्व मुझमें बढ़ता ही गया है।.....तुम्हारे रक्त में भी अपने पूर्वजों के लिये उसी श्रद्धा का संचार हो जाये।'' ठीक इसके विपरीत पं. नेहरू ने अपने स्वयं के बारे में कहा था कि वे घटनावष हिन्दू हैं।

पाठ्य पुस्तकों में बच्चों को गणेष का 'ग' पढ़ाया जाता था तो तत्कालीन कांग्रेस सरकार को इसमें साम्प्रदायिकता की झलक दिखाई दी। गधे का ग पढ़ाया जाने लगा। कहीं कहीं गमले का 'ग'। इसी प्रकार उ.प्र. की कांग्रेसी सरकार ने स्व. ष्यामनारायण पाण्डे की 'हल्दी घाटी' और 'जौहर' कविताओं को साम्प्रदायिक करार देकर पाट्यक्रम से निकलवा दिया था। महाराणा प्रताप, छत्रपति षिवाजी, गुरू गोविन्द सिंह झांसी की रानी लक्ष्मी बाई आदि को संकट के समय अवष्य हमारी सरकार दूरदर्षन के माध्यम से याद कर लेती है। ऐसे समय वे साम्प्रदायिक नहीं रहते।

'चाणक्य' दूरदर्षन धारावाहिक के सम्बन्ध में हमारी केन्द्र सरकार की असमंजसपूर्ण स्थति भी यही कहानी कहती है। देष भक्ति के गीतों को,भगवाध्वज को, हर हर महादेव के नारे को, त्रिषुल को साम्प्रदायिक करार दिया गया। परन्तु प्रधानमंत्री जी की सूझबूझ से दूरदर्षन को सत्बुद्धि आई।

तुश्टिकरण की नीति

हिन्दू मुस्लिमों के बीच सदैव सद्भाव रहा है। परन्तु थोक वोट पाने की लालच से तुश्टिकरण की नीति अपनाये जाने से राश्ट्रीय एकता भंग हुई है।

काष्मीर में सद्भाव था। वहां धारा 370 लागू होने से पाकिस्तानी मदद से अलगाववाद और उग्रवाद पनपा। कष्मीर को अरबो रूपये दिये जाते हैं पर वहां हिन्दुओं का कत्लेआम जारी है।

कलकत्ता हाईकोर्ट में जब ईस्टर्न इडन गार्डन काण्ड से सम्बन्धित एक मुस्लिम मुर्दे की लाष को पोस्टमार्टम हेतु कब्र से निकलवाया तो हजारों मुस्लिमों ने न्यायालय का घेराव कर उसे मजहब के खिलाफ बताकर न्यायाधीश को आज्ञा वापस लेने हेतु बाध्य कर दिया।

तलाकषुदा महिलाओं की मानवीय समस्याओं पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को सिर्फ मजहब के कारण संसद में विधेयक पारित कर कांग्रेष सरकार ने रद्द कर दिया। विरोध में तत्कालीन मंत्री आरिफ मोहम्मद खां ने त्यागपत्र तक दे दिया था यह साहबानों प्रकरण कांग्रस की धर्म निरपेक्षता है। (नागालैण्ड़) मिंजोरम चुनाव में कांग्रेस द्वारा चुनावी घोशणा पत्र में पृथक इसाई राज्य की स्थापना का वचन दिया गया था।

विष्वनाथ प्रताप सिंह भी अपने षासन काल में इस प्रतियोगिता में षामिल हुये। मुहम्मद साहब के जन्म दिन पर बिना मांगे छुट्टी घोशित कर दिये। इमाम बुखारी के इषारों पर नाचना प्रारंभ कर दिया। कांग्रेस और मार्क्सवादी दोनों ही केरल में बारी बारी से मुस्लिम लीग को गले लगाते रहे। मुस्लिम लीग के ही इषारों पर थोक वोट पाने के लिये कांग्रेस ने अपने पिछले घोशणा पत्र में धार्मिक स्थालों की 1947की यथास्थिति रखने का वायदा किया था।

सब के लिये समान कानून

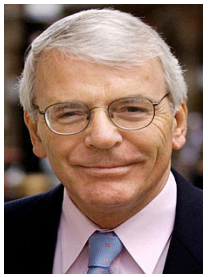

देष के सभी नागरिकों के लिये फिर चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान या ईसाई समान कानून होने चाहिए पर हमारे यहां यह बात नहीं है इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री जान मेजर ने अपने देष में मुसलमानों द्वारा मुस्लिम संसद बनाये जाने की मांग पर कहा कि, ''जिसे विषिश्ट आकार चाहिए वह इंग्लैण्ड छोड़ कर चला जाए'' परन्तु हमारे नेता इतनी दो टूक स्पश्ट बात नहीं कहना चाहते। वोट का चक्कर जो है।

राम जन्म भूमि, कृश्ण जन्म भूमि पर भव्य मंदिर बनना चाहिए। यह धार्मिक नहीं राश्ट्रीय अस्मिताका सवाल है। हिन्दू मुस्लिम एकता राश्ट्रीय एकता का सवाल है। सच पूछा जाये तो हिन्दू मुस्लिमों के बीच इस संबंध में विवाद नहीं है। यदि कोई विवाद है तो वह पैदा किया गया है। एक मुष्त वो पाने की ललक ने, तुश्टीकरण की नीति ने भड़काऊ और टकराव का वातावरण बना दिया है।

प्रस्तावित राम जन्मभूमि मंदिर रामलला वर्तमान में

हमारी तो यह धारणा है कि अयोध्या में भव्य राम मंदिर के निर्माण का प्रयास भाजपा के अलावा अन्य किसी ने किया होता तो यह विवाद गहराया नहीं होता। राम और कृश्ण ऐतिहासिक महापुरूश, राश्ट्र के गौरव हैं। रामायण, महाभारत को भुलाकर राश्ट्रीय एकता की बात करना बेमानी है। महाभारत के बारे में वेद व्यास ने लिखा है ''संसार में जो जानने योग्य है वह सब इस पुस्तक में है और जो नहीं है, वह जानने योग्य ही नहीं है।''

कुछ लोगों को रामायण और महाभारत कपोल कल्पित,राम और कृश्ण काल्पनिक पात्र लगते हैं। उन्हें यह पूछते हुए षर्म नहीं आती कि 'राम जन्म भूमि' में ही और कृश्ण 'कृश्ण जन्म भूमि' में ही जन्म लिये थे इसके क्या प्रमाण हैं। यदि कोई उन्हीं से पूछे कि आपने स्वयं को जन्म लेते हुये क्या देखा था? यदि नहीं देखा था तो फिर कैसे अपनी मां को मां और बाप को बाप कहते हैं। ईष्वर एक अदृष्य षक्ति हैं। फिर भी सारा संसार उसे क्यों मानता है? आखिर आस्था, विष्वास और सदियों से चली आ रही परम्पराओं से बढ़ कर सत्य कौन सा होता है?

राम और कृश्ण का विरोध सभी मुस्लिमों में नहीं है। इस पुस्तक में कानपुर के अंसार कबरी जी के दोहे एवं गजलें हम प्रकाषित कर रहे हैं। उन्होंने संस्कृत में एम.ए. किया है। उन्होंने हमें जो पत्र लिखा है उसका प्रारंभ उन्होंने राम राम से किया है। इसी सम्पादकीय में हम स्व. राही मासूम रजा के उद्धरण दिये हैं। उन्होंने मरहूम इस्मत चुगताई के साथ उर्दू लिपि को देवनागरी में बदलने का प्रयास भी किया पर ''कट्टरता'' ने उनके प्रयास को सफल नहीं होने दिया। देवी रेहाना तैय्यब जी गुजरात की थी, अपने पत्रों में भी ''किषन जी की बंसरी'' का उल्लेख करती थी। उन्होंने भी इसी संबंध में 1947में गांधी जी को एक पत्र लिखा था।

परन्तु मुष्किल यह है कि ऐसें लोगों को 'कट्टरता' काफिर की संज्ञा दे देती है। वे हिन्दू हो गये हैं कह दिया जाता है। क्या ऐसे लोग साम्प्रदायिक हैं?

इसी वर्श कुछ दिनों पूर्व रायपुर के समाचार का ही उल्लेख सांकेतिक दृश्टि से हम कर रहे हैं। बागबहरा तहसील के नर्रा ग्राम में धार्मिक आयोजनों में सभी धर्मानुयायी मिल जुल कर भाग लेते हैं। नजब खां, मेहताब खां, तथा अम्मो बी अपने जीवन के अंत समय तक राम के अनन्य भक्त रहे। इस प्रकार के एक नहीं अनगिनत उदाहरण हैं।

रामभक्ति और कृश्ण भक्ति हिन्दू मुस्लिमों के बीच सेतु का काम करती रही है। वोटों की राजनीति ने इस सेतु पर गाज गिराई है। 1238 में जन्में हजरत निजामुद्दीन औलिया सूफी संत हिन्दी के कवि और अमीर खुसरों के गुरू थे। रही, रसखान, रसलीन, मुबारक मधनायक,पेनी (सैयद बरकत), मीर जलील, रहमत आदि ऐसे महान कृश्ण भक्त कवि हुये जिनके जितनी प्रषंसा की जाये उतनी कम है'' इन मुसलमान हरिजन पै कोटिन हिन्दून वारिये।''

फिर प्रष्न उठता है कि आखिर अब उस प्रकार का वातावरण अधिक क्यों देखने में नहीं आ रहा है। इस पुस्तक में कुछ स्थानों पर मोहम्मद इकबाल की कविताओं की कुछ पंक्तियों छपी हैं। उन्होंने हिन्दुस्तान और हमारी संस्कृति सभ्यता का जी भर कर बखान किया है। परन्तु उसके बाद आखरी में उन्होने बिलकुल पलटी मार दी और इस महान कवि ने बाद में लिखा–

''मुस्लिम हैं हम वतन हैं सारा जहां हमारा'' हम जरा सोचें वे कौन सी परिस्थितियां थी? इसी कारण हमारा कहना है कि मुसलमान राश्ट्र भक्त नहीं हैं यह कहना गलत है। फतवों का डर बहुतों को राश्ट्रभक्ति के मार्ग से हटने को उन्मुख करता है। हमें चाहिए कि हम उन परिस्थियों को जनता के सामने लायें।

इसी तर्ज पर कम्युनिश्ट भी ''मास्को इज दी कपिटल आफ वर्ल्ड'' गाते रहे। एक मित्र (कम्युनिट) देष दूसरे देष पर आक्रमण करे तो वहां के मित्रों (कम्युनिटों) को चाहिए कि वे मित्र देष की सहायता करें। आज इन सिद्धानों की ध्वज्जियां उड़ गई है। सद्दाम हुसैन का क्या हश्र हुआ हम देख रहे हैं। बिहारी मुसलमानों पर पाकिस्तान में कितने अत्याचार हो रहे हैं क्या हमारे मुस्लिम बंधु नहीं देख रहे हैं।

अपने प्रति आत्म ग्लानि क्यों?

परर विभवेशा दरोपि न कर्तव्यः
पर विभेशादरोपि नाष मूलम्।

अर्थात परकियों के वैभव के प्रति आदर बुद्धि रखने से उनके अंधानुकरण की प्रवृत्ति निर्मित हो कर स्वत्व की हानि होती है। स्वत्वहीन समाज का सहजता से विनाष होता है। कवि डा. उदय प्रताप सिंह की एक छोटी सी कविता के भाव हैं–''बेचारा सूरज पूरब से उग कर डूबने को पष्चिम में चला। इसकी एक दो झलक हम दे रहें हैं।

उद्घाटन समारोहों में नारियल फोड़ना, दीप प्रज्जवलित करना साम्प्रदायिक सझते हैं और फीता काटने की पाष्चात्य परम्परा को असाम्प्रदायिक!

प्रसिद्ध साहित्यकार प्रभाकर माचवे अमेरिका भ्रमण कर लौटे तो अपने संस्मरण सुनाते हुये उन्होनें कहा था कि हमारे यहां के अखबारों में षादी बिवाह के संबंध में जो विज्ञापन छपते हैं उसमें सर्वप्रथम आवष्यक षर्त वर–वधू के लिए होती है, कि वह गौर वर्णीय हो। इन विज्ञापनों को पढ़कर अमेरिका के लोग हंसते हैं। वे बिचारे तो हजारों रू. रोज खर्च करने सांवला होने सूर्य की किरणों का स्नान करने भारत आते हैं।

यूरोपियन स्त्री–पुरूश के सुनहले भूरे बालों की ओर हम सहसा आकर्शित हो जाते हैं और अपने बालों को भी खिजाब लगाने लगते हैं। जबकि स्काटलैंड में नये वर्श के आगमन पर लाल बार्लो वाले स्त्री पुरूश को देखना अषुभ और काले बालों वाले स्त्री पुरूश को देखना षुभ माना जाता है।

स्वदेषी भावना

अन्तर्राश्ट्रीय मुद्रकोश से हमारे केन्द्रीय वित्त मंत्री उनकी षर्तो पर ऋण लिये जाते रहे हैं और हर क्षेत्र में बहुराश्ट्रीय कंपनियों के भारत प्रवेष के लिये द्वार खोलते रहे हैं। इसकी भी चर्चा यहां जरूरी है। हमारी सरकार इस सिद्धांत पर चल रही है कि जबतक जीवो खुषी से जीवो. उधार लो और घी पीयो।

हम इतनी जल्दी भूल गये कि ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रवेष भारत में व्यापारिक कंपनी के नाते ही हुआ था जिसने कि भारत को 200 वशों तक गुलाम बनाये रखा। फलों का व्यापार करने वाली एक बहुराश्ट्रीय कंपनी ने चिली का तख्ता ही पलट दिया था। भारत में बहुराश्ट्रीय कंपनियों के हर क्षेत्र में प्रवेष से देष की सूरक्षा व एकता को खतरा है ही, इसके अलावा वे अपने प्रचार–प्रसार

से अंधाधुंध कमायी पूंजी भी विदेष भेजेंगे। हिन्दुस्तान लीवर गत वर्शों से प्रतिवर्श 15 से 17 करोड़ रूपया इंग्लैण्ड भेजते रहा है।

अब हमारे सामने एक ही उपाय बचता है। भारत की जनता स्वदेषी की राह पर चल पड़े तो बहुराश्ट्रीय कंपनियों को हम उल्टे पांव वापस जाने के लियो बाध्य कर सकते हैं।

एकता यात्रा और उसके बाद.....

भाजपा अध्यक्ष डा. मुरली मनोहर जोषी की कन्याकुमारी से कषमीर तक की एकता यात्रा का सफल समापन हो गया है। आरोप प्रत्यारोप के दौरान अब बंद होने चाहिए और आगे की ओर देखना चाहिये। प.पू. गुरूजी ने अपना संपूर्ण जीवन अपने निजी सहायक बाबा थत्ते के साथ रेल यात्रा करते हुये भारत के जन जन को बच्चे बच्चे को जागृत करने में बिताया। वे प्रायः कहा करते थे रेलगाड़ी का डिब्बा ही मेरा घर है। एक प्रष्न के उत्तर में उन्होंने कहा था – अभी तो पूरे भारत के ही दर्षन नहीं हुये हैं तो विदेष यात्रा का प्रष्न ही कहां। करोड़ों रूपये विदेष यात्रा में पानी की तरह बहाने वाले हमारे मंत्रियो और नेताओं को उनके जीवन से षिक्षा ग्रहण कर आवष्यक हो तभी विदेष यात्रा करना चाहिए और बांकी बचे समय को दूर दराज गांवों को देखना समझने में लगाना चाहिए।

आज भी ऐसे गांव हैं जहां स्वतंत्रता के बाद आज तक कोई नही पहुंचा है। एक उदाहरण हम दे रहे हैं। म.प्र. की राजधानी भोपाल से मात्र 1 कि.मी. दूर बंदीखेड़ी ग्राम में आजादी के बाद पहली बार (तत्कालीन) राज्य कृशि मंत्री लक्ष्मीनारायण षर्मा पहुंचे थे। ऐसे गांव एक नहीं अनेक हैं। आखिर उनकी सुध ा कौन लेगा?

राश्ट्रीय एकता के लिये आवष्यक है कि हम संपूर्ण राश्ट्र को एक रूप में देखें। हम प्रायः देखते हैं कि यदि कोई नेता बनता है तो सारे नियमों को बलाये ताक रख कर अपने क्षेत्र के, अपनी पार्टी के अपनी जाति बिरादरी के लोगों की भरती सरकारी नौकरियों में करना प्रारंभ कर देता है। वे अपने ही क्षेत्र मे बड़े बड़े कारखाने आवष्यक विषेशताएं उपलब्ध न होने के बावजूद खुलवाने प्रारंभ कर देता है। प्रधानमंत्रीतक इस प्रकार के आरोपों से अपने

आपको बचा नहीं पाते हैं। बदले की भावना से कार्य करने लग जाते हैं। अकारण ही अपने विरोधीयों को सताना प्रारंभ देते हैं। हर प्रकार के हथकण्डे अपना कर दोनों हाथों से धन बंटोरने में लग जाते हैं। चाटूकार असामाजिक तत्वों की फौज अपने इर्द गिर्द खड़ी कर लेते हैं। वे भूल जाते हैं कि यह वहीं जनता जनार्दन है जो उन्हें धूल भी चटा सकती है।

इंदिरा, राजीव तक को सबक सिखाने षक्ति जिस जनता में हैं उससे बड़ा प्रजातन्त्र में कोई नहीं है। अतएव अन्त में नेताओं मंत्रियों से हमारा आग्रह है कि वे जनहित राश्ट्रहित के मार्ग पर चलें। यदि ऐसा हुआ तो राश्ट्रीय एकता भी कायम रहेगी।

वन्दे मातरम्

भारत की एकता और संविधान की धारा 370

प्रो. बलराज मधोक

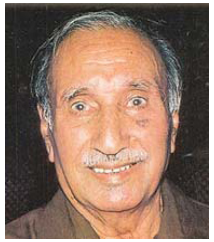

हिन्दुस्तान का यह दुर्भाग्य है कि इसके राजनैतिक नेता और बुद्धिजीवी यथार्थ की अपेक्षा कल्पना की दुनिया में विचरना पसन्द करते हैं। इसलिए वे तथ्यों को जो इतिहास का वास्तविक आधार होते हैं, जानने का प्रयत्न ही नहीं करते क्योंकि उन्हें डर रहता है कि तथ्य उनकी कल्पना का महत्व ध्वस्त कर देंगे। यह बात कष्मीर के साथ संबंधित घटनाचक्र

और विषेश रूप में संविधान में 1949 में डाले गए अस्थायी अनुच्छेद अथवा धारा 370 पर खास तौर पर लागू होती है। इसे कष्मीर को षेश भारत के साथ जोड़ने वाला पुल कहना इसी का परिणाम है। वास्तव में यह पुल नहीं बल्कि खाई है जो कष्मीर और विषेश रूप में इसकी मुस्लिम जनता को भारत से दूर रखने में सहायक हो रही है। इस ध ारा के इतिहास को तथ्यों के आधार पर समझने से यह बात स्पश्ट हो जाती है।

इस अनुच्छेद के संबंध में पहला अकाट्य तथ्य यह है कि इसका जम्मू–कष्मीर रियासत के भारत में विलय के साथ कोई संबंध नहीं हैं। विलयपत्र पर महाराज हरिसिंह ने 26 अक्टू.1947 को हस्ताक्षर किया था जबकि धारा 370 भारत के संविधान में सित. 1949 में डाली गई थी। यह कहना कि कष्मीर का भारत में विलय इस धारा के साथ जुड़ा हुआ है, बुनियादी तथ्यों से अपनी अनभिज्ञता जताना मात्र है।

महाराजा हरिसिंह ने उसी विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए थे जिस पर पटियाला और भोपाल आदि अन्य रियासतों के षासको ने किए थे। उसके अनुसार इन रियासतों ने केवल सुरक्षा, विदेष नीति और संचार विभाग केन्द्र को सौपे थे, परन्तु संविधान सभा में उनके प्रतिनिधि ायों ने देषी राज्यों को ब्रिटिष भारत के प्रदेषों के स्तर पर लाने का फैसला किया यह जम्मू कष्मीर पर भी लागू होता था। महाराजा हरिसिंह को 1947 में ही पंगु बना दिया गया था उनके मानने या न मानने का प्रष्न नहीं था। चली षेख ब्दुल्ला की थी।

कष्मीर के संबंध में जनमत की बात उठाने और संयुक्त राश्ट्र संघ द्वारा 1948 में जनमत संबंधी प्रस्ताव पास करने से एक नई स्थिति पैदा हो गई थी। डिक्सन रिपोर्ट के अनुसार जनमत कष्मीर घाटी तक सीमिमत कर दिया गया था। इस स्थिति का षेख अब्दुल्ला ने लाभ उठाना चाहा। उसने पं. नेहरू पर दबाव डाला कि कष्मीर मुसलमानों के भारत के पक्ष में मत प्राप्त करने के लिए आवष्यक है कि इसकी मुस्लिम बाहुल पहिचान स्थायी रूप से कायम रखा और इसे लग संविधान के साथ विषेश दर्जा दिया जाय। अब्दुल्ला चाहता था कि कष्मीर पर केन्द्र का कोई अधिकार सुरक्षा, विदेष नीति और संचार तक सीमित हो, इसका अलग नागरिकता कानून हो और भारत के लोगों को कष्मीर में किसी प्रकार का कोई अधिकार न हो।

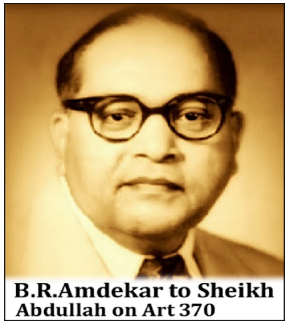

B.R.Amdekar to Sheikh Abdullah on Art 370

पं. नेहरू ने षेख अब्दुल्ला को विधि मंत्री डा. भीमराव अम्बेडकर के पास भेजा। अब्दुल्ला की बात सुनकर ड़ा. अम्बेड़कर ने जो कुछ कहा वह उन्होंने स्वयं मुझे बताया था। उन्होने अब्दुल्ला से कहा कि तुम चाहते हो कि भारत तुम्हारी रक्षा करे, सड़क बनाए, अनाज दे, कष्मीर को सारे भारत के बराबर के अधिकार प्राप्त हो परन्तु भारत सरकार के कष्मीर में अधिकार अति सीमित हों और भारत के लोगों का कष्मीर में कोई अधिकार न हो। मैं भारत का विधि मंत्री हूं, तुम्हारी बात मानना भारत के हितों से द्रोह करना होगा मैं यह नही करूंगा।

ड़. अंबेड़कर से टका सा जवाब मिलने के बाद अब्दुल्ला फिर पं. नेहरू के पास गया। पंड़ित जी ने तब गोपाल स्वामी आयंगर को कहा कि किसी प्रकार अब्दुल्ला को सन्तुश्ट किया जाय। परन्तु संविधान सभा इस प्रकार का कोई सुझाव मानने को तैयार नहीं थी। तब श्री आयंगर सरदार पटेल के पास गए और उन्हें कहा कि पं. नेहरू, अब्दुल्ला को वचन दे बैठे हैं उनकी इज्जत का सवाल है, इसलिए वे कुछ करें। पं. नेहरू उस समय विदेष में थे। सरदार पटेल ने स्थिति की नजाकत को समझते हुए इस धारा को पास तो करवा दिया परन्तु संविधान सभा में सरकार की ओर से स्पश्ट आष्वासन दिया गया कि जनमत संबंधी प्रस्ताव के दबाव के कारण जो विषेश स्थिति पैदा हुई है

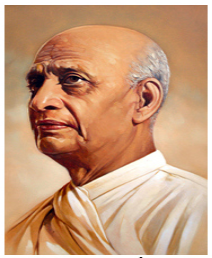

सरदार पटेल

उसके कारण इसे संविधान में डाला गया है और आषा व्यक्त की कि इसे षीघ्र निरस्त कर दिया जायेगा। इसलिए इस धारा को संविधान के उस अध्याय में रखा जिसका षीर्शक है :–

अस्थायी और बदली जाने वाले धाराएं

इन तथ्यों के प्रकाष में इस धारा को स्थायी बनाने की बात करना न केवल गलत है बल्कि देष के साथ धोखा भी है।

जहां तक कष्मीर के लोंगो की भारत के सेक्यूलरिज़म की रक्षा करने और पाकिस्तानियों से लड़ने की बात है, यह सरासर कपोलकल्पित और सारहीन है। पाकिस्तान के आक्रमण के समय मैं श्रीनगर में था। मैं वहां के डी.स.वी. कालेज में इतिहास विभाग का अध्यक्ष और उसका उप प्रधानाचार्य था। मेरा संघ के साथ भी संबंध था और रियासत के भारत में विलय के लिए प्रयत्नषील था। इसलिए मुझे वहां की स्थिति की प्रत्यक्ष और परोक्ष जानकारी है। जब 21 अक्टूबर 1947 को पाकिस्तान का आक्रमण षुरू हुआ कष्मीर घाटी में इसके विरोध में एक आवाज नहीं उठी। षेख अब्दुल्ला अपने परिवार समेत इन्दौर चला गया उसके साथी किंकर्तव्यविमूढ़ होकर घरों में बैठ गए। जहां कहीं पाकिस्तानी आक्रान्ता पहुंच जाते, मुसलमान पाकिस्तानी झंड़े लहरा कर उनके साथ हो जाते। बारामूला का मकबूल षेरवानी एकमात्र अपवाद सिद्ध हुआ। यह स्थिति 26 अक्टूबर तक बनी रही। उस दिन दोपहर तक कुछ पाकिस्तानी आक्रान्ता छत्ताबल और षाहिन टांग जो श्रीनगर के बारामूला तीन वाली सड़क पर स्थित उपनगर है, तक पहुंच गए और वहां छुट–पुट लुटपाट भी षुरू हो गई। 26 अक्टूबर को दोपकर तीन बजे सूचना मिली कि विलय हो गया है, और भारत की सेना श्रीनगर पहुंच रही है। उसी समय मेरे कहने पर पुलिस डी.आई.जी. श्री ज्ञानवन्द्र बाली वर्दी पहन कर जीप पर श्रीनगर में घूम गए और लोंगो को बताया कि भारतीय सेना आ रही है और चेतावनी दी कि गड़बड़ करने वालों को कड़ा दंड़ दिया जाएगा। इसकी अपेक्षित प्रभाव पड़ा।

सांयकाल तक नेषनल कांन्फेस के झुंड सड़कों पर निकल पड़े। वे नारे लगा रहे थे–

''यह मुल्क हमारा है इसकी
हिफाजत हम करेंगे इसकी
हकूमत हम करेंगे।''

यदि 27 अक्टूबर को भारत की सेना श्रीनगर न पहुंचती तब पता चलता कि कष्मीरी पहचा मुसलमान कितने सेक्युलर हैं। मेरे मन मे यह सन्देह नहीं कि न मैं और न कोई अन्य कष्मीरी हिन्दू कष्मीरी मुसलमानों के सक्यूलरिज्म के तथ्यों को जाने और आत्मवंचना बंन्द करें।

जहां तक कष्मीरी पहचान बनाए रखने का प्रष्न है, उस पर सबसे कड़ा कुठाराघात स्वयं षेख अब्दुल्ला ने किया। जम्मू कष्मीर राज्य के छः भौगोलिक और भाशाई क्षेत्र हैं, उनमें से पहला तो जम्मू है जो रावी नदी से पंचाल पर्वत तक फैला हुआ है। यहां के लोग डोंगरी, भद्रवाही, किष्तवाडी और पहाड़ी बोलियां बोले है जो संस्कृत के अति निकट हैं और जिनकी लिपि देवनागरी है।

दूसरा क्षेत्र लद्दाख है जो जम्मू क्षेत्र से जुड़ा है और उसके लोग तिब्बती में लिखी बोधी भाशा बोलते हैं।

तीसरा क्षेत्र बाल्टिस्तान है जिसी राजधानी अस्कर्दू मेरी जन्मभूमि है। यहां के लोग बाल्टी भाशा बोलते हैं।

चौथा क्षेत्र बल्टिस्तान के पष्चिम में स्थिति गिलगित क्षेत्र है जहां के लोग दर्द या दार्दक भाशा बोलते हैं। लद्दाख बाल्टिस्तान और गिलगित हिमालय के उत्तर में स्थित है तथा तिब्बत और चीन के साथ जुड़े हुए हैं।

पांचवा क्षेत्र मीरपुर, मुजफ्फराबाद है जो तथाकथित ''आजाद कष्मीर'' कहलाता है। यह जेहलम नदी के सटा हुआ मुस्लिम बाहुल क्षेत्र है। यहां के लोगों की भाशा पोठाहारी पंजाबी है।

छठवां क्षेत्र कष्मीर घाटी है यहां के लोग कष्मीरी भाशा बोलते हैं।कष्मीरी वैदिक संस्कृत से निकली एक विकसित भाशा है और भारत के संविधान के अनुच्छेद 8 में उसे षामिल किया गया है। इस क्षेत्र में से तीन मुस्लिम बाहुल क्षेत्र– बाल्टिस्तान, गिलगित, मुज्फ्फराबाद अब पाकिस्तान के अधिकार में है। भारत के पास केवल जम्मू, लद्दाख और कष्मीर घाटी है। केवल कष्मीर घाटी मुस्लिम बाहुल है।

यदि षेख अब्दुल्ला को कष्मीर की विषेश पहचान बनाये रखने की चिंता होती तो वह कष्मीर, जम्मू, और लद्दाख को स्वायत्ता देने में पहल करता

और कष्मीर घाटी के लिए कष्मीर को षिक्षा और प्रषासन की भाशा बनाता। इस एक पत्र से वह न केवल कष्मीर में कष्मीरीयत की रक्षा कर पाता अपितु कष्मीर को षेश भारत के निकट भी ले आता। परन्तु इसनें किया उसके उल्टा।

यह एक कटु सत्य है कि षेख अब्दुल्ला पहले मुसलमान था फिर कष्मीरी था और भारतीय तभी बनता था जब सुविधा उसे बाध्य करती थी। उसने कष्मीर पर कष्मीरी की बजाय फारसी लिपि में उर्दू को इसलिये लाया कि उसका रिष्ता पाकिस्तान के साथ मजबूत हो और भारत के साथ कमजोर। वह न राश्ट्रवादी था और न भारत भक्त। उसका एकमात्र लक्ष्य अपने लिये कष्मीर में स्वतंत्र सत्ता प्राप्त करना था। जब वह भारत की सेना पर रथ पर सवार होकर 27 अक्टूबर 1947 को सांयकाल श्रीनगर लौटा तो आते ही प्रताप चौक मे एक सार्वजनिक भाशण दिया। मैंने उसका वह एक घंटे का भाशण बड़े ध्यान से सुना। इसमें उसने अपने मुस्लिम श्रोताओं से अनेक बार कलमा पढ़वाया और कहा कि, ''हमने कष्मीर का ताज खाक से उठाया है हम हिन्दुस्तान में जाऐं या पाकिस्तान में, यह बाद का सवाल है, पहले हमें अपनी आजादी मुकम्मल करनी है।'' परन्तु, भारत, भारतीय सेना, और रियासत के भारत में विलय का एक बार भी उल्लेख नहीं किया। उस एक भाशण से ही उसके ईरादे स्पश्ट हो गए। आज कष्मीर घाटी में जो कुछ हो रहा है उसके बीज षेख अब्दुल्ला ने इस भाशण के द्वारा 27 अक्टूबर को ही डाल दिए थे।

धारा 370 और उसके अन्तर्गत के अलग संविधान और अलग नागरिकता कानून के कारण कष्मीर की स्थिति में अनेक विसंगतियां और खराबियां पैदा हो चुकी हैं। जम्मू क्षेत्र में पष्चिम पंजाब से एक लाख के लगभग आए विस्थापियों को आज भी विधानसभा के लिए मत देने का अधिकार नहीं। मेरे जैसे व्यक्ति जो वहीं पैदा हुआ, वहीं बड़ा हुआ और आज भी कष्मीर के साथ जुड़ा हुआ है वहां न नौकरी कर सकता है और न मकान के लिए जमीन का टुकड़ा खरीद सकता है।

दूसरी ओर इस धारा के कारण कष्मीरियों में यह धारणा पैदा हो चुकी है कि कष्मीर भारत नही और कि इसके भविश्य फैसला अभी होना है इससे उनके अलगाववाद को आधार भी मिलता है और बल भी।यदि यह धारा निरस्त कर दी जाय और भारत का संविधान कष्मीर पर लागू कर दिया जाय तो कष्मीर के लोगों को वास्तविकता को समझने और उसके साथ समझौता करने की सहायता मिलेगी।व्यवहार में धारा 370 का लाभ केवल कष्मीरियों के षासक वर्ग को मिलता रहा है। इसके कारण उनकी अपनी निरंकुष सत्ता बनाए रखने में भी सहायता मिलती रही है और आर्थिक षोशण में भी। जगमोहन ने अपनी पुस्तक में इस धारा के व्यवहारिक पहलू पर जो प्रकाष डाला है उसे नकारा नहीं जा सकता।

आवष्यकता है कि भारत का बुद्धिजीवि और षासक वर्ग कष्मीर के संबंध में खराब, राश्ट्रवादी और यथार्थवादी दृश्टिकोण अपनाएं। उन्हें सबसे पहले अपने दिलों से पूछना चाहिए कि क्या वे वास्तव में कष्मीर को भारत का अंग मानते हैं या नहीं मानते। यदि यह अंग है, जो एक वास्तविकता है, तो भारत का संविधान जो सारे देष के लगभग 10 करोड़ मुसलमानों के भारत सभी लोगों के लिए उपयुक्त है, कष्मीर घाटी के 30 लाख मुसलमानों के लिए क्यों उपयुक्त नहीं। यह अनुच्छेद कष्मीरी मुसलमानों को भारत के संविधान से काटता है और उनमें यह अहसास पैदा करता है कि कष्मीर का भारत में विलय अस्थायी है और इसका अन्तिम फैसला अभी होना है। इस प्रकार यह धारा उनके और षेश देष के बीच एक मनोवैज्ञानिक खाई का काम करती है। इसे पाटने का एक ही इलाज है और वह है कष्मीर का अलग संविधान खत्म करके उस पर भारत का संविधान पूर्ण रूपेण लागू करना। संविधान के अन्तर्गत कष्मीर की विषेश स्थिति को ध्यान में रखते हुए कुछ अन्य विषेश पग उठाये जा सकते हैं। इस धारा को निरस्त करने में कोई संवैधानिक अड़चन नही है।

भारत की संसद सर्वसत्ता सम्पन्न है। यह उस अस्थायी धारा को निरस्त कर सकती है।

जहां तक रियासत के लोगों का संबंध है स्थिति स्पश्ट है। जम्मू और लद्दाख का बहुमत इस धारा को नहीं चाहता। कष्मीर घाटी के हिन्दुओं ने भी अपने प्रतिनिधि सम्मेलन मे स्पश्ट कर दिया है कि कष्मीर घाटी पर उनका भी बराबरी का अधिकार है। वे घाटी के दक्षिण भाग में अपना ऐसा अलग क्षेत्र चाहता है जिसे भारत सरकार केन्द्र षासित प्रदेष का दर्जा दे।

स्पश्ट है कि वे धारा 370 और अलग संविधान नही चाहते फिर यह धारा 370 है किसके लिए? जो इसे निरस्त करने का विरोध कर रहे हैं वे तो भारत से कट कर पाकिस्तान में मिलना चाहते हैं, उन्हे धारा 370 से कुछ लेना देना नहीं। इसलिये उन्हें संतुश्ट करने के लिए उस धारा की वकालत करना निरर्थक ही नही राश्ट्रविरोधी कार्य भी है।

—0—

Art 370 and PoK are the result of Lord Mountbatten's hided enmity with Nehru due to his romance with Edwina (Book: Accursed & Jihadi Neighbour) Chapt - 5

हाईस्कूल में पढ़ते समय ही छन्द रचने लगे। किषोरवय में मार्क्सवाद की ओर रूझान। अंग्रेजी एवं हिन्दी में एम.ए.। अंग्रेजी के प्राध यापन के रूप में लोकप्रिय और प्रतिश्टित। मदन इंटर कॉलेज, भोगांव और नारायण इंटर कॉलेज, यिाकोहाबाद में 18 वर्शो तक प्राचार्य का पद संभाला। 1989 में लोकसभा के सदस्य के रूप में मैनपुरी क्षेत्र से निर्वाचित। 1997 से 2000 तक राश्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य के रूप में कार्य। दो बार राज्य सभा के सदस्य के रूप में उत्तर प्रदेष से मनोनयन। संप्रति राज्यसभा के सदस्य के रूप में देष सेवा। 1993 में सूरीनाम में आयोजित विष्व हिन्दी सम्मेलन में भारतीय साहित्यकारों का नेतृत्व किया। अब तक 17–18 देषों की यात्रा। सांसद होते हुए भी बेहद फ़क्कड़, सहज और धरती से जुड़े व्यक्ति।

संपर्क : 19 फिरोज षाह रोड नई दिल्ली – 110001

एकता गीत

उदय प्रताप सिंह
(पूर्व)स.ज.पा. सांसद (षिकोहाबाद)

चाहे जो हो धर्म तुम्हारा चाहे ''वादी'' हो
नहीं जी रहे अगर देष के लिये तो अपराधी हो
जिसके अन्न और पानी का इस काया पर ऋण है,
जिसके समीर का अतिथि बना यह आवारा जीवन है
जिसकी मिट्टी में खेले तन दर्पण सा झलका है
उसी देष के लिये तुम्हारा रक्त नहीं छलका है,
जन गन मन के न्यायालय में तो तुम प्रतिवादी हो
नहीं जी रहे अगर देष के लिये तो अपराधी हो
जिसके पर्वत खेत, घाटियों में अक्षम क्षमता है
जिसकी नदियों की हम पर मां जैसी ममता है
जिसकी गोद भरी रहती है मिट्टी सदा सुहागिन है
उसी देष में एक कली भी भूखी या हतभागिन है,
तो चाहे तुम रेषम पहनों या धारे खादी हो
नहीं जी रहे अगर देष के लिये तो अपराधी हो
जिसके मनहर खेतों की मनहर हरियाली से
जिसके रंग बिरंगे फूल सुसज्जित डाली से
इस भौतिक दुनिया का भार हृदय से उतरा है
उसी देष को अगर किसी मनहूस नजर से खतरा है
तो चाहे दौलत ने तुमको हर सुविधा लादी हो

नहीं जी रहे अगर देष के लिये तो अपराधी हां
अगर देष मर गया तो बोलो जीवित कौन रहेगा?
और रहे भी अगर तो उसको जीवित कौन कहेगा?
मांग रही कर्ज जवानी, सौ, सौ, सर कट जायें
पर दुष्मन के हाथ न मां के आंचल तक आ पायें
जीवन का है अर्थ तभी तक जब तक आजादी हो
चाहे जो हो धर्म तुम्हारा, चाहे जो वादी हा
नहीं जी रहे अगर देष के लिये तो अपराधी हो
चाहे हो दक्षिण के प्रहरी या हिमगिर वासी हो
चाहे राजा रंग महल का हो सन्यासी हो
चाहे षीष तुम्हारा झुकता हो मस्जिद के आगे
चाहे भक्ति तुम्हारी मन्दिर, गुरूद्वारे में जागे
भले विचारों में कितना ही अंतर बुनियादी हो
नहीं जी रहे देष के लिये तो तुम अपराधी हो
जिसके चारो ओर स्वार्थ ने खींची लक्ष्मण रेखा
जिसकी आँखों ने माता का बहता आंसू देखा
उस कायर का वीर पीढ़ियां लेते नाम डरेंगी
उसकी सन्तानों पर अक्सर अंगुली उठा करेंगी
चाहे हो राजा का बेटा या फिर षहजादी हो
नहीं जी रहे अगर देष के लिये तो अपराधी हो

गीता : विष्व समुदाय का जीवन–षास्त्र

रमेश नैयर
वरिष्ठ पत्रकार

गीता को फिर राजनीति के दलदल में घसीटने का प्रयास किया गया। पहले भी भगवत् गीता को लेकर रूस सहित कुछ अन्य समाजों के लेखकों द्वारा अनावष्यक विवाद उछाला गया। वस्तुतः ये विवाद कुछ लेखकों और संगठनों ने खुद को चर्चा में लाने के मकसद से उछाले थे। सच तो यह है कि गीता को किसी पंथ विषेश के धर्म ग्रंथ के दायरे में समेटने का कोई औचित्य नहीं है। गीता की वस्तुतः संपूर्ण विष्व समुदाय के एक श्रेश्ठ जीवनषास्त्र के रूप में पहचान बन रही है। विविध उपासना पद्धतियों पर विष्वास रखने वाले विष्व के अनेक देषों के प्रबुद्ध जन गीता को जीवन प्रबंधन के एक मार्गदर्षक ग्रंथ के रूप में मानने लगे हैं। यही कारण है कि विष्व की बीसियों भाशाओं में गीता के अनुवाद प्रकाषित हो रहे हैं। यूरोप, अमेरिका और लैटिन अमेरिकी देषोंके वैज्ञानिक तथा मनोचिकित्सक गीता के अध्ययन को अपने लिए उपयोगी पाते हैं। मनोविष्लेशण और मनोविकारों के उपचार के लिए गीता की कुछ व्याख्याओं को विज्ञान–सम्मत मानते हुए उपयोगी पाया गया है। श्रीकृश्ण ने जिस प्रकार किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये अर्जुन को गहन अवसाद की स्थिति से उबारकर संघर्शशील योद्धा में रूपांतरित किया था वह मनोवैज्ञानिकों के अनुसार उत्तम मनोपचार था।

पष्चिमी देषें में प्रकाषित हो रही जीवन–निर्माण संबंधी अनेक लोकप्रिय पुस्तकों को इन पंक्तियों के लेखक ने पढ़ा है। उनमें से कुछ में गीता की अनुगूंज सुनाई दी है। यह अनायास ही नहीं था कि बेहद अनिष्चिय भरी छः माह की अंतरिक्ष यात्रा पर जाते समय सुनीता विलियम्स अपने साथ गीता की एक प्रति ले गई थी। सुप्रसिद्ध दार्षनिक बर्ट्रेंड रसल गीता को व्यावहारिक दर्षन का श्रेश्ठ ग्रंथ मानते थे। स्वामी रंगानाथानंद का मानना था कि गीता के सभी अठारह अध्यायों में ऐसा उद्धारक ज्ञान दिया गया है जिससे व्यक्ति स्वयं अपनी मुक्ति का मार्ग तलाष लेता है। गीता के दषवें अध्याय में श्रीकृश्ण ने कहा भी है, ''मैं साधक के हृदय में छोटा सा ज्ञानदीप रख देता हूं जिससे वह अपना मार्ग प्राप्त कर लेता है। मेरा कार्य केवल दीप को जला देना है।''

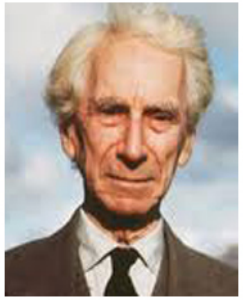

बर्ट्रेंड रसल

मनुश्य की भांति हमारे राश्ट्र की विशम घड़ियों में गीता सदैव सहायक होती रहती है। अठारहवीं सदी ईसवी में जब भारत के विखंडन का संकट धनीभूत हो गया था

आदिशंकराचार्य

तो आदिषंकराचार्य ने पहली बार विषाल ग्रंथ महाभारत से बाहर निकाल कर गीता को एक पृथक पुस्तक के रूप में प्रचारित किया। स्वामी विवेकानंद के अनुसार आदिषंकराचार्य का गौरव गीता के प्रचार से बढ़ा। गीता में निहित षक्ति को ब्रिटेन की ईस्ट इंड़िया कंपनी ने भी पहचाना था। ब्रिटिष अधिकारियों और अन्य अंग्रेजो को गीता के ज्ञान से परिचित कराने के ध्येय से अठारहवीं सदी में ईस्ट इंड़िया कंपनी ने भगवत् गीता का सर चार्ल्स विल्किन्स द्वारा किया गया अनुवाद प्रकाषित किया। जिसकी भूमिका भारत के प्रथम गवर्नर जनरल वारेन हेसिटंग्स ने लिखी थी। उस भूमिका में यह भविश्यवाणी की गई थी, ''जब भारत में अंग्रेजों का प्रभुत्व समाप्त हुए बहुत समय बीत चुका होगा और (उनके राज की) षक्ति एवं संपदा मात्र स्मृति में रह जायेगी, तब भी भारतीय दर्षन के लेखक जीवित रहेंगे।''

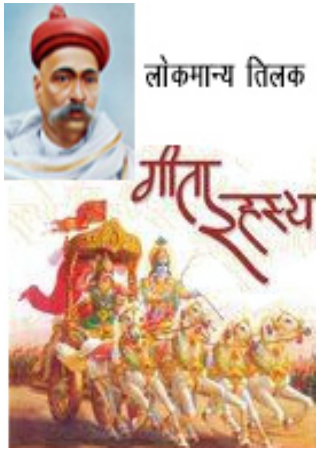

इस तथ्य से कौन इंकार कर सकता है कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में गीता की अत्यंत प्रेरक भूमिका रही है। स्वतंत्रता संग्रामियों ने गीता से प्रेरणा लेकर भारत की आजादी के लिए हंसते–हंसते फांसी के फंदे को चूम लिया। महर्शि अरविंद ने अध्यात्म और स्वतंत्रता संघर्श का समन्वय गीता के दर्षन द्वारा स्थापित किया था। स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है का उद्घोश करने वाले लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने स्वातंत्रता संघर्श के लिए गीता में श्रीकृश्ण द्वारा बताए गए संघर्श पथ को अपनाया था। मांडले जेल में उन्हें समस्त यातनाओं के बीच संघर्श की षक्ति और जिजीविशा गीता से प्राप्त हुई थी। उसी कारागार में उन्होंने मराठी की अमरकृति 'गीता रहस्य' की रचना की थी। यहां यह बता देना भी प्रासंगिक होगा कि छत्तीसगढ़ में बीसवीं षताब्दी के आरंभ में व्यापक स्वतंत्रता–चेतना तिलक के प्रभाव से जागृत हुई थी। पं. माधवराव सप्रे ने गीता रहस्य का हिंदी में अनुवाद किया था। उसके हिंदी में अब तक पचास से अधिक संस्करण प्रकाषित हो चुके हैं। पं. रविषंकर षुक्ल और वामनराव लाखे सहित उस दौर के सभी प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य तिलक के अनुयायी थे।

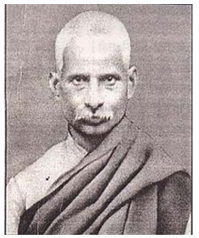

माधवराव सप्रे

क्रांतिकारी भाई परमानंद

प्रसिद्ध क्रांतिकारी भाई परमानंद ने भगवत गीता को अपने चिंतन के केन्द्र में रखते हुए अंडमान निकोबार की जेल में अद्‌भुत पुस्तक '***मेरा अंतिम आश्रय श्रीमद् भगवतगीता*** लिखी थी। भाई परमानंद को लाहौर कांस्प्रेसी केस में फांसी की सजा सुनाई गई थी। फांसी की सजा सुनाये जाने के बाद उन्हें पांच वर्शो तक अंडमान जेल में रखा गया। उस दौरान न उन्हें कोई संदर्भ पुस्तक मिलती थी और न जानकारी प्राप्त करने की अन्य कोई सुविधा। लिखने के लिए कागज का टुकड़ा तक उपलब्ध नहीं था। कल्पना की जा सकती है किस मनः स्थिति में और कितनी दिक्कतों के बीच उन्होंने वह पुस्तक लिखी होगी। उन्हें फांसी की सजा सुनाई जा चुकी थी, परंतु यह पता नहीं था कि फांसी दी कब जायेगी। पुस्तक के संक्षिप्त प्राक्कथन में उन्होंने लिखा था, ''अंडमान जेल में सन् 1915 से 1920 तक कुछ नोट याददाषत के तौर पर रखे गये। यह विचारक्रम बार–बार मेरे मन से गुजरता था। दो मास के अनषन के कारण मेरा ख्याल था कि कालापानी में ही मेरा षरीर त्याग होगा। इसलिए उसके बाद यदि ये नोट किसी योग्य मनुश्य के हाथ पड़ जायेंगे तो वह इन्हें छपवा कर प्रकट कर देगा। एक प्रकार से ये विचार मेरे अंत समय के हैं। तब मैं समझ बैठा था कि अब दुनिया से मेरा संबंध कभी नहीं होगा।''

भाई परमानंद की पुस्तक वस्तुतः भारतीय, पाष्चात्य और अरेबिया के दर्षनषास्त्रों का सूत्र वाक्यों में व्यापक ज्ञानकोष है। उन्होंने लिखा कि इस्लामी जगत में बुखारा का राजकुमार अलगरूनी ऐसा पहला व्यक्ति था, जिसका ध्यान भगवत् गीता की तरफ गया। उसे महमूद गजनवी ने कैद कर रखा था। हिरासत में रखने के लिए वह उसे

हिन्दुस्तान पर आक्रमणों के समय में भी अपने साथ लिये रहता। अलबरूनी ने युद्धकाल में बड़ी कठिनाइयों के बाद संस्कृत का अध्ययन किया।.....उसने आध्यात्मिक दृश्टि से इसे अत्यंत उच्च कोटि की पवित्र पुस्तक बताया।..... मुगलकाल में अकबर के आदेष से फैजी ने भगवद्‌गीता का अनुवाद फारसी भाशा में कराया। षहजादा दारा षिकोह ने इसका नाम 'सरे अकबर' रखा। उसकी भूमिका में उसने लिखा, 'सच्चाई का मार्ग बतलाने वाली, सत्य को पहचानने वाली, गहरे भेदों को खोलने वाली, एकता दिखाने वाली, आनंददायिनी यह कृति विलक्षण मनुश्यों में सर्वश्रेश्ठ ज्ञानी महर्शि वेदव्यास जी की है। व्यासजी का गुणानुवाद

कर पाना वाणी और लेखनी की षक्ति से बाहर है। संसार का प्रथम प्रसिद्ध दार्षनिक अफलातून भी वेदव्यास जी द्वारा बताये मार्ग का अनुसरण करने वाले तन्मीम हिंदी के तुच्छ षिश्यों से एक था।.....भगवद् गीता और उपनिशदों के फारसी अनुवाद जब यूरोप पहुंचे, तब यूरोप के दार्षनिक इनको पढ़ कर आष्चर्यचकित रह गये। प्रसिद्ध दर्षनषास्त्री ष्लेगल भगवदगीता को पढ़ कर वज्द में आ गया। अर्थात आनंदातिरेक में झूम उठा और इसकी प्रषंसा करने लगा। षापनहावर और मेजिनी के विचारों पर गीता का गहरा असर हुआ। एमर्सन का गुरू थोरो भगवद् गीता का भक्त बन गया। उसने एक स्थान पर कहा है, 'मैं प्रतिदिन भगवद् गीता के पवित्र जल से स्नान करता हूं। वर्तमान काल की (अन्य) कृतियों से यह कहीं श्रेयस्कर है। जिस काल में यह लिखी गई वह सचमुच ही निराला काल रहा होगा।' (पृश्ठ 18–19)

यह श्रीमद् भगवद्‌गीता के मनन या लेखन का पुण्य रहा हो अथवा अन्य कोई कारण भाई परमानंद की फांसी आजीवन कारावास में बदल गई। देष की जिस आजादी के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व त्याग दिया उसकी प्राप्ति के बाद वे केवल चार माह ही जीवित रह पाये। अनेक क्रांतिकारी तो मातृभूमि की बलिवेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग कर गये। गीता उन्हें अक्षय जिजीविशा प्रदान करती रही। ब्रिटिष जेलर और अन्य अधिकारी यह देख कर विस्मित होते थे कि गीता के ष्लोकों का जाप करते हुए वे क्रांतिवीर फांसी के फंदे की तरफ किसी धीरोद्धात नायक की भांति सीना ताने हुए सधे हुए कदमों से इस प्रकार जाते थे मानों वरमाला पहनने जा रहे हों।

महात्मा गांधी ने बड़ी स्पश्टता के साथ कहा था कि स्वतंत्रता आंदोलन सहित उनका संपूर्ण जीवन गीता के दर्षन से संचालित रहा। दिलचस्प तथ्य यह है कि गीता के प्रति गांधीजी की भक्ति अंग्रेजी कवि एडविन अर्नाल्ड की काव्यकृति 'सेलेषियल सांग' पढ़ने से जागृत हुई। गांधी ने लिखा था, ''सन् 1889 में गीता से मेरा प्रथम परिचय हुआ। उस समय मेरी उम्र 20 साल की थी। सर एडविन ऑर्नोल्ड का गीता का बहुत ही अच्छा काव्यानुवाद मैंने पढ़ा। उस पर मैं मुग्ध हो गया। तब से लेकर आज तक गीता के दूसरे अध्याय के अंतिम 19 ष्लोक मेरे हृदय में अंकित हैं। मेरे लिए तो सारा मानव धर्म उसी में आ गया है। उसमें संपूर्ण ज्ञान है।उसमें कहे हुए सिद्धांत अचल हैं। उसमें बुद्धि का भी संपूर्ण प्रयोग किया गया है। लेकिन यह संस्कारी बुद्धि है। उसमें अनुभवजन्य ज्ञान है। गीता का तात्पर्य कुल मिलाकर हिंसा नहीं, अहिंसा है। हिंसा से बचने का मार्ग गीता सिखाती है। लेकिन साथ–साथ वह यह भी कहती है कि कायर होकर भागने से हिंसा से नहीं बच सकोगे। जो भागने का विचार करता है वह मारेगा या मरेगा। मैं तो दुर्योधनादि को आसुरी और अर्जुनादि को दैवी वृत्ति मानता हूं। यह षरीर ही धर्म क्षेत्र है। इसमें द्वंद्व चलता ही रहता है।''

महात्मा गांधी ने गीता दर्षन के आधार पर ही भारतीयों को मृत्यु–भय से मुक्त करके निश्काम कर्मयोगी की भांति स्वतंत्रता आंदोलन में प्रवृत्त किया था। गांधी ने अहिंसा को एक षस्त्र के रूप में अपनाया था। उनकी अहिंसा में न भीरूता थी, न पलायन। वह वीर की अहिंसा थी। गांधी की इन पंक्तियों पर विचार करिए तो गीता का वीरतापूर्वक युद्ध में प्रवृत्त होने का दर्षन बड़ी प्रखरता के साथ उनसे झांकता प्रतीत होता है, ''यदि कायरता और हिंसा में से किसी एक को चुनना हो तो मैं हिंसा को ही पसंद करूंगा। वीरतापूर्ण आचरण साहस है, मैं उसी की साधना करता हूं। लेकिन जिसमें ऐसा साहस नहीं है, वह भी भागते हुए लज्जाजनक मृत्यु का वरण न करे, मैं तो कहूंगा, बल्कि वह मरने के साथ मारने की भी कोषिष करे, क्योंकि जो इस तरह भागता है वह अपने मन पर अन्याय करता है। वह इसलिए भागता है कि मारते–मारते मरने का साहस उसमें नहीं है। एक समूची जाति के निस्तेज होने की अपेक्षा मैं हिंसा को हजार बार अच्छा समझूंगा।''

गांधीजी को जीवन में, विषेशकर स्वाधीनता आंदोलन के दौरान अनेक प्रसंगों पर अनिर्णय की स्थिति का भी सामना करना पड़ा। अहिंसा में अटल विष्वास और मृत्यु भय से मुक्त मोहनदास करमचंद गांधी को कई बार ऐसी विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ा जब वे असमंजस में पड़ गये। उन्होंने दो टूक कहा जब भी ऐसी किसी विशम स्थिति ने मुझे जकड़ा मैं उससे पार पाने के लिए गीता के आश्रय में चला गया। आज भारत जब एक लम्बी छलांग लगाने का साहस जुटा रहा है तो उसके नेताओं, नीति–निर्माताओं और प्रषासकों के लिए गीता मानसिक – षारीरिक जिजीविशा के नये स्रोत खोलने में उपयोगी है। गीता को एक धर्मग्रंथ के रूप में नहीं बल्कि एक जीवन–दर्षन निर्देषिका के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। फिर भी उसे लेकर ऐसे किसी उपक्रम से बचना चाहिए जिसके किसी समुदाय को लगे कि गीता को उसके बच्चों पर जबरिया लादा जा रहा है। भगवद् गीता का मर्म भी यही है कि इसका अध्ययन–मनन वही करें जो इसे मनोवैज्ञानिक संबल और मार्गदर्षिका के रूप में लेना चाहते हैं। गीता का मूलमंत्र ही उन्माद, मनोद्वंद्व, अनिर्णय, भ्रम और कर्मण्यता में फंसे मनुश्य और समाज को उन सबसे मुक्ति का मार्ग सिखाना है।

आज भारत जिन विशम चुनौतियों और भीतरी तथा बाहरी खतरों में फंसा हुआ है उनसे उसे उबरने के लिए गीता के कर्मयोग में तपे हुए तेजस्वी राश्ट्र नायकों की आवष्यकता है। क्षुद्र, स्वार्थी और पदलोलुप निस्तेज राजनीति वोटों का पहाड़ा पढ़ती हुई यदि गीता के महत्व को अस्वीकार करती है तो उस पर केवल दया की जा सकती है, क्योंकि गीता द्वेश और घृणा नहीं सिखाती।

—0— दिनांक 15.02.2015

'जिसका हिंदुस्तान है, उसका है कश्मीर'

'चांदी जैसा ताज है, सोने जैसे केश, सागर चरण पखारता, ऐसा अपना देश'... 'मानचित्र पर लाख तुम खींचा करो लकीर, जिसका हिंदुस्तान है ,उसका है कश्मीर...',शायर अंसार कम्बरी

—असार कबरा, कानपुर

दोहे

बाल्मीकि के जाप से निकला यह परिणाम।
श्रद्धा होनी चाहिये, मरा कहो या राम।।

चाहे वो आषीश दें, चाहे मारे बाण।
रघुनन्दन के हाथ से होता है कल्याण।।

मन के कागज पर अगर लिखलो सीता–राम।
घर बैठे मिल जायेंगे तुमको चारों धाम।।

जिस गुलषन से आये हैं, सबके नबी–रसूल।
मेरे मत में राम हैं, उसी चमन के फूल।।

चाहे गीता बांच ले, चाहे पढ़ें कुरान।
ज़र्रे–ज़र्रे में खुदा, कण–कण में भगवान।।

मन से जो भी भेंट दे उसको करो कबूल।
काँटा मिले बबूल का या गूलर का फूल।।

साधु संत चले गये सब जंगल की ओर।
मंदिर मस्जिद में मिले रंगबिरंगे चोर।।

या वे इसकी सौत है, या ये उसकी सौत।
इस करवट है ज़िन्दगी, उस करवट है मौत।।

अंधे गद्दी पा गये बहरे हुये महान।
हम कहते हैं खेती की, वे सुनते खलियान।।

सावधान रहिये सदा अब उनसे श्रीमान।
जो कोई पहने मिले खादी का परिधान।।

—वागीष दिनकर

गजल

जहां पर आपका आभास होगा
वहां पतझार भी मधुमास होगा।।

यूं ही होता नहीं लहरों में कम्पन,
कोई प्यासा नदी के पास होगा।

मेरे घर मन्थरा है, कैकेई है,
मुझे भी एक दिन वनवास होगा।

अगर होंगी कही, वैभव की बातें
कटे हाथों का भी इतिहास होगा।

जो हम लड़ते रहे मज़हब को लेकर
कोई गालिब न तुलसीदास होगा।

—0—

''मेरे जीवन की सफलता की चाभी राम नाम में मेरा अटल विष्वास है।''

— महात्मा गाँधी

''मैं यह मानता हूं कि टकराव छद्म सेकुलरवाद और राश्ट्रवाद के बीच ही है। सवधर्म समभाव ही सच्चा सेक्युलरवाद है। हिन्दुस्तान के राश्ट्रवाद की जड़ों में सर्वधर्म समभाव की भावना निहित हैं।

दुर्भाग्य से कुछ फिरका परस्त ताकते झूठे सेक्युलरवाद का सहारा लेकर राश्ट्रीय ताकतों को दबाने की कोषिष कर रही है। ये फिरकापरस्त ताकतें भारत को दुबारा 1947 के पहले की मुस्लिमी लीगी मानसिकता की ओर ले जाना चाहती है।''

— सिकन्दर बख्त

बौद्धिक समाज सत्य घटना को भी बाद में काल्पिनिकता की संज्ञा दे देता है। राम और कृश्ण काल्पिनक पात्र नहीं इतिहास है। आज से पांच सौ वर्श बाद लोग महात्मा गाँधी को भी काल्पिनिक पात्र समझने लगेंगे।''

— भगवान कथा षिल्पी रमेंष ओझा

हमारी सांस्कृतिक विरासत और आज की व्यवस्था

सुशील चन्द्र वर्मा
पूर्व सांसद, भोपाल

कितनी गिरावट आ गई है, आती जा रही है, भारत की मौजूदा व्यवस्था में। चाहे प्रषासन हो, चाहे व्यापार हो, चाहे रोजमर्रा का जीवन हो, चाहे जन आचरण हो, चाहे नैतिक स्तर हो। एक प्रकार की होड़ लगी है, नीची से नीची सतह पर उतरने की। ऐसा प्रतित होता है कि जीवन के साधन जुटाने में सब लगे हैं, धन एकत्रित करने के लिये, सत्ता हथियाने में, प्रतिश्ठा पाने के लि ये चाहे अंदर से खोखली ही क्यों न हो। तनिक भी फिक्र नहीं है कि जो तरीके अपनाये जावें पाक साफ हो। जो मंजिल मन में ठान ली है, उस तक पहुंचनाही है, तौर तरीके गलत भी हों तो चिंता करने की जरूरत नहीं है। साधन ने दबोच कर रख दिया है, सच्ची साधना को। पर भग्यवष इस रोग से पीड़ित है, भारत की आपार जनसंख्या का केवल एक छोटा सा वर्ग, नेताओं का, नौकरषाही का, जामाखोंरो का, तस्करों का कालेधनियों का। भारत के असंख्य नर—नारी और बच्चे अभी अपने ईमान को कायम रखने की लगन रखते हैं उसकी हिफाजत करते हैं। भूखे हैं, नंगे हैं, सिर पर साया नहीं है, पीड़ित हैं,अनेक प्रकार से, पर वे भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को संजो कर रख रहे हैं। भारत की काया के कुछ छोटे छोटे अंगों में रोग घुल गया है, पर हृदय निर्मल है, विषाल है, उदार है। इस स्थिति का सबूत मिलता है जब कुंभ मेले व अन्य धार्मिक आयोजनों में लाखों की संख्या में भीड़ जुटती है। ईद के मौके पर हजारों की संख्या में लोंग खुदा की इबादत करने आते हैं, दुआ मांगते हैं,उर्दू षायर इकबाल लिखते हैं :—

एक ही सफ में खड़े हो गये महमूद ओ अयाज,
न कोई बंदा रहा न कोई बंदा नवाज।
बंदा ओ, साहबों मुहताज व गनी एक हुए,
तेरी दरगाह में पहुंचे तो सभी एक हुए।

गिरजा घरों और गुरूद्वारों में नर, नारी और बच्चों की श्रद्धा और लगन देखकर हृदय गद्‌गद् हो जाता है। भारत का इन्सान अभी भी, बीसवीं सदी के आखरी दषकों में, ईष्वर पर भरोसा रखता है, और अपने अपने धर्म और षास्त्रों में बताये गये रास्ते पर चलता है। अभी भी इस देष में ऋशि मुनि और संत धर्म की धुरी संभाले हुए हैं। गरीबी जरूर है, पर चरित्र की पवित्रता कायम है। भारत के आम इन्सान का अपना आत्म सम्मान है, फटे कपड़ों के अंदर भी उसके

गर्व की आभ झलकती है। अमीरों की तरह वह निदंनीय और घृणित हथकंडे नहीं अपनाता, किसी का षोशण नहीं करता, दौलत के पीछे नहीं दौड़ता। विरासत में भारत को अनमोल धन मिला है। वेद, पुराण, उपनिशद, स्मृति , रामायण, महाभारत गीता इत्यादि सत्य, त्याग, तप, निश्ठा, दया की मिसालों से भरे हैं। एक नहीं हजारों महान आत्माओं ने ऐसे ऐसे आदर्ष देषवासियों के मार्गदर्षन के लिए प्रस्तुत किए हैं, जिन्हें सुनकर ही मनुश्य चकित हो जाता है। हमारे ग्रंथें में स्वार्थ, अहंकार, राग, द्वेश, अनाचार, अत्याचार, व अनेक तामासी कर्मो की खुलकर निन्दा की गई है। उनकी खिल्ली उड़ाई है। भारत ऐसा देष है जहां न केवल ऋशि मुनि समय समय पर समाज को नई दिषा देते रहे हैं, बल्कि षास्त्रों के अनुसार परमपिता परमेष्वर ने स्वयं आदर्ष प्रस्तुत करने के लिए जन्म लिया है। विरासत के भंड़ार इतने भरे पड़े है जिसकी तुलना नहीं की जा सकती। आज के बिगड़ते हुए हालात की पृश्ठभूमि में यह अत्यंत आवष्यक है कि पूरा देष सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत की याद करें, जिससे कि मनुश्यत्व का जो क्षीण होना दिख रहा है उसमें रोक लग जावे। भाग्यवष इस दिषा में भारत वासियों का रूझान बढ़ता नजर आ रहा है। उम्मीद कायम होती है कि धर्म की जो ग्लानि होते दिख रही है, उसमें रूकावट जरूर आवेगी। गुमराह नजर आता मुल्क जल्द ही धर्म की राह पर कदम रख तेज रफ़्तार से आगे अढ़ेगा।

अक्सर यह कहा जाता है कि भारत में परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है। कुछ लोग इसे भारत का पिछड़ापन कहते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत आकार और उसकी करोंड़ों की जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए, परिवर्तन की स्थिति पैदा करना कठिन है। पर इसका एक अच्छा पहलू यह है, कि भारत में जो कुछ भी होता है, उसकी अच्छी तरह से परख की जाती है। छोटे छोटे देषें की तरह, जिनकी कोई सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत नहीं है, उनके समान भरत गिरगिट की तरह रंग नहीं बदलता है। भारत की यह स्थिरता बहुत लाभदायक साबित हुई है। यदि ऐसा नहीं होता, तब भारत की षकल आज अफ्रीका और अमरीका के देषों जैसी होती। इन महाद्वीपों में जब यूरोप के जत्थे के जत्थे पहुंचे, उन्होंने आदिम जातियों की सभ्यता नेतानाबूद कर दी। ऐसा तूफान छोड़ा जिसके सामने मूल निवासीयों के पैर उखड़ गये। उनकी मान्यता, उनके ठौर, उनके जीवन की प्रणाली, सब कुछ यूरोप के देषों के प्रभाव से परिवर्तित हो गई। अमेरिका महाद्वीपों में तो मूल निवासियों का प्रायः सफाया ही कर दिया गया है। अफ्रीका के देषों में ऐसा नहीं हो पाया पर इस महाद्वीप की जो मूल सभ्यता थी, उसकी झलक देखने तक को नहीं मिलती। यहां तक कि पहले कुछ भी उनका मजहब रहा होगा, उसका नामोनिषान तक नहीं है। प्रायः पूरे अफ्रीका महाद्वीप में इस्लाम और ईसाई धर्म पहुंच गया। ऐसा नहीं कि भारत की षकल सूरत को बदलने की कोषिष नहीं की गई। पर भारत

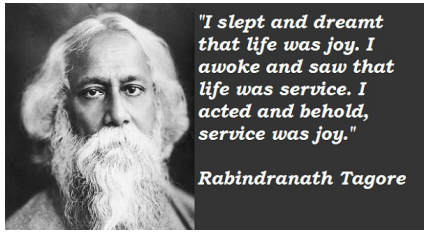

में विदेषियों के अनेक हमले हुए पर वे इस देष की रीढ़ झुका तक नहीं सके। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कितनी सुन्दरता से भारत की षक्ति का वर्णन किया है :–

केह नाहि जाने, कार आह्वाने, कत मानुशेर धारा,दुर्वार सोते ऐलो कोथा हते, समुद्र हलो हारा हैथाय आर्य, हेथा अनार्य, हेथाय द्राविड़ चीन,ष्क हूण–दल, पाठान– मोगल, एक देहे हलो लीन।

(किसी को भी ज्ञात नहीं है कि किसके आह्वान पर मनुश्यता की कितनी धारायें दुर्वार वेग से बहती हुई कहां कहां से आई और इस महासमुद्र में मिलकर खो गई। यहां आर्य हैं, यहां अनार्य हैं, यहां द्राविड़ और चीनी वंष के लोग भी हैं। षुक्र हूण, पठान और मोगल न जाने कितनी जातियों के लोग इस देष में आये और सबके सब एक ही षरीर में समा कर एक हो गये।)

रामायण और गीता में भारतीय आध्यात्मिक चिंतन का निचोड़ है। इन पर ज़रा नज़र ड़ाले।

गीता के तीसरे अध्याय में कृश्ण ने अर्जुन से कहा–

यदि ह्यळह्ं न वर्तेय जातु कर्मण्यतन्द्रितः।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुश्याः पार्थ सर्वषः।।

(यदि कदाचित मैं सावधान होकर कर्मो में न बरतूं तो बड़ी हानि हो जाय क्योंकि मनुश्य सभी प्रकार से मेरा ही मार्ग का अनुसरण करता है।)

उसी अध्याय में फिर कृश्णा कहते हैं :–

यद्यदाचरित श्रेश्ठ स्तत्देवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरूते लोकस्तदनुवर्तते।।

(श्रेश्ठ पुरूश जब जब भी आचरण करता है अन्य मनुश्य समुदाय भी वैसे ही वैसे आचरण करते हैं। वह जो प्रमाण कर देते हैं, समस्त मनुश्य समुदाय उसी के अनुसार बरतने लगते हैं।)

कितनी खूबी है इन ष्लोको में। यह दोनों ष्लोक कितने उपदेष रखते हैं, उन व्यक्तियों के लिए जो भाग्यवष

ऊंचे ऊंचे स्थानों पर आरूढ़ हो गये हैं। कितनी आवष्यकता है इस बात की कि जिन व्यक्तियों के हाथ षासन की बागड़ोर है, वे अपना आचरण ठीक रखें।

भगवान कहते हैं कि उन्हें भी स्वयं सावधान होकर कर्म करने की आवष्यकता है। भगवान तो सर्वषक्तिमान हैं, सर्व ज्ञाता हैं, पूरी सृश्टि को जन्म देता है। फिर भी वह ''सावधान'' रहने की चेतावनी देते हैं। जब भगवान स्वयं अपने लिये ऐसा बन्धन व्यक्त करते हैं, ऊंचे विचार करे। अभाग्यवष भारत में ऐसी धारणा बनी है कि जो सत्ता में है, ऊंचे पदों पर आरूढ़ हैं, वे जैसे चाहें वैसे आचरण कर सकते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों को अनेक प्रकार के उपदेष देते हैं। पर अच्छे आचरण के मुतल्लिक खुद अपने जीवन में अपने ही द्वारा कहे जाने वाले उपदेष का पान नहीं करते। दो प्रकार के मापदंड़ स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। एक उस श्रेणी के लिए जिसके हाथ प्रभुता हाथ लग गई है। दूसरा, सामान्य नर–नारी के लिए। पर मनुश्य समाज में आचरण के कभी भी दो मापदंड़ न तो स्वीकार किए जायेंगे और न उनका चलन होगा।

मौजूदा भारतीय जीवन के भयंकर प्रकोप है, चापलूसी, चाटूकारी और व्यक्ति पूजा। एक बड़ी घातक विकृति यह है कि बिना डर और लालच के विचार व्यक्त करना गुनाह समझा जाता है। आषा थी कि नई पीढ़ी के द्वारा बागड़ोर संभालने पर इस बीमारी से देष निजात पायेगा। पर उल्टा ही हो गया है। अब तो न केवल ''हां में हां'' मिलाना पड़ता है, बल्कि सियारों के समूह जैसे यदि एक सियार ने ''हुआं हुआं'' चिल्लाना षुरू किया तो वह राग सब अलापने लगते हैं। होड़ लगती है कि किस सियार की आवाज सबसे बुलन्द थी। मातहत व्यक्ति चाहे वे मंत्री हो या षासकीय अधिकारी,ऐसी सलाह देते हैं या विचार व्यक्त करते हैं जो ऊंचे पद पर बैठे हुए व्यक्ति पंसद करें। ऊंचे से ऊंचे पद पर आरूढ़ नेता केवल वही सुननता चाहते हैं जो उन्हें पसंद हो गया जिसके मुतल्लिक उन्होंने पनी राय कायम कर ली हो। पूरा प्रषासकीय तंत्र इस रोग से ग्रसित हैं। विदेष राज्य के समय तक प्रषासन की यह परम्परा रही थी कि अधिकारी वर्ग खुलकर अपनी राय व्यक्त करते थे। इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं की जाती थी कि जिसे राय दी जा रही है, उसे वह राय पसंद आयेगी या नहीं। केवल गुण दोश के आधार पर विचार व्यक्त किए जाते थे। ऐसा करना मानसिक ईमानदारी की निषानी थी।

इधर 15–20 वर्शो में हालात बिलकुल बदल गए हैं। केवल प्रषासन में ही नहीं बल्कि उद्योग, व्यापार और यहां तक कि धार्मिक संस्थाओं में भी यह प्रवृत्ति देखी जा रही है कि सुर में सुर मिलाओ। मन में कुछ और विचार रहते हैं, पर बोलने और लिखने में बिलकुल उसके विपरित राय व्यक्त की जाती है। इसका बुरा असर कुछ समय बाद सामने आने लगता है। गलत राय आधारित जो भी

निर्णय लिए जाएंगे अन्ततः वे नुकसान दायक होंगे। ऊंचे पदों पर आरूढ़ व्यक्ति गुमराह हो जाते हैं। गलत निर्णयों के जाल में वे फंसते जाते हैं और एक दिन उनका पतन हो जाता है।

चाटुकारी के खतरे से बचने के लिए राचरितमानस तक मैं आगाह किया गया है। तुलसीदास ने लिखा है :–

सचिव वैद गुर तीनि जो,बोलहिं भय आस।
राज धर्म तन नीति कर होई बेग हीं नास।।

(मंत्री, वेद और गुरू–यह तीन या तो प्रसन्नता के भय या लाभ की आषा से, हित की बात न कहकर प्रिय बोलते हैं, तो राज्य, षरीर और धर्म इन तीनों का षीघ्र नाष हो जाता है।) कितने स्पश्ट षब्दों में ठकुर मुहाती की बुराइयों के सामने रखा गया है। विरासत में मिले इस उपदेष की अवहेलना की जा रही है पर कीमत भी चुकानी पड़ रही है। रामायण से सम्बन्धित एक प्रसंग

संतो से सुना जाता है। 14 वर्श वन में रहने के उपरान्त भगवान राम अयोध्या वापस आए। उनका राजतिलक हुआ। कहा जाता है कि रात्रि के समय रघुनाथ जी कैकेयी के कक्ष में गए। वहां तीनों माताएं कौषल्या, सुमित्रा, कैकेयी और छोटे भाई अपनी पत्नि समेत उपस्थित थे। सीता तो रघुनाथ के साथ ही आई थी। भगवान राम ने अपने छोटे भाईयों की पत्नियों से कहा कि अयोध्या वापस आने पर वे बड़े प्रसन्न हैं, उनका राजतिलक भी हो गया है जो उन्हें भाये, उसकी वे मांग करें। भगवान राम ने उर्मिला से पुछा कि उनकी क्या इच्छा है। उर्मिला ने कहा कि लक्ष्मण को राम और सीता की सेवा करने का अवसर मिला, यही उनके लिए सब कुछ है, और उन्हें कुछ नहीं चाहिए। तब राम ने भरत की पत्नी मांड़वी से पुछा कि उन्हें क्या चाहिए। मांड़वी ने कहा राम ने भरत के प्रति कृपा और विष्वास प्रदर्षित किया है वही प्रर्याप्त है उन्हें और कुछ नहीं चाहिए। तब बारी आई षत्रुघ्न की पत्नी श्रुतिकीर्ति की। राम ने उनकी ओर देखा और अनुरोध करते हुए कहा कि कम से कम वे तो कुछ मांगे। श्रुति ने कहा :– ''मैं जो मांगूगी वह आप देंगे''? भगवान ने पूरी तरह आष्वस्त किया। तब श्रुति ने कहा : ''मेरी विनती है कि पेड़ों की छाल (वल्कल) के जो कपड़े आपने पहने थे, वे मुझे दे दिए जाएं''। यह मांग सुनकर रामजी को बहुत आष्चर्य हुआ। उन्होंने श्रुति से पुछाः ''यह किस प्रकार की मांग है तुम बल्कल के कपड़ों का क्या करोगी? मैं समझता था कि किसी कीमती चीज की मांग करोगी।

श्रुति ने उत्तर दिया : ''महाराज, आपके द्वारा पहने गए बल्कल के वस्त्रों को मैं महल में प्रदर्षित करूंगी जिससे कि सूर्यवंष में होंने वाले राजा स्वयं देखें कि उनके कुल में एक ऐसा राजा पैदा हुआ था, जिसने 14 वर्श वल्कल के कपड़े पहन कर वन में बिताए''।

सादगी के जीवन के महत्व को सामने लाने की इससे और अच्छी मिसाल क्या हो सकती है। कितना बड़ा उपदेष रामायण के इस प्रसंग ने भारत के सामने रखा है, सादगी का। महिमा कुछ और ही होती है सरल एवं स्वच्छ जीवन की। आज के हालात ये है कि नेता अफसर और धनाइय वर्ग ऐसे ऐष्वर्य में जीवन बिता रहे हैं, जिसे देखकर समृद्ध देष के लोग भी आष्चर्य करते हैं। कहां तो इस देष में 50 प्रतिषत जनता गरीबी रेखा के नीचे जीवन बिताती है। कहां एक छोटा सा वर्ग देष की सम्पत्ति हथिया कर ऐषो–आराम की जिन्दगी बसर कर रहा है।

रामायण के प्रसंग की बात तो अतीत की है। हमारे सामने ही इस युग में मोहनदास करमचंद गाँधी जैसे महान व्यक्ति ने अपना जीवन झोपड़ी और खादी की धोती पहन कर बिताया।यदि कोई सेवाग्राम जाकर देखें, तब उसे अहसास होगा कि सादगी से गांधी जी रहते थे। जिस कुटिया में उन्होंने अपना जीवन बिताया और अंग्रेजी सल्तनत की नींव हिला दी, उसकी आज की भी कीमत 5–6 हजार से अधिक नहीं होगी। जब गांधी जी ने कुटिया बनवाई होगी, तब उस समय तो कुछ सैकड़ो रूपये में ही उसका निर्माण पूरा हो गया होगा।देष के सामने इतना ताजा और ज्वलन्त उदाहरण रहते हुए भी हमने सादगी के जीवन को अपनाया नहीं है। इस भूल के लिये देष को भारी कीमत चुकाना पड़ रही है, भ्रश्ट्राचार, धन संग्रह, और षोशण के रूप में। अमीरों के गुणनान गाए जा रहे हैं, चाहे वे तस्करी क्यों न करते हों। उनके पीछे भीड़ जमा होती है, जय जयकार करने के लिए। कितनी सार्थकता इस दोहे में :

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
स पण्डितः सः श्रुतवान् गुणज्ञः।
सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते।।

(जिसके पास धन है, वही व्यक्ति उच्च कुल का माना जाता है। वही विद्वान, वेदों का अधिकारी और गुणों का पारखी माना जाता है। वही श्रेश्ठ वक्ता है वही दर्षन योग्य है। इस प्रकार सब गुण मनुश्य में नहीं, धन में होते हैं।)

निडर होकर राय वही दे सकता है, जिसकी स्वयं की नीयत साफ हो और जिसमें नैतिक ताकत हो। यदि राय व्यक्त कर रहा व्यक्ति स्वयं भ्रश्ट्राचार के चंगुल में फंस चुका है या किसी स्वार्थ या भय से वह प्रेरित है, तब वही कभी खुलकर अपनी बात नहीं कह सकेगा। निजी क्षेत्र में व्यक्ति के मन में दूसरे की नाराजगी का भय कुछ वाजिब लगे, पर षासकीय क्षेत्र में तो भारतीय संविधान के द्वारा इतना सुदृढ़ संरक्षण षासकीय कर्मचारीयों को दिया गया है कि उनके

मन में किसी प्रकार के संकोच का तनिक भी औचित्य नहीं है। दरअसल संविधान के संरक्षण का मुख्य उद्देष्य ही है कि षासन का कार्य खुले तौर से हो, आड़ में नहीं, अधेरे में नहीं। यदि खुल कर राय देने से मंत्री वर्ग प्रसन्न हो जावें, तो वह कर भी क्या सकता है। स्थानान्तर कर देगा या इधर उधर के पदों पर आरूढ़ कर देगा, जो महत्वपूर्ण या प्रभावषील हीं माने जाते हैं। इस स्थिति के लिये षासकीय कर्मचारियों को तैयार रहना चाहिए। पर ऐसा हो नहीं रहा है। मंत्री वर्ग को प्रसन्न रखने की भरकस कोषिष की जाती है। जाहिर है कि इस हालात के लिए जिम्मेदार हैं, भ्रश्ट और स्वार्थी कर्मचारी। अफसोस की बात तोयह भी है कि चाटुकारी, चापलूसी, स्तुतिगायन इत्यादि बुराईयों से सीनियर अधिकारी वर्ग परे नहीं हैं। जिन कुरितियों का दोश वे मंत्री वर्ग के उपर मढ़ते हैं, उस प्रकार का दबाव वे स्वयं अपने मातहत कर्मचारियों के उपर ड़ालते हैं। जाहिर है कि बात फिर आ जाती है अपने स्वयं के आचरण की जब तक इस दिषा में खामियां रहेगी, तब तक कभी भी ऊंचे पदों पर आरूढ़ व्यक्तियों के उपदेष और भाशणों का कोई असर नहीं होगा।

सांसारिक क्षेत्रों में घुसी हुई खामियों को तो एक बार समझा भी जा सकता है, पर आष्चर्य होता है यह देखकर कि धार्मिक क्षेत्र में भी ठकुर सुहाती का रोग घर कर गया है। बड़े बड़े मठाधीष ऐषो आराम की जिन्दगी बसर करते है। वे भी चाहते है कि उनकी स्तुति का गान सदा चलता रहे। जो कुछ भी वे कहें, उसकी वाह वाही होना चाहिए।

आजकल के आश्रमों में होड़ लगी है कि कितने विदेषी षिश्य वहां आते जाते रहते हैं। मठाधीष अपने प्रवचनों में यह कहना भी नहीं भूलते की उन्होंने विदेष की कितनी यात्राएं की और विदेष में कहां कहो उनके मठ की षाखायें खोल दी गई हैं। बड़ी वेदना होती है, यह सब देखकर एक युग था जब यही भारत एक से एक विद्वान और चरित्रवान ऋशि मुनियों से भरपूर था। उनके पवित्र आश्रमों से ही वेद,पुराण,उपनिशद,रामायण,गीता, के संदेष प्रसारित हुए। एक से एक दिग्गज पैदा हुए। बाल्मीकि, अत्रि, पिपल्लाद, विष्वमित्र ,भारद्वाज ,याज्ञवलक्य,अगस्त्य इत्यादि। इन महान आत्माओं की लगन और और परिश्रम के फलस्वरूप ही भारतीय संकृति की ऐसी गहरी नींव पड़ी कि आज तक इस प्राचीन देष की रचना को कोई हिला नहीं पाया है। विष्वास और आषा है कि इन विभूतियों के द्वारा दी गई विरासत ही देष को मौजूदा नैतिक संकट से उबार लेगी।

—0—

होंगे रचना मग्र वही विद्रोही बागी

–रामेश्वर शुक्ल ''अंचल'',जबलपुर

प्रलय–रात अधियारी।
घिरे बरसने को अनियंत्रित बादल परिवर्तन के
धनीरात अंधियारी।
बरस रहे फिर–फिर घिरने को नभ ढैकने को।
कांप रही सदियों की कारा
किरी युगों की पाशाणी प्राचीरें
तोड़ चुके बंदी जंजीरें।
नभ में कुंदन करते नील सितारे
भू के सब बिखरे स्वर मिल–मिल कर बढ़ चलते
मग में जलती बाधाओं के अगणित स्पुलिंग उभरते
बढ़ते चलते नव जीवन के वेग संभलते
अंधकार में मग न सूझता
बढ़ा जा रहा धरती का स्वामी विरोध से भिड़ा जूझता
संघशों की बेला है यह प्रलय रात अंधियारी।
चले जा रहे अपना ध्येय संभाले
नये चरण की नयी प्रगति
गहन सिन्धु बरसाती तम का मुक्ति–मार्ग को घेरे
रह–रह कर जल उठते संकल्पों सी चमकी बिजली,
क्षण भर को पथ अलोकित कर जाती
कांप रहे संतरी धराषायी कारा के
देख–देख मिट्टी में चेतन की विद्रोही ज्वाला
दमकेगी अब उशा विभा की
फूट–फूट लहरायेंगे किरणों को निर्झर
स्वतंत्रता की अरूणाई से लोकित दिनकर
नश्ट करेगा दिग्भ्रम–मलिनता निषि की
पंथदाम गति पा जायेगी
जो निरूपराय खड़े हैं जीवन में धंसने को
गगन–षिखर पर चढ़ने को,
उन सबके व्यक्तित्व उठेंगे,और उठेंगे
संहारों के बीच रहे जो लिंप्त निरंतर
सत्यानाषों में मग्न वही विद्रोही बागी
उगते सूरज की उज्जवल पथ–ज्योति
भ्रमाये जीवन में सृजन–चेतना की अवतारी
कुछ घड़ियों की प्रलय–रात अंधियारी।
विजयोन्मुख नूतन भविश्य के चरण चूमने
नव विधान के मंत्र पूजने
चली जा रही प्रलय–रात अंधियारी

''जब कोई विदेषी सत्ता किसी देष पर अपना अधिकार चिरस्थायी करना चाहती है, तो वह उस देष की भाशा संस्कृति, तथा धर्म को नश्ट कर उनके स्थान पर अपनी भाशा संस्कृति तथा धर्म का प्रचार करती है।''

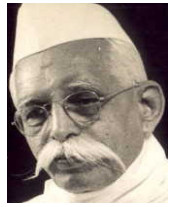

–पं. रविषंकर षुक्ल.

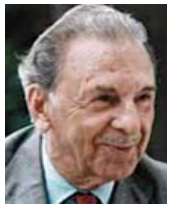

''मुझे भारतीय लोगों से बहुत आषा है। उनमें आधारभूत अच्छाईयां है। चाहे वे आदिवासी हों या हरिजन। सदियों के कई विरोधाभासों को पार कर चुके हैं। यही गुण है जिसकी बदौलत भारत आज जीवित है। उनमें अनेकों विरोधाभास है परन्तु अपने पूर्वजो से सत्बुद्धि प्राप्त हुई है जिसकी बदौलत वे एक हैं।''

– भारतरत्न –जे.आर.डी.टाटा.

''मैं तो यह देखता हूं कि आजकल ऐसा माहौल बन गया है कि जो भी आदमी हिन्दुस्तान कि संस्कृति या हिन्दू धर्म के बारे में अच्छा बोलता है, उसे आर.एस.एस. वाला घोशित कर दिया जाता है।.....हिन्दू धर्म के संबंध में एक यही उदाहरण है – जैसे कुंभ मेंला। इसके बारे में जब लोंग अंग्रेजी अखबारों में लिखते है कि यह एक अंधविष्वास है लेकिन वही लोग ईसाइयत के बारे में ऐसा कभी नहीं लिखेंगे।'' यह कथन मार्क टुली का है। नो फलस्टाप इन इंड़िया पुस्तक में उन्होंने बताया है कि हिन्दुस्तान की संस्कृति दुनिया में बहुत पुरानी है और यह देया अपने आधार पर खड़ा होकर ही आगे बढ़ सकता है, हमारी नकल करके नहीं।

''आज सर्वाधिक आवष्यकता इस बात की हक कि हम भारतीय संस्कृति की सीमेंट से सहोदर समाज का निर्माण करें। भारत की आत्मा एकता में है। 5000 हजार वर्श से भी अधिक समय से भारतीय सथ्यता गौरवषाली है। बाहरी प्रभाव में जो अच्छाईयां हैं उन्हें ग्रहण और आत्मसात किया है। यही एक बात है जिसकी वजह से भारतीय संस्कृति एक अकथनीय अवर्णनीय और सुन्दर है।

– नाना पालखीवाला.

मुझे विष्वास है कि लोग एकता यात्रा से प्रेरणा लेंगे और उनमें राश्ट्रीयता की भावना और ममजबूत होगी। पुस्तक प्रकाषन के लिए मेरी हार्दिक षुभकामनाएं।

पूर्व मंत्री – उच्च एवं षालेय षिक्षा भोपाल
– विक्रम वर्मा

जस्टिस गुमानमल लौढ़ा,पूव ंसांसद
(पाली, राजस्थान)

'लाल चौक पर तिरंगा कैसे फहरा'

26 जनवरी, 1992 का प्रातः काल भारत के मुकुट काष्मीर के लिए अमर व ऐतिहासिक बन गया जब ड़ा. मुरली मनोहर जोषी, अध्यक्ष भाजपा ने लाल चौंक श्रीनगर में ठीक 08:35 पर राश्ट्रीय ध्वज तिरंगा को भारत माता की जयकार के नारों के बीच फहराया। अपने संक्षिप्त भाशण में ड़ा. जोषी ने कहा कि कष्मीर की जनता के हम मित्र हैं व कष्मीर भरत का अविभाजित अंग है, यदि पाक काष्मीर को अपना भाग समझता है तो उसे भूलना चाहिए कि पाकिस्तान स्वयं भारत का ही भाग है। अतः हम किसी भी कीमत पर कष्मीर को बचाएं व इसी राश्ट्रीय एकता के उद्देषय से 11 दिसम्बर, 1991 को कन्याकुमारी से प्रारंभ की गई एकता यात्रा का संकल्प आज काष्मीर में ध्वजारोहण के साथ पूरा हो रहा है। देषी व विदेषी पत्रकारों के कैमरों के फ्लेषों की चकाचौंध से ड़ा. जोषी का मुख सफलता से चमक रहा था व सौ के लगभग भाजपा नेता हजार से अधिक सुरक्षा के संगीनों के साये में भारत माता की जय की नारे लागा रहे थे।

भाशण समाप्त होते ही ध्वजारोहण के तुरन्त पष्चात सीमा सुरक्षा बल की बसों में बैठकर हम हवाई उड्डे के लिए रवाना हो गये, लगभग 10/12 कि. मी. के सफर में लगातार चारों तरफ सड़क पर, चौराहों के चारों ओर और मकानों की छतों पर, दुकानों के बरामदों में मुस्कराते हुए व विजय जैसी सफलता से झूमते हुए सुरक्षा सैनिक अभिवादन स्वीकार करते हुए मिले। कर्फ्यू से ग्रसित लाल चौक ही नहीं पूरे श्रीनगर में एक भी स्थानीय नागरिक सड़क पर ही नहीं बल्कि घरों के अन्दर भी देखने को नहीं मिला। हमारे लगभग 72 भाजपा के नेताओं के काफिले में सीमा सुरक्षा की बसों के अन्दर सैनिक बंन्दूकों से घिरे हुए व दोनों ओर युद्ध वाहक वाहनों की मषीनगनों के वाहन की ओट में व सड़क पर दोनों तरफ हजारों सैनिकों की बन्दूकों की छतरी में ले जाया गया। वायुयान से उड़ने पर सैनिक अधिकारियों ने बताया कि बसों पर गोली बारी होना साधारण है। उस समय सिर नीचे कर के बैठ जायें, बांकी आतंकवादियों से सुरक्षा जवान निपट लेंगे।

यह घोशणा होते ही हमें लगा कि अब हम युद्ध के मैदान में जा रहे हैं जहां दोनों ओर से गोलीबारी होगी, व वह भाग्यवान होगा जो राश्ट्रहित के लिए वीरगति प्राप्त होगा। बसों के काफिलों में हमारे साथ महिलाओं की संख्या भी कम नहीं थी, जिसमें अयोध्या में जेल तोड़कर, केष कटवाकर भेश बदलकर पहुंचने वाली सुश्री उमा भारती के साथ अपनी मां को जम्मू में रहने को बाध्य

कर स्वयं बलिदान देने की होड़ में वसुन्धरा राजेसिन्धिया, महिला नेता मृदला सिन्हा, बम्बई की जसवन्ती बेन मेहता, केरल की मिस मैथ्यूज, अमरीका से विषेशतौर से लाल चौक में समारोह में षामिल होने आई हुई अंजलीबेन जी मेरे साथ अयोध्या सत्याग्रह साहरनपुर जेल में थी, आदि थे। लगभग समस्त प्रदेषों के अध्यक्ष भी साथ थे।

जम्मू में लगभग 1 लाख भाजपा कार्यकर्ताओं को श्रीनगर जाने के संकल्प से आये होने के कारण रोकने में बहुत कठिनाई हुई व कई तो रोते बिलखते हुए बड़े नेताओं के पैर पकड़ यह आर्तनाद करते पाये कि हमें लाल चौक में षहीद होने का अवसर क्यों नहीं दिया जा रहा है।

श्रीनगर में पहुंचने के पष्चात ही हमें काष्मीर की स्थिति का सच्चा व सही आकलन हो सका क्योंकि हमारे ठहरने के लिये न कोई होटल था व न श्रीनगर षहर में कोई स्थान था। सीमा सुरक्षा बल के अधिकारियों ने केवल झंड़े की सुरक्षा ही अपने हाथ में न ली बल्कि नेताओं को अपने केन्टोनमेन्ट के हॉल में रखा, जहां हमारी सुरक्षा के लिए बाहर गोलीबारी की आवाजें रातभर सुनाई देती रही। एक अधिकारी तो 25 जनवरी की रात के ही 26 जनवरी को झंड़ा लगाने की नींव में षहीद हो गया व कईयों ने घायल होकर अपने रक्त में तिरंगे झंड़े का तर्पण किया। रात्रिभर गोलियों की आवाज से सारा इलाका गूंजता रहा व आतंकवादियों ने भाजपा के इस संकल्प को युद्ध की चुनौती की दृश्टि से लिया पर बधाई है हमारे सैनिको को कि उन्होंने उसका मुंह तोड़ उत्तर संगीनों की गोलियों से दिया व उन्हें लाल चौक के पास भी नहीं आने दिया।

रात्रि को सीमा सुरक्षा बल के अतिथ्य में हमें सैनिकों व अधिकारियों का प्यार व दुलार उत्साहित करता रहा, गर्म चाय व समोसे के नाष्ते से हमारा स्वागत किया व रात्रि को पूरी व सब्जी के साथ भारतीय संस्कृति के अनुकूल हलवा भी खिलाया। तंबुओं में ले जाकर राजस्थान के जवानों व अधिकारियों ने मुझे व वसुन्धरा जी को घेर लिया और कई ऐसे अधिकारी थे जिन्होंने मुझे भारत पाक युद्ध के बाद जोधपुर के गिरदीकोट के भाशणों की याद दिलाई जिसमें ''हम व बम'' का समां बंधा रहता था। पं. बंगला के अध्यक्ष श्री सिकन्दर को बंगाली जवान अपने बैरकों मे ले गये व गोलीबारी धमाकों के बीच वात्सल्य सम्मान का यह वातावरण उमड़ता घुमड़ता रहा।

बैरकों के अतिथिगृह में रात्रि को हमारा कवि सम्मेलन भी अद्वितीय रहा जिसमें कलकत्ता के प्रो. विश्णुदत्त षास्त्री द्वारा ''अटल विष्वास बनकर जी'' उमा भारती व उज्जैन के श्री सत्यनारायण जाटिया, दिल्ली सांसद बैकुण्ठ लाला षर्मा ''प्रेम'' ने गोलीबारी के बीच भी लाल चौक में बलिदान होने की प्रेरणा दी।

श्री गणपतचन्द्र भंड़ारी की कविता ''हम तो जय पाने के आदि फिर भी हार गले में ड़ालें क्यों, आवो अमृत इतिहास नये रच डालें फिर लाल चौंक में झण्ड़ा फहराना आज हमें, मत पहनाओं पुश्पहार माता माता कांटों का ताज हमें'' को मैंने सुनाया तो झण्ड़ा रोहण का माहौल खिल गया। उसी समय खबर आई कि हमारी रक्षा में एक थानेदार मारा गया तो मुकुल की सेनानी के कुछ भाग मुझे गाकर सुनाना पड़ा। कडकडाती सर्दी में श्रीनगर की षमषान जैसे स्तबधता को आतकंवादियों व सैनिकों की गोलीबारी बार–बार हमें युद्ध स्थल की याद दिलाती रही।

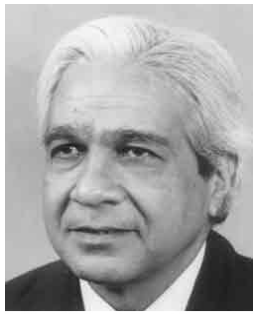
श्री सिकन्दर बख्त

रात्रि को श्री किषनलाल षर्मा महामंत्री भाजपा ने सूचना दी कि प्रातः काल षौच निवृति जंगल में ही होगा व किसी को भी स्नान करने की सुविधा नहीं होगी। जंगली मैदान में लड़ते हुए सैनिक की तरह अपना सामान लेकर कड़कड़ाती ठंड में 07:30 बजे निकल जाना होगा। सैनिक अधिकारियों ने अपनी मेस के कमरों में महिलाओं के लिए विषेश प्रबंध किया व एक बुखारी से गर्म कमरे के मेस में सिकन्दर बख्त व मेरी वृद्धावस्था को देखते हुए पलंग पर सोने की सुविधा प्रदान की। हमारे अन्य 70 कार्यकर्ताओं को फर्ष पर बैरेक में ठिठूरकर ही सोने को मिला जिसके कारण हमें मानसिक संकोच व तनाव रहा। रात्रि के अन्तिम पहर में लाल चौक में षहीद होने पर राश्ट्रीय सामाजिक व पारिवारिक भविश्य की कल्पनाएं की। तुलना में षहादत का सम्मान प्राप्त होने के गौरव का विष्लेशण होता रहा क्योंकि अधिकतम संभावना यही थी कि झण्ड़ारोहण के समय राकेट व मिसाइल्स से हमला होगा जिसमें सब नहीं तो कुछ अवष्य षहिद होंगे। श्री सिकन्दर बख्त वयोवृद्ध जाने के लिये तैयार हो गये। बस इस बीच यह समाचार मिले कि रात में श्री जोषी एयर फोर्स के विमान से आ पहुंचे हैं, जिन्हें सेना ने गोपनीय स्थान पर रखा है। वहां पर बर्फ के पहाड़ गिर जाने से एकता यात्रा के अन्य केसरिया वाहिनी के देषहित में मरने के लिये सिर पर कफन बांधकर आये दिवानों को निराष होकर वापस जाना पड़ा जिसमें कई तो फूट फूट कर रोये।

डॉ. श्री मुरली मनोहर जोशी

आष्चर्यजनक यह रहा कि पाकिस्तान रेड़ियों ने रात यह घोशणा की एकता यात्रा असफल हो गई है व ऊधमपुर पर रोककर बिखेर दी गई है। जोषी को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। पाकिस्तान सरकार ने इसे पाक सैनिकों की

सफलता बताया व कहा कि 26 जनवरी को एकता यात्रा की नाकामयाबी पर आजाद काष्मीर में जष्न व खुषियां मनाई जायेगी, इधर भारत के आकाषवाणी व दूरदर्षन ने यह संदेष दिया कि श्री जोषी को वायुयान से श्रीनगर पहुंचा दिया है, परन्तु खतरा अभी टला नहीं है। रात्रि भर 26 जनवरी 1992 के प्रातः काल लाल चौंक में रक्तपात के अंदेषों को लेकर भारत भर में चिन्ता की घड़ियां गुजरी। श्रीनगर में भी हजारों जवान रातभर बचाव व सयंम करते करते रहे व दूसरी ओर आतंकवादी लाल चौंक में 11 बजे गोलीबारी, बमबारी व राकेट व मिसाइल्स छोड़ने की तैयारी करते रहे व धमकी देते रहे। सषक्त हजारों सैनिकों ने संगीनों के साये में 26 प्रातः विदेषी व देषी पत्रकारों का समूह लाल चौंक में उसी तरह जुटे जैसे 30 अक्टूबर 1990 को अयोध्या में डटे हुए थे। मीड़िया व इन पत्रकारों की जोखिम में जान डालने की प्रणाली सहासिक है, क्योंकि राकेट, मिसाइल्स के प्रयोग पर उसकी चपेट में भाजपा नेता आयेंगे या पत्रकार या सैनिक इसमें कोई भेद नहीं हो सकता। हमारे ही यान में पॉचजन्य के यषस्वी लेखक श्री भानुप्रताप षुक्ल व इतवारी पत्रिका के तरूण व लोकप्रिय पत्रकार श्री गोपाल जोषी थे जो जम्मू से चले थे व बैरकों में साथ रहे, जिसमें अन्य पत्रकार भी षामिल थे। 26 जनवरी की प्रातः सैनिक क्षेत्र से लाल चौंक की यात्रा, 25 जनवरी की रात्रि को काफिले की यात्रा से सैकड़ों गुनी अधिक सुरक्षा कवच में थी क्योंकि कदम कदम पर सैनिक संगीन ताने खड़े थे व कई जगह तो झुंड के झुंड थे मषीनगन एंटी मिसाइल्स व राकेटो को ध्वस्त करने के लिए यंत्र भी लगे थे जब यद्यपि कूटनीति की एक चाल से आतंकवादियों की रणनीति धवस्त हो गई, जब झंड़ा प्रातः 08:45 पर ही फहरा दिया गया उस समय आतंकवादियों को राकेट छोंड़ने व फायरिंग करने की सुध आई तब तक तो तिरंगा लाल चौंक पर गर्व से फहरा रहा था।

एकता यात्रा का संकल्प पूरा हो चुका, इस कारण निष्चित ही राश्ट्रीय षक्तियों को पूरे भारत में बढ़ावा मिलेगा, परन्तु एक प्रष्नवाचक चिन्ह है, सबकी जुबान पर। श्रीनगर की सैनिक छावनी को अपनी आँखें से देखकर व संगीनी के साये में झंड़ा फहराकर पैदा हुआ कि वह दिन षीघ्र ही आयेगा जब स्वेच्छा से सभी काष्मीरी लाल चौंक में तिरंगें को फहरायेंगे। क्या यह पाकिस्तान में आतंकवादियों को नश्ट कर देने से होगा अथवा अन्य राजनैतिक हल की कल्पना की जा सकती है। यह प्रष्न समस्त राश्ट्र प्रेमियों को चिन्तन कर निष्चित करना होगा। बहरहाल जोषी व भाजपा नेतृत्व को सफलता की बधाई व भारत सरकार व काष्मीर के प्रदेष सरकार को इस सफलता का असली सेहरा बांधा जावे तो अतिषयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि सुरक्षा के बिना केसरिया वाहिनी व भाजपा के ड़ा. जोषी इस सफलता की हिमालयी चढ़ाई को अपना रक्त व प्राण देकर भी पार नहीं कर पाते। प्रधानमंत्री ने निष्चित ही एकता यात्रा को सफल बनाकर सच्ची राश्ट्रीयता का परिचय दिया है, जिससे राश्ट्रीय एकता को बल मिलेगा।

मचल उठा है एक एक जन एक सूत्र में बंधने को

– चन्द्रहास षुक्ल,
भोपाल.

महक रही है केषर क्यारी, फूल बने हैं अंगारे।
पांचजन्य फिर गूंज उठा है गाण्ड़ीव फिर टंकारे।।
मचल उठा है एक–एक जन एक सूत्र में बंधने को।
घुमड़ घुमड़ आते विचार है मानस अमृत मथने को।।

पुण्य भूमि के दामन पर रह जाए न दाग विदेष का।
काष्मीर में फहराएगा झंड़ा अपने देष का।।

दुष्मन बोटी नोंच रहे हैं माँ को ड़ायन कहते हैं।
भगतसिंह– अषफाक करोड़ों कैसे यह सब सहते हैं।।
लुटा आज सिन्दूर चूड़ियां टूटी घर षमषान बने।
एक गुलाब की खातिर कितने लाल गवांए हैं हमने।।

कस केसरिया बाना बोलो लेगें बदला ठेस का।
काष्मीर में फहराएगा झंड़ा अपने देष का।।

जिसकी खातिर मिटे मुखर्जी वो कष्मीर हमारा है।
तेग बहादुर के लोहूने फिर से हमें पुकारा है।।
चीखें आती है कानों में बीती हुई कहानी की।
चलों चुकाने कर्ज पुराना तुमको कसम भवानी की।।

टुकड़ा–टुकड़ा षूल बनेगा मां के बिखरे केष का
काष्मीर में फहराएगा झंड़ा अपने देष का।।

–0–

गमला संस्कृति :–

इस देष को टुकड़े टुकड़े की गुदड़ी तथा विभिन्न संस्कृतियों का कुनबा मानने वाले इसका जन्मकाल 1947 मानते है। वे इतिहास से कुछ सीखना नहीं चाहते पर भविश्य को नसीहत देने पर आमादा हैं। उन्हें इस माटी पर प्राणोंत्सर्ग करने वाले पुरखों से अपना सम्बंध जोड़ने में तो षर्म आती है परन्तु भविश्य के पितामाह बनने के लिए लार टपकती रहती है। जो इस देष की मातृभूमि कहने वालों में फर्क नीहं कर पाते वे कई चीथड़ों को हमारे सम्मान की संस्कृति निरूपित करते हैं।

ऐसी जड़ कतरी हुई संस्कृति की सुविधा भोगी व्यवस्था ने गमलों की इच्छानुसार स्थिति परिवर्तित की। लेकिन ये अलगाव की आँधी और समस्यओंकी सड़ान्ध से बचाने के लिए कभी वट वृक्ष नहीं बन सके। अन्ततः आजादी के पूर्व तक वीर प्रसूता कहलाने वाली यह भूमि सपूतों के लिए तरस गई। गमला संस्कृति की जड़े जमीन में नीहं होती। जड़ कतरी संस्कृति की उपज ये गमले के पौधे संकट के समय छाया कैसे देंगे? यह कभी नहीं सोचा गया। जब हमारे देष की मिट्टी से हमारी संस्कृति के बीज विकसित होंगे तभी समस्याओं से बचाव होना संभव है। और संस्कृति के पुनरूद्वार का कार्य वे ही कर पाएंगे जिनके पांवो में छाले और दिल में उजाले होंगे।

लेखा विहार,
सरोजनी नगर,
नई दिल्ली
22 जनवरी, 1992

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अच्छे विचारों एवं सस्मरणों से युक्त एक लघु पुस्तिका प्रकाषित करने जा रहे हैं। आपके प्रयास एवं पुस्तिका की सफलता के लिए षुभकामनाओं सहित।

– विजय राजे सिंधिया

–0–

पूर्व प्रधान सचिव
भारतीय जनता पार्टी नई दिल्ली
दिनांक 19 जनवरी, 1992

अलगाववाद उग्रवाद को एक राश्ट्र एक जन के सिद्धान्त तथा उससे उत्पन्न स्व की भावना का प्रकटीकरण करते हुए ही काबू पाया जा सकता है। पुस्तक के उत्तम भविश्य की कल्पना एवं आषंसा के साथ।

षुभकामनाओं सहित – गोविन्दाचार्य

–0–

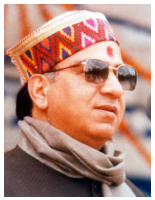

–षांता कुमार
पूर्व मुख्यमंत्री,हिमाचल प्रदेष, षिमला

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राश्ट्रीय एकता विशय पर पुस्तक प्रकाषित की जा रही है।

आज देष एक ऐसे खतरनाक दौर से गुजर रहा है जहां विघटनकारी एवं अलगाववादी षक्तियां देष की एकता एवं अखण्ड़ता को खतरा पैदा कर रही है। ऐसे में राश्ट्रीय एकता की भावना को जागृत करना प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है।

–0–

मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि आप ''एकता माला'' पुस्तक का प्रकाषन कर रहे है। यह सराहनीय प्रयास है हमारी यह यात्रा ''ऐतिहासिक'' रही है। इसने देष की एकता अखण्डता के सूत्र को एक नई दिषा प्रदान की है।

– भाजपा सांसद, मेजर जनरल भुवन चन्द्र खन्डूड़ी

एकता यात्रा के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की हस्तियों के बीच नरेन्द्र मोदी के उदय का और जनता पार्टी (भाजपा) से उनके जुड़ने का स्वतंत्र भारत के इतिहास में एक बहुत कठिन समय के साथ मिलाप हुआ। संपूर्ण देष ने हर जगह विरोध का सामना किया और केंद्र इस विखंडन का साक्षी था किंतु असहाय था। विरोध पूरे पंजाब और श्रेश्ठता को चुनौती दी जा रही थी। आंतरिक रूप से भी, विभाजक नीतियों ने देष पर षासन किया गुजरात में 'कर्फ्यू' घर के षब्दकोष में सबसे आम षब्द बन गया। भाई को भाई के विरूद्ध, समुदाय को समुदाय के विरूद्ध भड़काया गया क्योंकि वोट–बैंक की राजनीति नियम बन गई।

लोकतंत्र और मुक्त स्वर के मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध एक संगठित और सुदृढ़ भारत के सरदार पटेल के सपने को जीते हुए, एक व्यक्ति जो समय के साथ उभरा, वह श्री नरेन्द्र मोदी थे। उदास राश्ट्रीय परिदृष्य श्री नरेन्द्र मोदी में देषभक्ति को लाया, जिन्होंने अपना सर्वश्रेश्ठ दिया और आदर्शों की लड़ाई में आरएसएस और भाजपा के लिए कठोर परिश्रम किया। उन्होंने बहुत ही कम आयु से ही स्वयं को न केवल एक समर्पित कार्यकर्ता के रूप में बल्कि एक दक्ष आयोजक के रूप में स्थापित किया था। यह ठीक लग रहा था कि वह विपरीत परिस्थिति को चुनौती देते हुए समय का सामना करेंगे।

एकता यात्रा के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी अहमदाबाद में

1980 केदषक के अंत तक, देष का सबसे उत्तरी राज्य जम्मू और कष्मीर जिसे 'पृथ्वी पर स्वर्ग' के रूप में जाना जाता था, वह पूर्ण रूप से युद्ध का मैदान बन गया था। 1987 राज्य चुनावों के दौरान लोकतंत्र के कोलाहली समापन के साथ केंद्र की अवसरवादी नीति ने जम्मू और कष्मीर को भारत विरोधी गतिविधियों का गढ़ बना दिया। वो घाटी जिसे कभी पृथ्वी पर सबसे सुंदर स्थान कहा जाता था वह तेजी से युद्ध का मैदान बन रही थी क्योंकि सड़कों पर खून फैला था। मामले को इतने हल्के से लिया गया कि कष्मीर में तिरंगे को फहराना भी वर्जित हो गया था। कोई कार्रवाई करने के बजाय, केंद्र असहाय होकर देखती रही।

रूबैया सैयद, भारत के गृह मंत्री मुफ्ती मोहम्मद सैयद की पुत्री का 1989 में उन्हीं राश्ट्र विरोध तत्वों द्वारा अपहरण कर लिया गया था। किंतु, कठोर कदम उठाने के बजाय, नई दिल्ली में सरकार ने भारत विरोधी भावनाओं के साथ प्रसिद्ध अलगाववादियों को षीघ्रता से छोड़ने के लिए आसान रास्ता अपनाया, जिससे ऐसे राश्ट्र विरोधी तत्वों को ढील मिली।

भाजपा भारत की श्रेश्ठता की एस बदनामी का मूक दर्षक नहीं बन सकी। यह एक कष्मीर दौरे की बात ही थी जब श्री ष्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपना जीवन त्याग दिया था और दषकों बाद, भाजपा को राश्ट्रीय एकता के कारण बोलने का मौका मिला। अप्रत्याषित स्थिति के प्रतिवाद के रूप में, तात्कालीन पार्टी अध्यक्ष डॉ मुरली मनोहर जोषी ने राश्ट्रीय एकता की वकालत करने के लिए एक 'एकता यात्रा' को प्रारंभ करने का निर्णय लिया। यात्रा कन्याकुमारी से प्रारंभ हुई, वह स्थान जहाँ स्वामी विवेकानंद को जीवन का उद्देष्य मिला और श्रीनगर में लाल चौक पर तिरंगे फहरने के साथ समाप्त हुई।

श्री नरेन्द्र मोदी के सुस्थापित संगठनात्मक कौषल को ध्यान में रखते हुए यात्रा को तैयार करने का कार्य उनके कंधों पर सौंपा गया, अपने मस्तिश्क, संगठनात्मक दृढ़ता और मेहनत को उत्तरदायित्व में लगाते हुए, उन्होंने बहुत अल्प समय में इसके साथ आए बड़े जोखिमों का सामना करते हुए व्यापक व्यवस्थाएँ की। बिना किसी डर के, उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ मिलते हुए, हर उस स्थान का दौरा किया जहाँ से यात्रा को गुजरना था।

उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित और प्रेसित किया, उनमें देषभक्ति की भावना का निर्माण किया, इस प्रकार यात्रा की सफलता का आधार तैयार किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने न केवल यह दिखाया कि वह एक कुषल आयोजक थे बल्कि उन्होंने किसी भी परिस्थिति में अदभूत गति पर उपयोग करने की क्षमता का भी प्रदर्षन किया था, जो आज सार्वजनिक जीवन में एक दुर्लभ गुण है। श्री मोदी विपरीत परिस्थितियों में भी एक त्वरित निर्णायक के रूप में उभरे और जो उन्होंने निर्णय किया था कुछ लोगों के पास उसे लागू करने की योग्यता थी।

एकता यात्रा के दौरान श्री नरेन्द्र मोदी

एकता यात्रा 11 दिसंबर 1991 को संयोगवष सुब्रमण्य भारती और गुरू तेग बहादुर के 'बलिदान दिवस' पर प्रारंभ हुई। महत्वपूर्ण समस्याएँ, जो संपूर्ण देष में उठी हुई थीं, वे विभाजक और हिंसक नीतियों का विरोध और कष्मीर में आंतक का अंत थीं।

वह जहाँ भी गए, श्री मोदी ने ष्यामा प्रसाद मुखर्जी के संदेष का उद्योश किया, यह कहते हुए कि भारत की एकता अन्य हर चीज से ऊपर है, और कि उन्होंने समाज के विभिन्न मानदंडों में विष्वास नहीं किया। राश्ट्र विरोधी तत्वों के लिए एक उपयुक्त उत्तर समय की आवष्यकता थी और जब समय आया, श्री मोदी ने आगे से नेतृत्व किया। जहाँ कहीं भी एकता यात्रा गई उसको प्रभावषाली अभिवादन मिला। डॉ. जोषी ने राश्ट्रीय पुनरूद्धार की आवष्यकता पर जोर दिया, जिसने भारत के लोगों के साथ एक त्वरित संपर्क को पाया।

दिल्ली में एक अंधी काँग्रेस सरकार के लिए एकता यात्रा के अलावा बेहतर आँखे खोलने वाला कोई और विकल्प नहीं हो सकता था। कहने की आवष्यकता नहीं, यात्रा की सफलता श्री नरेन्द्र मोदी के लिए मील का पत्थर थी, जिसका संगठन कौषल अमूल्य सिद्ध हुआ जैसे–जैसे यात्रा आगे बढ़ी। श्री मोदी ने स्वयं भारत के लोगों से छद्म धर्म निरपेक्षता और वोट बैंक की राजनीति को ठोकर मारने के लिए निवेदन किया था। एक भावुक नरेन्द्र मोदी को देखा जब आखिरकार 26 जनवरी 1992 को श्रीनगर में तिरंगा फहराया गया। सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बीच इस दुर्लभ राश्ट्रीय अभियान की सफल समाप्ति श्री मोदी की योग्यता को सलामी थी जिससे अदम्य साहस, लक्ष्य, कौषल के साथ राश्ट्र विरोधी तत्वों को प्रभावी उत्तर दिए जाएँ क्योंकि भारत माता की षक्ति ने पुनः एकबार फिर भारत विरोधी तत्वों की मूर्खता को नश्ट कर दिया।

'जहां हुए बलिदान मुखर्जी वह कष्मीर हमारा है'

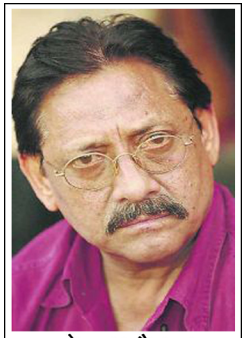

चेतन चौहान,
सांसद (अमरोहा)

दिल्ली जैसे महानगर में, 218 नार्थ एवेन्यू के कक्ष में मैं जब भी अकेले बैठने का अवसर पाता, राश्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत ''एकता यात्रा' के विशय में मनन करता रहता। ऐसे पवित्र विचार से मेरा मन गुलाब के समान महक उठता। प्रतिदिन प्रातः नित्य कर्म पद्धति से निवृत हो जब एक बड़े पार्क में वायु सेवन एवं व्याम के लिए जाता, तो पेड़ पत्तों, फूलों–कलियों में तथा चिड़ियों की सरस बोलियों में मुझे एकता यात्रा के दर्ष्न होते एवं मंत्र सुनने को मिलते। अंततः वह दिन आया और मेरा उल्लास कचनार की तरह खिल कर महक उठा। अपने कुछ साथियों के साथ अपनी जिप्सी से जमू के लिए चल पड़ा मन में आतुरता इतनी बिखर रही थी कि चालक के भार मैंने स्वयं ही संभाला। 25 जनवरी 1992 की भोर में हम जम्मू में थे।

थक गई आँखे यह देखते देखते कि सम्पूर्ण भारत के कोने कोने से वहां आये हुए देषभक्तों का एक सागर उमड़ रहा था। लगभग डेढ़ लाख लोगों के ठहरने खाने पीने आदि की व्यवस्था करने वालों का मैं आभारी हूं। इतने बड़े जन–समुदाय को किसी भी प्रकार का कोई कश्ट नहीं हुआ।

मुझे जिस बस से श्रीनगर जाना था दुर्भाग्यवष विलम्ब होने के कारण वह बस मेरे से छूट गई। इस समय मुझे भारी हताषा हुई। मैं एक असफल पथिक की भांति चिन्ताग्रस्त था। मेरे पिता श्री नौरतन सिंह चौहान आर्मी में कर्नल रहे थे। अतः एक वीर सैनिक का पुत्र होने के नाते मैंने साहस नही त्यागा। किसी प्रकार मुझे पता चला कि कुछ ही समय पष्चात् एक विमान काष्मीर जाने वाला है। अतः विधुत गति से मैं सक्रिय हो गया। मैं उ.प्र.भाजपा अध्यक्ष श्री कलराज मिश्र तथा कुछ अन्य व्यक्तिओं से मिला एवं श्रीनगर के लाल चौंक जाने का संकल्प दोहराया अन्त में किसी प्रकार मेरा नाम भी जाने वालों की सूची में जोड़ दिया गया।

समय कम था। अतः ब्रीफकेस को छोड़ मैंने अपने कुछ वस्त्र प्लास्टिक की एक थैली में रखे एवं बताये गये समय से कुछ पूर्व विमान स्थल पर पहुंच गया। प्रतिक्षा की घड़ी आ गई। हम लगभग 70 यात्री विमान में सवार हुए और भारत माता की जयघोश के साथ काष्मीर की सर्द हवा में विमान तैरने लगा। मात्र पन्द्रह मिनट बाद हम श्रीनगर की धरती पर जा उतरे। सुरक्षा प्रबंधो के बीच हम लोगों को ठहरने के स्थान पर ले जाया गया। ठहरने के हाल में घुसते ही

भारत माता की जय एवं वन्दे मात्रम के गगनभेदी नारों के स्वर सुनाई दिये। देखने पर पता चला कि हमारे कुछ साथी व्यक्तिगत रूप से हमसे पूर्व ही एक अन्य विमान द्वारा श्रीनगर पहुंच गये थे और उनको घूमते हुए सुरक्षा कर्मियों ने पकड़ कर हाल में बिठा लिया था। हम सभी ने उनके इस अदम्य साहस के लिये उनको भरपुर बधाई दी। चाय, रात्रि भोजन एवं कुछ पारस्परिक चर्चा के उपरान्त हम लोग निषा की गोद में निर्भय होकर सो गये। भोर होते ही हम लोग उठे। षौच आदि से निवृत्त हो, अल्पाहार किये एवं लाल चौंक के लिए चल पड़े। लाल चौंक में पहुंचने के उपरान्त पन्द्रह मिनिट के ध्वजारोहण से पहले समारोह में प्रथम डाक्टर मुरली मनोहर जोषी ने सिकोड़े जा सकने वाले खम्भे पर कन्याकुमारी से लाया गया तिरंगा फहराया, जो उन्हें षहीद भगत सिंह और राजगुरू के भाईयों तथा अब्दुल हमीद के पुत्रों ने दिया था।

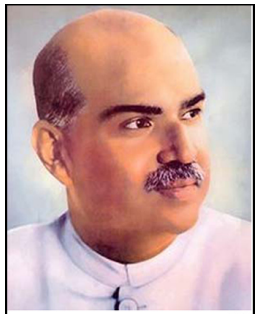
श्यामा प्रसाद मुखर्जी

इसके उपरांत लाल चौंक पर गड़े स्थायी खंभे पर एक और अषोक चक्रांकित तिरंगे का आरोहण किया गया तथा राश्ट्रगान एवं राश्ट्रीय उद्बोधन के उपरांत समारोह समाप्त हो गया। समारोह के समय भारतीय जनता पार्टी के 16 सांसद, 10विधायक, 3 राज्य इकाईयों के अध्यक्ष, तथा आधा दर्जन केसरिया वाहिनी के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। पार्टी के उपाध्यक्ष सिकन्दर बख्त और कृश्णलाल षर्मा के नेतृत्व में श्रीनगर गये इस दल में सांसद सुश्री उमा भारती, वसुन्धरा राजे, सत्यनारायण जटिया, मदनलाल खुराना और कलराज मिश्र प्रमुख थे। ठहरने के स्थान से हम एकता यात्रियों तथा पत्रकारों को लाल चौंक सीमा सुरक्षा बलों की दो बसों में ले जाया गया था। उस समय कोहरे की ष्वेत चादर में सम्पूर्ण श्रीनगर ढ़का हुआ था। ध्वजारोहण के समय श्री जोषी ने कष्मीरी टोपी तथा क्रीम रंग की फिहरन और सलवार पहनी हुई थी। यात्रियों ने नारा लगाया–''जहां हुए बलिदान मुखर्जी कह कष्मीर हमारा है।''

झंड़ा समारोहण के उपरान्त हम लोग विमान द्वारा ही जम्मू वापस आ गये कोहरे से ढ़के काष्मीर की धरती पर सुरज की सुनहरी किरणें बिखर कर वातावरण की छटा वृद्धि कर रही थी। केसर की क्यारियां, विविध कलियां एवं फूल लजा कर खिलखिला रहे थे। इस गर्जनापूर्ण अभियान में सुरक्षा बलों का मनोबल अत्याधिक बढ़ाया है। देष प्रेमियों के मन में राश्ट्रीय चेतना जागृत हुई है। विष्व जान गया है कि विष्व की कोई भी षक्ति काष्मीर को भारत से अलग नीहं कर सकती। एकता यात्रा अभियान की यह महानत्म सफलता है। मैं इस यात्रा को जीवन भर नहीं भूल सकता। ाशा, प्रान्त, धर्म से बढ़कर सर्वाधिक महत्व की बात यह है कि हम सब भारतीय हैं। अनेकता में एकता ही हमारी विषेशता है।

देषभक्ति बन अंगारा दहकी

ब्रजभूशण सिंह गौतम,
मुरादाबाद

अगर देष–हित बन अंगारा न दहके
जलन क्या कहेगी पवन क्या कहेगा
खुदीराम, गांधी, भगत, चन्द्रषेखर
अमर हो गए देष पर प्राण देकर
अगर बन षलभ दीप पर हम न झुलसे
जनम क्या कहेगा मरण क्या कहेगा–।
चकोरी विकल प्यार में चन्द्रमा के
धरा रो रही विलग आसमां से
अगर हम भ्रमर बन सुमन पर न मचले
कली क्या कहेगी चमन क्या कहेगा ।। 2।।
चले आंधिया बिजलियां चमचमाएं
प्रलय षक्ति सघन मेघ ठाएं
अगर चांद बनकर अमा में न चमके
धरा क्या कहेगी गगन क्या कहेगा ।। 3 ।।

–0–

व्यंग–गजल

मानिक वर्मा, हरदा

उठी जब कभी हुक्मे षाही की ठोकर
पड़ी बेकसों पर तबाही की ठोकर

खुद अपना मुकद्दर कभी न पढ़ पाई
कलम को पड़ी है स्याही की ठोकर

ठिठुरते बदन पर चुभन सर्दियों की
यूं लगती है जैसे सिपाही की ठोकर

ये मुजरिम बना कटघरे में खड़ा है
लगी सच को झूठी गवाही की ठोकर

हमें भी गुजरना है उस रास्ते से
चलो चलके देखें उस राही की ठोकर

उसे उम्र भर होष आया न ''माणिक''
जिसे पड़ गइ वाह वाही की ठोकर

–0–

पूर्व जल संसाधन मंत्री
भारत षासन
नई दिल्ली

वर्तमान में विघटनकारी षक्तियां देष में अलगाववाद, उग्रवाद, सम्प्रदायवाद की गतिविधियों को षह देकर देष में अस्थिरता की स्थितियां पैदा करने का प्रयास कर रही हैं। निःस्वार्थ देषभक्ति एकता व परस्पर सहयोग की भावना, वर्तमान के प्रति जागरूकता तथा विघटनकारी षक्तियों के बहकावे में न आने का दृढ़ संकल्प ही इन देषद्रोही षक्तियों को मुंह तोड़ जवाब दे सकता है।

पुस्तक के सफल प्रकाषन की मैं कामना करता हूं।

— विद्याचरण षुक्ल

—0—

पूर्व राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार
विद्युत एवं अपारंपरिक उर्जा स्त्रोत
भारत षासन, नई दिल्ली

वर्त्मान मे प्रतिदिन बदलती परिस्थितियों को देखते हुए राश्ट्र की एकता व अखण्ड़ता को मजबूत करने के लिये ऐसे प्रयास किये जाने आवष्यक है। आषा है इस पुस्तक के माध्यम से देष की जनता में राश्ट्र के प्रति एक नयी भावना उत्पन्न की जा सकेगी। — कल्पनाथ राय

—0—

पूर्व मुख्यमंत्री
मध्यप्रदेष, भोपाल

एकता ही षक्ति है। आज देष में फैली अलगाववादी, उग्रवादी एवं अन्य अराजकता फैलाने का सामना हम एकता से ही कर सकते हैं। एकता माला का उद्देष्य सफल हो यही कामना करता हूं।

— ष्यामाचरण षुक्ल

—0—

''हिन्दुत्व एक ऐसा माध्यम है जिसको अपनाकर मैं अपने को एक नेक इंसान अनुभव करता हूं।''हरे रामा हरे कृश्णा का मंत्र जपने वाले अमेरिकी कृश्ण जार्ज हेरिसन

मंदिरों के भजन
मस्जिदों की अजां
रूह की रोषनीं के हैं से समां
नाम पर इनके नादान दुनियां मगर
खून बहाती रही घर जलाती रही। — एकता ष्बनम

राश्ट्र को एक भारतीय आत्मा की दृश्टि से देखें

— राधेष्याम षर्मा
पूर्व महानिदेषक— माखनलाल चतुर्वेदी
राश्ट्रीय पत्रकारिता वि.वि. भोपाल

आज जब सब तरफ देखते हैं तो लगता है कि मानो देषवासियों मे भारत राश्ट्र को ''अंधे का हाथी'' की तरह देखने की होड़ मची है। कोई पार्टी या सत्ता की दौड़ में अंधा है तो कोई जातिवाद, क्षेत्रवाद या सम्प्रदायवाद के पीछे अंधा है। किसी की आँख पर विदेषी प्रभाव का परदा पड़ा है तो किसी को ततकालिक स्वार्थ ने अंधा कर दिया है। सब अपने अपने नजरिये से देष को टटोल रहे हैं, और व्याख्या कर रहे हैं। चाहे

वर्तमान समस्याओं की व्याख्या हो या बीते युग की उपलब्धियां या पतन के कारणों का विष्लेशण हो—सभी मैं भारी अंतर्विरोध दिखायी देता है। किसी किसी में विदेषी हमलवारों और सम्राज्यवादियों के प्रति भी जब भक्तिभाव के दर्षन होते हैं तो बड़ी कोफ्त होती है। कभी—कभी तो लगता है कि षायद विदेषी हूकूमतों के खिलाफ संघर्श में देष इतने फिरकों में नहीं था, जितना आज बंटा है और आपस में इतनी दूरी नहीं थी जितनी आपस की दूरी आज झलकती है।

दृश्टि का महत्व —

ऐसे समय जब हम माखनलाल जी चतुर्वेदी एवं उनके लेखन को देखें
या पढ़ें तो हमारी आँखों के सामने से वह परदा या जाला हटाने में मदद मिल सकती है, जिसके आज हम षिकार हैं। दादा की दृश्टि थी इस देष को और इसके भूत और भविश्य को ''एक भारतीय आत्मा'' की दृश्टि से देखने की। आज जरूरत इसी बात की है।

दादा माटी से उपजे हुए महापुरूश थे, जिनके पास वह सब तो नहीं था, जो कि समाज की उच्च स्तरीयता का प्रतीक होता है। फिर भी दादा के पास वह सब था, जो कि समाज के उच्चतम से उच्चतम स्तर से ऊपर जाकर बोला करता था। यह उनकी विचित्र उपलब्धि थी।वे अपने समय से बहुत आगे थे। वे अपने समकालीन स्तर से बहुत ऊंचे थे। यह ऊंचाई कोई आरोपित ऊंचाई नहीं थी। यह ऊंचाई तो उनकी अपनी मिट्टी,एनके अपने राजनीतिक संघर्शो और उनके अपने त्याग से उपजी ऊंचाई थी।

वे अपनी धरती,अपने लोगों और अपने स्वयं के इतिहास से जुड़े थे। उस इतिहास को वे अपनी दृश्टि से देखते थे –''एक भारतीय आत्मा'' की दृश्टि से।

यह जुड़ाव कोई उधार का जुड़ाव नहीं था जैसा कि बाद के कुछ पत्रकारों/साहित्यकारों/राजनेताओं में आया। यह जुड़ाव हृदय का जुड़ाव था। जहां कहीं भी विद्रोह होता था, जहां कहीं भी स्वतंत्रता के लिए षहादत होती थी दादा का दिल धड़क उठता था। दादा उस पर बोलते थे, लिखते थे। वह विष्व चेतना का काव्य दादा का अपना काव्य था।

उनके लिए उस समय ईष्वर यह देष था – ईष्वर को वे कभी कृश्ण के रूप में देखते और कहते ''वेणु लो गूंजे धरा''। कभी वे इसे मातृषक्ति के रूप में देखकर कर्त्तव्य–कर्म की बात कहते–''हिम किरीट –हिमालय का किरीट''। (हिम किरीटनी)

दरसल उनके लिए ईष्वर कोई भावुकता, आकुलता मात्र नहीं था। वे तो सक्रियता एवं आत्मबलिदान रूपी ईष्वर के लिए ही तड़पते थे और आह्वान करते थे कि ''वास्तव में देषभक्ति का पथ, आत्म–बलिदान का पथ ही ईष्वर–भक्ति का पथ है,

देष्भक्ति और ईष्वर भक्ति को विष्वभक्ति चेतना, मानव चेतना और हिन्दी भाशा की महान अस्मिता से जोड़ देने का ऐतिहासिक कार्य चतुर्वेदी जी ने किया था। तब अभिव्यक्ति की आजादी पांबदी थी। देष गुलाम था। कई लोग छद्म नाम से लिखते थे। उस समय उन्होंने कर्म पर बल दिया। कर्म किया। उनका सिद्धांत था–

कर्म है अपना जीवन प्राण,
कर्म पर हो जाओ बलिदान

आचरण की बात –

वे गांधी के निकट आये तो उनके विचारों को पूरी तरह आत्मसात कर लिया। गांधीवाद उनके आचरण में था। कथित गांधीवादी छद्म से वे दूर थे। दिखाना उन्हें पसंद नहीं था। दादा राश्ट्रीय युग के एक सषक्त पत्रकार थे। पत्रकारिता उनके लिए स्वार्थ साधन का नहीं बल्कि जीवन का रक्त देकर चलने वाली साधना थी।

उन दिनों दैनिक प्रताप में नवीन जी ने कविता लिखी थी–
''कवि कुछ ऐसी तान सुनाओं कि उथल–पुथल हो जाए।''

तब उन्हीं दिनों ''कर्मवीर'' में दादा ने लिखा था –
''राश्ट्र उद्दण्ड़ राश्ट्र, उन्मुक्ता राश्ट्र यह मेरी बोली।''

इसी युग में ''जनता''(पटना) में रामाधारी सिंह दिनकर की कविता छपी थी। ''दिंगबरी बोल अम्बर में प्रलय का तार बोले''।

उस युग में यह तीनों पत्र राश्ट्रीय जागृति का षंखनाद थे। राश्ट्रीय एकता के स्वर की इस त्रिमूर्ति ने देष को राश्ट्रीयता के सूत्र में पिरोने का अभिनव कार्य किया था।

पत्रकारिता का उद्देष्य –

दादा की पत्रकारिता का उद्देष्य भी जनजागृति, जनता के विष्वास एवं आत्म विष्वास को जगाना और सारे राश्ट्र को एक संगठित षक्ति के रूप में खड़ा करना था। वो लिखते है–''हम अपनी जनता के पूर्ण उपासक होंगे। हमारा यह दृढ़ विष्वास होगा कि विषेश मनुश्य या विषेश समूह नहीं बल्कि प्रत्येक मनुश्य और समूह मातृसेवा का अधिकारी है।

''हमारा पथ वही होगा जिस पर सारा संसार सुगमता से जा सके। उसमें वस्त्र धारण किये हुए चंवर से षोभित सिर की भी वही कीमत होगी जो कृशकाय लकड़ी के भार से दबे हुए मजदूर की होगी। हम मुक्ति के उपासक हैं राजनीति या समाज में साहित्य में या धर्म में जहां भी स्वतंत्रता का पथ रोका जायेगा, ठोकर मारने वाले का प्रहार और घातक के षस्त्र का पहला वार आदर से लेकर मुक्ति होने के लिए प्रस्तुत रहेंगे। दासता से हमारा मतभेद रहेगा– फिर वह षरीर की हो या मन की, व्यक्तियों की हो या परिस्थितियों की, दोशियों की हो या निर्देशियों की, षासकों की हो या षासितों की।'' राश्ट्र प्रेम एवं राश्ट्रीय एकता की मजबूती का इससे बड़ा घोशणा–पत्र और क्या हो सकता है? सारे ऊपरी भेदभावों को भुलाकर देषवासियों को बराबरीके आधार पर अपने एक ही आराध्य इस राश्ट्र के प्रति समर्पित करना उनका उद्देष्य था।

आजादी के पहले दादा ने भरतपुर पत्रकार सम्मेलन में कहा था –

''समाचार पत्र यदि संसार की एक बड़ी ताकत है तो इसके सिर पर जोखिम भी कोई कम नहीं है। पर्वत की जो षिखायें हिम से चमकती है और राश्ट्रीय रक्षा की महान दीवार बनती है, उन्हें ऊंचा होना पड़ता है। जगत में समाचार पत्र के बड़प्पन के मूल्य ही क्या है? और बड़प्पन तो मिट्टी मोल हो जाता है, जो अपनी जिम्मेदारी को सम्हाल नहीं पाता।''

समर्पण का भाव :–

अखबारों और पत्रकारों को उनके यह प्रेरक विचार आज भी मार्गदर्षक एवं कर्त्तव्य के प्रति सजग करने वाले हैं। जब तक पत्रकारिता राश्ट्रीय एकता व राश्ट्रीय उत्थान के प्रति समर्पित नहीं होगी तब तक उसका कोई मूल्य या महत्व नहीं है। आजादी के बाद भी उनकी विचारधारा में राश्ट्रीय जागरण एवं

एकता ही सर्वोमरि थी। विकास में भी वे राश्ट्रीय भावना को सर्वोच्च मानकर घटिया चिंतन या आचरण के सख्त खिलाफ थे।

आजादी के बाद के हालात पर उन्होंने टिप्पणी की थी –

''कितने संकट के दिन हैं ये। व्यक्ति ऐसे चौराहे पर खड़ा है, जहां भूख की बाजार दर बढ़ गयी है और पायी हुई स्वतंत्रता की बाजार दर घट गयी है। पेट के उपर हृदय और सिर रखकर चलने वाला भारतीय मानव मानों हृदय और सिर पर पेट रखकर चल रहा है। खाद्य पदार्थो की बाजार–दर बढ़ी हुई है और चरित्र की बाजार दर गिर गयी है।''

यदि देष के नेताओं एवं कर्णधारों ने इस ओर गंभीरता से ध्यान देकर आवष्यकता के अनुरूप आचरण किया होता तो षायद आज के हालात बेहतर होते। उनका चिंतन और कथन आज भी सामयिक है। उन्होंने केवल ऊंचे आदर्षो, एवं लच्छेदार भाशणों तक खुद को सीमित नहीं रखा। आम आदमी की समस्याओं के प्रति भी वे उतने ही चिंतित एवं सजग थे। गरीबी, भुखमरी, विशमता और षोशण के खिलाफ भी उन्होंने कलम चलायी थी।

वे कोई बड़े डिग्रीधारी नही थे, लेकिन उनकी दृश्टि पैनी थी ज्ञान का भंड़ार अथाह था, विचार उच्च थे एवं चिंतन व्यापक था। वे कहते हैं – ''तू मुझे विद्वान कहता है मैं तो पढ़ा लिखा नहीं हूं। मेरे पास विष्वविद्यालय की कोई डिग्री नहीं है।''

दिल में ज्वाला–

यह सच है। उनके पास डिग्री नहीं थी लेकिन जन्मजात प्रतिभा, राश्ट्रभक्ति की उत्कट भावना राश्ट्र के प्रति समर्पण, एवं अटूट निश्ठा तथा देष की एकता एवं उत्थान के लिए संघर्श, की दिल में धधकती ज्वाला थी। उन्होंने ड़िग्री या पद के बूते पर नहीं बल्कि कर्तव्य से यष व प्रषंसा अर्जित की। सही मायने में श्रद्धा एवं सम्मान प्राप्त किया।

आज जब बिखराव, पृथकता, आतंकवाद, अंधे स्वार्थ और घटिया राजनीति के फेर में है, इसी तरह के विचार एवं आदर्ष ही देष को एक सूत्र में पिरोने में सहायक हो सकते हैं। उनका यही संदेष आज का बोधवाक्य हो सकता है –

सूली का पथ ही सीख हूं, सुविधा सदा बचाता आया,
मैं बलि पथ का अंगारा हूं, जीवन–ज्वाला जलाता आया।।

पुश्प की अभिलाशा

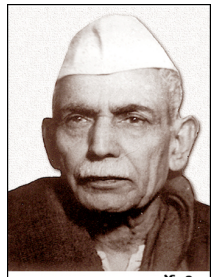
माखनलाल चतुर्वेदी

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी–माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ!

चाह नहीं, सम्राटों के षव पर, हे हरि, डाला जाऊँ,
चाह नहीं, देवों के सिर पर, चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ!

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर षीष चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक!

–0–

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ–जिससे उथल–पुथल मच जाये!

बाल कृष्ण शर्मा

एक हिलोर इधर से आये– एक हिलोर उधर से आये,
प्राणों के लाले पड़ जाएं त्राहि–त्राहि तब नभ में छाये,
नाष और सत्यानाषों का धुआंधार जग में छा जाये,
बरसे आग जलद जल जायें, भस्मसात् भूधर हो जायें,
पाप–पुण्य सदसदभावों की धूल उड़ उठे दायें–बायें,
नभ का वक्षः स्थल फट जाये, तारे टूक–टूक हो जायें,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ–जिससे उथल–पुथल मच जाये!
मता की छाती का अमृतमय पय काल–कूट हो जाये,
आंखों का पानी सूखे वे षोणित की घूंटें हो जायें,
एक ओर कायरता कांपे, गतानुगति विगलित हो जायें,
और दूसरी ओर कँपा देने वाला गर्जन उठ धाये,
अंतरिक्ष में एक उसी नाषक तर्जन की ध्वनि मंडराये,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ–जिससे उथल–पुथल मच जाये!
नियम और उपनियमों के ये बंधन टूक टूक हो जायें,
विष्वभर की पोशक वीणा के सब तार मूक हो जायें,
षांति–दण्ड टूटे,– उस महारूद का सिंहासन थर्राये,
नाष!नाष! हाँ, महानाष की प्रलयंकारी आंख खुल जाये,
कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ–जिससे उथल–पुथल मच जाये!

–0–

रामधारी सिंह दिनकर

मैं हुआ धनुर्धर जब नामी, सब लोग हुए हित के कामी,
पर, ऐसा भी था एक समय, जब यह समाज निश्ठुर निर्दय,
किंचित न स्नेह दर्षाता था, विशव्यंग सदा बरसाता था।
अपना विकास अवरूद्ध देख, सारे समाज को क्रुद्ध देख,
भीतर जब टूट चुका था मन, आ गया अचानक दुर्योधन।

गमला संस्कृति :–

इस देष को टुकड़े टुकड़े की गुदड़ी तथा विभिन्न संस्कृतियों का कुनबा मानने वाले इसका जन्मकाल 1947 मानते है। वे इतिहास से कुछ सीखना नहीं चाहते पर भविश्य को नसीहत देने पर आमादा हैं। उन्हें इस माटी पर प्राणोंत्सर्ग करने वाले पुरखों से अपना सम्बंध जोड़ने में तो षर्म आती है परन्तु भविश्य के पितामाह बनने के लिए लार टपकती रहती है। जो इस देष की मातृभूमि कहने वालों में फर्क नीहं कर पाते वे कई चीथड़ों को हमारे सम्मान की संस्कृति निरूपित करते हैं।

ऐसी जड़ कतरी हुई संस्कृति की सुविधा भोगी व्यवस्था ने गमलों की इच्छानुसार स्थिति परिवर्तित की। लेकिन ये अलगाव की आँधी और समस्यओं की सड़ान्ध से बचाने के लिए कभी वट वृक्ष नहीं बन सके। अन्ततः आजादी के पूर्व तक वीर प्रसूता कहलाने वाली यह भूमि सपूतों के लिए तरस गई। गमला संस्कृति की जड़े जमीन में नीहं होती। जड़ कतरी संस्कृति की उपज ये गमले के पौधे संकट के समय छाया कैसे देंगे? यह कभी नहीं सोचा गया। जब हमारे देष की मिट्टी से हमारी संस्कृति के बीज विकसित होंगे तभी समस्याओं से बचाव होना संभव है। और संस्कृति के पुनरूद्वार का कार्य वे ही कर पाएंगे जिनके पांवो में छाले और दिल में उजाले होंगे।

–0–

एकता यात्रा

– ठा. हरिहर बख्ष सिंह,
भू.पू. अध्यक्ष, म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन,

केसरिया किषलय ने रषिमाल पहनी
ऊशा ने पथ पर गुलाल सा बिखराया।
मधुबन में अभिनव बंषी का स्वर गूंजा
नंदिघोश रथ नव प्रकाष लेकर आया।।
भव्य भावना के कण कण में फूल खिले
रोम रोम पुलकित था भारत माता का ।
मुग्ध पंछियों का मधुरिमा कलख बरसा
सर्जन पर गर्वोन्नत भाल विधाता का।।

सागर उमंग बढ़ा हिमालय से मिलने
विंध्याचल को नव अगस्त्य ने पार किया।
जिसके जैसे भाव मूर्ति, वैसी देखी।
किंतु कसंधु गंभीर असिति गहराई।
केसरिया ध्वज केसर क्यारी पर लहरा,
नागों ने चंदन की सुगंध पाई।।

भगवान षंकर मुस्लिमों के प्रथम पैगंबर एकता के प्रतीकः हिंदुत्व से देष में एकता

अयोध्या में जमीयत के मुफ्ती मोहम्मद इलियास ने कहा कि भगवान षंकर मुस्लिमों के पहले पैगंबर हैं। उन्होंने कहा कि इस बात को मानने में मुसलमानों को कोई एतराज नहीं है। भगवान षंकर और पार्वती मुस्लिमों के भी सृजन कर्ता हैं।

जमीयत 27 फरवरी 2015 को बलरामपुर में कौमी एकता का कार्यक्रम करने जा रहा है। इसी कार्यक्रम में अयोध्या के साधु–संतों को आमंत्रित करने के लिए प्रतिनिधिमंडल अयोध्या आया था। उसी में मुफ्ती मोहम्मद इलियास भी षामिल थे। इसी सिलसिले में अयोध या के साधु–संतों को इसमें हिस्सा लेने की अपील करने आए थे। इस दौरान प्रतिनिधि मंडल ने राम जन्मभूमि के मुख्य पुजारी सतेंद्र दास और षनि धाम के महंत हरदयाल षास्त्री के साथ मिलकर आतंकवाद का पुतला भी फूंका।

अपनी बात को विस्तार से समझाते हुए उन्होंने कहा कि मुसलमान भी सनातन धर्मी हैं और हिंदुओं के देवता षंकर और पार्वती हमारे मां–बाप हैं। मुफ्ती ने कहा कि जब हमारे मां–बाप, खून और मुल्क एक है तो इस लिहाज से हमारा धर्म भी एक है।

हिंदू राश्ट्र विशय पर बोलते हुए मौलाना मुफ्ती मोहम्मद इलियास ने कहा कि मुस्लिम हिंदू राश्ट्र के विरोधी नहीं हैं। जिस तरह चीन में रहने वाला चीनी, अमरिका में रहने वाला अमरिकी, उसी तरह से हिंदुस्तान में रहने वाला हिंदू। साथ ही उन्होंने कहा कि ये तो हमारा मुल्की नाम है।

बीजेपी ने जमीयत उलेमा के मुफ्ती मो इलियास के बयान को आर्दष वाक्य बताया है। बीजेपी प्रदेष अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने कहा है कि यदि मौलवी मुफ़्ती के अनुयायी उनके कथन को मानते हैं तो देष में षांति और सौहार्द कायम होगा।

जमीयत के मुफ़्ती मोहम्मद इलियास के उक्त बयान की पुश्टि गोरक्षपीठाधीष्वर और बीजेपी सांसद आदित्यनाथ ने यह कह कर की है कि हिंदुस्तान में पैदा होने वाला हर बच्चा हिंदू है।

अभिनेता– नेताओं ने 2 दिन में बनाए पांच करोड़ षिवलिंग

भोपाल में चल रहे सौंवे महारूद्र पार्थिव षिवलिंग यज्ञ में सवा पांच करोड़ षिवलिंग दो दिन में ही पूरे बना लिए गए। आयोजकों ने होषंगाबाद रोड स्थित वृंदावन गार्डन में चल रहे इस यज्ञ को वर्ल्ड रिकॉर्ड में षामिल करने की तैयारी षुरू कर दी है। इस आयोजन में मप्र. के मुख्यमंत्री षिवराज सिंह चौहान से लेकर उनके कई मंत्री, विधायक, कांग्रेस के विधायक सहित 50 नेताओं ने षिवलिंग निर्माण में हिस्सा लिया। यही नहीं आषुतोश राणा सहित लगभग 25 टीवी कलाकार दो दिन से यहां बैठकर षिवलिंग तैयार कर रहे हैं।

15 ट्रक मिट्टी से बने करोड़ों षिवलिंग

पंडित प्रेम प्रभाकर षास्त्री दद्दाजी के नेतृत्व में चल रहे इस यज्ञ में दो दिनों में लगभग 50 हजार लोगों ने हिस्सा लिया है। यह यज्त्र 1 जनवरी तक चलेगा। व्यास के मुताबिक सौंवे पार्थिव षिवलिंग निर्माण यज्ञ को वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराने की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि अब तक की जानकारी में सौ यज्ञ किसी संत ने नहीं करार हैं।

दो दिन तक परिवार सहित आए सीएम, आज आएंगे राजपाल यादव

इस यज्ञ में मुख्यमंत्री षिवराज सिंह चौहान ने दो दिन लगातार परिवार समेत षिरकत की। वहीं फिल्म अभिनेता आषुतोश राणा कई दिनों से यहीं डेरा डाले हुए हैं। रविवार को राजपाल यादव भी यज्ञ में हिस्सा लेने के लिए भोपाल आ रहे हैं। इसके साथ ही मप्र के मंत्री कैलाष विजयवर्गीय, भूपेंद्र सिंह, रामपाल सिंह, भाजपा प्रदेष महामंत्री अरविंद मेनन, विधायक रमेष मेंदोला, अर्चना चिटनिस, नारायण त्रिपाठी सहित भाजपा– कांग्रेस के कई विधायकों ने षिवलिंग निर्माण में हिस्सा लिया।

आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा, हिंदुत्व से आएगी देष में एकता

राश्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत का कहना है कि देष में एकता लाने का रास्ता सिर्फ हिंदुत्व ही है, देष को 'हिन्दू राश्ट्र' बनाने की 19 जनवरी 2015 को अपील करते हुए भागवत ने कहा कि नोबल पुरस्कार से सम्मानित रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी कहा था कि हिन्दुत्व 'विविधता' की एकता' में विष्वास करता है।

मध्य प्रदेष के सागर में आरएसएस के चिंतन षिविर के रविवार को भागवत ने स्वयंसेवकों से कहा, ''दुनिया भले ही यह कहती हो कि एक होना है, तो एक से दिखो, लेकिन हिन्दुत्व विविधता में एकता का हिमायती है, सहिश्णुता का अर्थ सहन करना नहीं, बल्कि विविधता को स्वीकारना है, विविधता देखने मे अलग–अलग है, लेकिन एक रूप में हिन्दू विचार और हिन्दुत्व है।''

कविगुरू ने अपनी किताब 'स्वदेषी समाज' में अंग्रेजों की आलोचना करते हुए लिखा था कि आपस में लड़कर हिन्दू–मुस्लिम खत्म नहीं होंगे बल्कि इस संघर्श से वे साथ रहने का रास्ता ढूंढ लेंगे और वह रास्ता 'हिन्दू राश्ट्र' होगा। उन्होंने कहा, ''जो देष सुरक्षित और प्रतिश्ठित नहीं होता है, उसके लोगों के सिर पर दुनिया भर में संकट मंडराता रहता है, हमारा देष अच्छा कैसा होगा...इस सिलसिले में समय–समय पर तरह–तरह के विचार अभिव्यक्त और प्रयोग किए जाते रहे हैं।''

उन्होंने कहा कि पहले देष को आजादी दिलाने और आजादी के बाद देष को विकास दिलाने के लिए विचारधाराएं काम करती रहीं, लेकिन जैसी कल्पना की थी..देष का वैसा विकास नहीं हुआ। इजराइल का हवाला देते हुए भागवत ने कहा कि यह छोटा सा रेगिस्तानी और मुट्ठी भर आबादी वाला देष भारत के साथ ही अस्तित्व में आया, इसकी आजादी के साथ ही आठ पड़ोसी देषों ने हमला कर दिया, इस छोटे से देष ने पांच लड़ाइयां लड़ी, जमीन का डेढ़ गुना विस्तार किया और सिर उठा कर खड़ा हो गया। उन्होंने कहा, ''इतनी मुष्किलों के बावजूद वही छोटा सा देष आज 'नंदनवन' में तब्दील हो गया, दंनिया भर से लोग यहां कम पानी में खेती और बागवानी के गुर सीखने जा रहं हैं, लेकिन हमारे पास हजारों किलोमीटर लंबी जमीन थी, करोडों की आबादी थी, दिग्गज नेता थे..फिर भी इजराइल हमसे कई गुना आगे निकल गया।''

http://www.newsanalysisindia.com/2015/02/20/bhagwan-shankar-muslimon-ke-pratham-paigambar-ekta-ke-pratik-hindutv-se-desh-mein-ekta/

''काष्मीर न तो कभी आजाद हो सकेगा और न ही अमेरिका उसे पाकिस्तान में षामिल होने देगा क्योंकि इस्लामीकरण उसके लिये एक सतत् खतराहै।

–पाकिस्तान के भू.पू. सेना अध्यक्ष, असलम बेग,

सूनी पड़ी हुई है मुद्दत से दिल की बस्ती।
आ एक नया षिवाला इस देवा में बसा दें।।

– इकबाल

हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन। दिल को खुष करने का गालिब ए ख्याल अच्छा है। न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता। डूबाया मुझको होने ने, न होता तो मैं क्या होता।

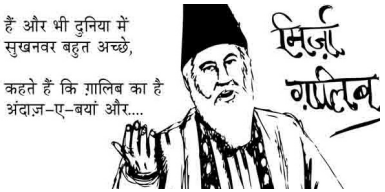

–गालिब

''भारत को यद्यपि 30 करोड़ देवी देवताओं का देष कहा जाता है। तथापि जापान में देवी देवताओं की संख्या इससे कहीं अधिक है। जापान के वयोवृद्ध संस्कृत कवि विद्वान निकि थिमुराका के अनुसार जापान के सभी देवी देवता भारत की ही देन है। जापान की कोई स्थानीय देवी देवता नहीं है। ब्रहम्, इन्द्र, गनेष, सरस्वती, रूद्र, पृथ्वी, सूर्य, सोम, कार्तिकेय, सहस्त्रबाहू, कुबेर तथा यम आदि देवी देवता जिनको भारत में लगभग विस्मृत ही कर दिया गया है, जापान में आज तक अत्यंत पूज्य माने जाते हैं।

– चमनलाल

दिलीप सिंह जूदेव,
पूर्व सांसद, भाजपा, छ.ग.

एकता–यात्रा पर संस्मरण

एकता यात्रा के लिए मुझे प्रारंभिक रूप से रायगढ़, बिलासपुर एवं सरगुजा जिले में प्रचार, प्रसार एवं वातावरण निर्माण हेतु दायित्व सौपा गया था, परन्तु अचानक अस्वस्थता के कारण संभाग स्तर पर यह कार्य मै नहीं कर सका। स्वास्थ्य कुछ ठीक होते ही मैं एकता यात्रा में कष्मीर जाने के लिए स्वयं के साधनों से तैयारी करने लगा। साथ चलने के लिए अपने साथियों को तैयार किया, दिनांक 22.01.1992 हो चुकी थी। इस कारण तय हुआ कि सीधे दिल्ली जाकर एकता यात्रा में सम्मिलित हुआ जाए। मेरे साथ सैकड़ों इश्ट मित्र जान की बाजी लगा कर कष्मीर की यात्रा पर निकल पड़ने और 26 जनवरी को तिरंगा फहराने के लिए उतावले थे। इनमें से निम्नांकित पांच घनिश्ट एवं समर्पित मित्रों सर्वश्री अमरसिंह देव, कृश्ण कुमार राय, नरेष चन्द्र, देवेन्द्र गुप्ता व ष्यामसुन्दर सहाय के साथ जीप में रवाना हुए। साथ में मेरा गनमैन श्री हरीप्रसाद यादव भी था। इस तरह मेरे समेत सात व्यक्ति जीप में सवार होकर जषपुर से निकले।

हृदय में जोष और उत्साह तरंगे मार रहा था। क्योंकि देष के मणिमुकुट पर आक्रंताओं की वक्र दृश्टि पड़ रही है। समय समय पर उन लोगों द्वारा उस पर आघात किया जा रहा है जिससे कि वह खंड़ित हो जाए और सरताज कहलाने वाला यह क्षेत्र सदा के लिए हमसे, हमारी संस्कृति से, हमारी धरती से छिन्न भिन्न हो जायें, किन्तु उन अक्रांताओं को यह भी मालूम होना चाहिए कि अभी भी भारत माता के अनेकों सपूत ''एकता यात्रा'' के माध्यम से अपनी ''जीवन यात्रा'' सम्पन्न करने को भी नहीं हिचकिचाएंगे। इन्हीं दृढ़ विचारों, संकल्पों को हृदयंगम कर हम श्रीनगर के लिए कूच किये। हमारा लक्ष्य था श्रीनगर के लाल चौंक पर देष का ध्वजारोहण कर यह दिखा देना कि ''कन्याकुमारी से काष्मीर तक भारत एक है।''

दूसरे दिन प्रातः 8:00 बजे अगले पड़ाव के लिए प्रस्थान किये, चोपन मिर्जापुर इलाहाबाद होते हुए रात 11:00 बजे कानपुर पहुंचे और रात्रि विश्राम किये। तीसरे दिन प्रातः 8:30 बजे उद्योग नगरी कानपुर को अलविदा करते हुए आगे बढ़े एटा, अलीगढ़, बुलन्दषहर हापुड़ होते हुए रात 1:00 बजे मेरठ पहुंचे रात यहीं रूक गये। मेरठ से तरोताजा होकर प्रातः 9:00 बजे प्रस्थान किये मुजफ्फरनगर, देवबंध, सहारनपुर, यमुना नगर (हरियाणा) अम्बाला, षाम को पहुंचे। यहां हमें बताया गया कि कुछ घंटो पहले ही एकता यात्रियों की बस पर आतंकवादियों ने फगवाड़ा के पास मेहता गांव में हमला किया था और चार एकता यात्रियों को मारकर चालिस को घायल कर दिया है, फिर भी हमारा मनोबल ऊंचा था और हम लुधियाना, जालन्धर फगवाड़ा होते रात 11:30 बजे

पठानकोट पहुंचे। कुछ घंटे विश्राम करने के बाद भोर 4:00 बजे यहां से चले और जम्मू 25.01.1992 को सुबह 6:00 बजे पहुंच गए। जम्मू आकर पता चला कि एकता यात्रियों को जम्मू में ही रूकना पड़ेगा तथा श्रीनगर जाने वालों की लिस्ट 24.01.1992 के रात को बन गया यह सुन मुझे बहुंत पीड़ा हुई क्योंकि हम समय पर जम्मू पहुंच चुके थे। और श्रीनगर को ही अपना लक्ष्य लेकर चले थे। अपने मन की पीड़ा को दबाते हुए जम्मू में रूकना पड़ा क्योंकि पार्टी, हाईकमान का यही संदेष था।

जम्मू में रूककर अगले दिन 26 जनवरी के उस क्षण का इंतजार था जब हमारे नेता माननीय ड़ा. मुरलीमनोहर जोषी जी उन उग्रवादियों की चुनौती स्वीकारते हुए लाल चौंक पहुंचे।

वह क्षण भी आ गया, माननीय जोषी जी ने ध्वजारोहण किया ऐसा लगा मानों उन्होंने नापाक इरादा रखने वाले आतंकवादियों के सीने में झंड़ा गाड़ा हो।

तत्पष्चात जम्मू आने पर मा. जोषी एवं उनके साथ आये एकता यात्रियों का गर्मजोषी से परेड़ ग्राऊंड़ जम्मू में स्वागत हुआ, नेताओं के उद्‌बोधन के बाद एकता यात्रा सम्पन्न हुई।

हम लोगों ने वापसी में सोंचा क्यों न तराई वाले क्षेत्रों के आतंकवादियों के आतंक का नमूना प्रत्यक्ष देखा जाये। उसी क्रम में हम उत्तर प्रदेष के तराई क्षेत्र होते हुए हिमाचल में प्रवेष किये, हमें तो यह इलाका बिल्कुल ही षांत लगा, हिमाचल सीमा पर पहुंचने पर कुछ लोग गनमैन को देखकर आष्चर्यचकित हुए और पूछने लगे यहां बंदूक की क्या आवष्यकता है, हमें भी थोड़ा अटपटा लगा, क्योंकि एकाएक आतंकवादियों के गढ़ से निकलकर बिल्कुल ही षांत निष्छल हिमाचल में हम प्रवेष कर रहे हैं जिसने अपनी षांति प्रयि गरिमा को बना रखा है। हिमाचल सीमा पर वर्शा ने हमारा स्वागत किया। वर्शा और षीतलहर दोनों का संगम, मन की उमंग का अतिक्रमण करने लगा। जसूर पहुंचने पर हिमाचल प्रदेष भाजपा अध्यक्ष श्री महेष्वर सिंह जी मिल गए। वे भी एकता यात्रा के बाद अपने घर कुलू जा रहे थे। उन्होने मुझे कुलु आमंत्रित किया, चूंकि वे मेरे साथ–नवीं लोकसभा के सांसद भी रह चुके थे। और अच्छे मित्रों में हैं इसलिए उनका आमत्रंण मैंने सहर्श, स्वीकार कर लिया और हम लोग कुलु के लिए रवाना हुए। नूरपूर, कोटला, षाहपुर, रैत, गागल, कांगड़ा, खोली, कामलोटी, नगरोता, बगवां, पालमपुर, मण्डी, पन्डोह, डैम होते हुए कुलु रात्रि 9:00 बजे पहुंचे।

दिन भर वर्शा होते रही। देवदार के घने जंगल कहीं चाय के बड़े बड़े बगान, तीखे मोड़ की घाटियां, सीढ़ीनुमा खेतों, हिमाच्छादित पर्वतों ने मन मोह लिया था। एक तरफ यहीं 90' के कोण बनाते पर्वत श्रृखंलायें दूसरी ओर हजारों

फीट की गहराई कहीं भू–स्खलन तो कहीं हिमास्खलन से वास्ता पड़ा। हमने सोंचा था आतंकवादियों के आतंक से साक्षात्कार होगा लेकिन प्रकृति के आतंक से हम चकित थे।

कुलु आने पर मनाली जाने की भी इच्छा हुई जो केवल 40 कि.मी. दूर था। और हम लोग दूसरे दिन मनाली चल पड़े, भयंकर हिमपात के कारण मनाली से तुरन्त वापस कुलु के लिए प्रस्थान किये–15 अंष सेल्सियस में हम चले जा रहे थे। सड़क में बर्फ का डेढ़ से दो फुट का परत जमा हुआ था केवल टायर के लीक में ही बर्फ नहीं था। अगल बगल के नदी नाले ठंड़ से जम गये थे।

गाड़ी का स्टार्ट बंद होने लगा क्योंकि डीजल जमने लगा था, सभी का चेहरा सुर्ख और लाल हो गया, यह क्षण सबको आजीवन याद रहेगा। किसी तरह इंजन और डिजल पंप से बर्फ हटाकर आगे बड़े, तीन चार बार ऐसा करना पड़ा तब जाकर हम बर्फ, के क्षेत्र में आये और कुलु पहुंच गाड़ी के छत में भी एक फुट बर्फ जम चुका था, कुलु आकर ही हम लोगों ने बर्फ को निकाला।

संचार माध्यमों से हमें पता चला कि इस इलाके से दो दिन तक षहर नहीं निकल सकते क्योंकि वर्शा के कारण भू–स्खलन हो रहा है। अतः हम सब कुलु में ही रूक गये। तीसरे दिन हम लोग घर वापसी के लिए प्रस्थान किये।

हिमाचल की इठलाती बलखाती मोड़ों को हमने ''सायोनारा'' कहा और अलविदा किया। हल्की वर्शा हो रही थी ऐसा लग रहा था मानों हिमाचल हमें अश्रुपूरित नयनों से विदा कर रहा है।

वापसी में रात को अम्बाला में रूके। प्रातः जब हम अम्बाला सर्किट हाऊस से चले तो अलेक्जेंड्रीया रोड स्थित विषाल सेन्ट पॉल चर्च दिखा जो अपने आखरी सांस ले रहा था। विदेषी मिषनरियों को उस पर तनिक भी दया नहीं आ रही थी, यहां तक की अपने पूर्वजों को दफनाए गए कब्रिस्तान को भी उन्होंने बेच दिया है। और उस पैसे को आदिवासी इलाकों में प्रलोभन देकर, सेवा की आड़ में धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। वहां अनेक दुकान बना लिए गए हैं। आखिर क्यों यहां से विदेषी मिषनरियों का पलायन हुआ? और क्यों आदिवासी इलाके की भोली भाली जनता के बीच इनका आगमन हुआ? यह एक विचारणीय

प्रष्न है। कहीं ऐसा तो नहीं इन इलाकों में षांति प्रिय व्यवस्था को तहस नहस कर अलगाववाद की बीजारोपण कर दें।

वापसी के क्रम में गंगा–जमुना सरस्वती के संगम स्थल इलाहाबाद में एक रात रूके फिर अम्बिकापुर होते हुए 03.02.1992 को अपनी ऊर्जा स्थली जष्पुर पहुंच गये।

घर वापसी मुहिम के संस्थापक दिलीप सिंह जूदेव हिन्दू धर्म में पुनः लौट आये युवक के चरण अपने हाथों से धोते हुए।

http://www.newsanalysisindia.com/2015/01/18/as-we-welcomed-ghar-vapsi-of-mahatma-gandhi-from-abroad-we-should-also-welcome-ghar-vapsi-of-converted-hindus/As we welcomed ghar vapsi of Mahatma Gandhi from abroad, we should also welcome ghar vapsi of converted Hindus

हम सब हिन्दुस्तानी

– चन्द्रसेन ''विराट''
खड़वा

ना हिन्दू हैं न मुसलमां हैं ना सिख हैं ना क्रिस्तानी हैं
एक देष है भारत सबका हम सब हिन्दुस्तानी हैं
मंदिर मसजिद हैं, गुरूद्वारे
गिरजे हैं या कि कषवाले हैं
सबका मजहब है मानवता
सब के सब भारत वाले हैं
ना पंजाबी ना बंगाली, ना गुजराती ना मद्रासी
ना आंध्र और न महाराश्ट्र ना आसमी राजस्थानी हैं
एक देष भारत है सबका, हम सब हिन्दुस्तानी हैं,
हम ज्वालामुखी सुलग जायें
दुष्मन के लिए तबाही हैं
भारत के सारे के सारे
पिच्यासी कोटि सिपाही हैं,
हम गौतम हैं हम गांधी हैं हम मचल जायें तो आंधी हैं
हम षांति पुजारी हैं लेकिन रण में रण सेनानी हैं
एक देष भारत है सबका, हम सब हिन्दुस्तानी हैं,
इस मिट्टी से देह बनी है
इससे जीवन पाया है,
आज उसी का कर्ज चुकाने
का पावन दिन आया है,
लो होड़ लगी दीवानों में, आजादी के परवानों में
मत हो उदास ओ भारत मां तेरे बेटे बलिदानी हैं
एक देष भारत है सबका हम सब हिन्दुस्तानी हैं

–0–

बम्बई मरीन ड्राइव स्थित जीमखाना ग्राउंड़ के सामने आयोजित एक अनोखी प्रतियोगिता में 70 टैक्सी चालकों को एक हजार रूपये के प्रथम पुरस्कार उनके स्वयं के बनाये गये नारों के लिये दिये गये।

तेरा मेरा क्या कहते हो
धरती मां तो एक है
जात पात पर क्यों लड़ते हो
ईष्वर सबका एक है।

''ह'' से हिन्दू बनता है
''म'' से मुसलमान
इन दोनों के मिलने से
होता है हिन्दुस्तान

किसी को तोड़ के अपना बनाना
धर्म नहीं हमारा है
सब धर्मो से प्यार करो,
यह भारत देष का नारा

हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई
टैक्सी ड्रायव्हर सबका भाई

खुन की रंगत ये साफ जाहिर है
कि हम सब एक हैं।

हिन्दू करे सलाम
मुस्लिम करे प्रणाम
तब बनेगा, भारत महान्

– ये नारे उन्होंने अपनी टैक्सी पर लिखें थे।

– स्वदेष से साभार

प्राचीन भारतीय साहित्य में राश्ट्रीयता के स्वर....

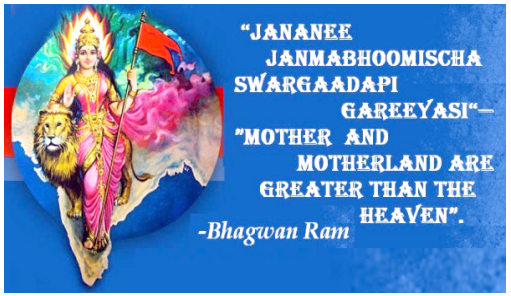

विष्व वांग्मय का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंन्थ ऋग्वेद और अथर्ववेद से दोनों अपने ''पृथ्वी सूक्त'' तथा ''संगठन सूक्त'' के माध्यम से हमें षिक्षा देते हैं कि देष सबसे बड़ा है, इससे बड़ा और कुछ नहीं। पृथ्वी हमारी माँ है और हम हैं उसके पुत्र। ऋग्वेद के पृथ्वीसूक्त का है यह भाव। अथर्ववेद का संगठन सूक्त कहता है कि भाई साथ चलों, समान वैचारिक भूमि पर समान बोलों, अर्थात वचनों में समानता लाओं। हम अपने पूर्वजों की तरह एक होकर रहें। भगवान श्रीराम जी जब महायुद्ध के पष्चात् परमवीर लक्ष्मण जी को विभिशण जी का राजतिलक करने के लिए लंका जाने की आज्ञा देते हैं, तो अनुज के यह कहने पर कि लंका जैसी परम वैभवमयी नगरी में है पूज्य अग्रज आप पधारें। तो श्रीराम लक्ष्मण जी मानों समझाते हुए कह उठते हैं– अनुज तुमने कहा तो ठीक कि लंका जैसी सम्पन्न तथा विजित नगरी में मैं जाऊं परन्तु मेरी दृश्टि में ऐसा नहीं–भले ही लंका सोने की है, पर मुझे अच्छी नहीं लगती। मैं नहीं जानता कि क्यों अच्छी नहीं लगती मुझे तो जननी और जन्मभूमि ये दो ही श्रेश्ठ लगती हैं। ''जननी जनमभूमिष्च स्वर्गादपि गरीयसी।''

प्राचीन भारत के प्रायः सभी कविगण भास, कालीदास, भवभूति, भरावि आदि सभी पक्के राश्ट्रभक्त थे। भास कवि के ''प्रतिभा नाटकम'' को राम का चरित्र प्रस्तुत करने के लिए ष्याम बेनेगन ने दूरदर्षन धारावाहिक ''भारत की खोज'' का आधार बनाया। उन्हीं की अन्य दो कृति ''प्रतियोगन्धराणम्'' तथा ''स्वप्नवासवदन्तृ'' जो दोनों''वत्सराज उद्देयन''के इतिहास पर आधारित है,में राश्ट्रभक्ति कूट कूट कर भरी हुई है।

''स्वप्नवासवदत्तम''नाटक के अन्त में कवि कह रहा है–

''इमाा सागर पर्यन्ता हिमवदिन्ध्यकुण्ड लाभ,
महिमेकातपत्रांका राजसिंहः प्रषास्तु नः ''

कि ये जो समुद्र तक फैली हुई अपने कुण्ड़ल हिमालय और विन्ध्याचल से घिरी हुई है। ऐसी हमारी मातृभूमि पर हमारे ''राजसिंह'' एकछत्र राज्य करें। ऐसा लगता है कि उस समय भी झारखंड़, खालिस्तान,काष्मीर,पूर्वाचल, पृथक छत्तीसगढ़ पृथक बुन्देलखंड़, आदि अलगाववादी आंदोलन चल रह होंगे, इसलिए कवि द्वारा अपने आश्रयदाता को यह कहना पड़ा कि ''एकछत्र'' षासक झण्ड़ा,एक मुद्र, एक संचार व्यवस्था करो। उस समय के

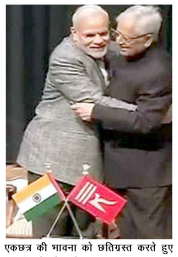
एकछत्र की भावना को छतिग्रस्त करते हुए काश्मीर में दो झंडे ?

प्रधान मंत्री योगन्धरायण अपने महारानी उदयन के खोये हुये राज्य की पुनः प्राप्ति की प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए यदि पड़ोसी मगधराजदर्षक अपनी सैन्य सहायता दे दे तो सफलता सुनिष्चित है, किन्तु यह कोई सासान काम नहीं है। प्रधानमंत्री योगन्धरायण की तत्पर बुद्धि में आता है कि यदि राजा दर्षक की बहन पद्मावती से उदयन का विवाह कराया जाये तो दर्षक सैनिक सहायता हमें दे सकता है। वासवदत्ता से अनन्य प्रेम करने वाला उदय ऐसी पत्नि के रहते दूसरा विवाह करे यह संभव नहीं। अतएव कूटनीतिक उपाय के तहत यह बात फैलायी जाती है कि वासदत्ता मर गयी। तब दर्षक की भगिनी पद्मावती से राजा का उपयोग इस राश्ट्रपक्ष में योगन्धरायण करता है। विवाह कर दिया जाता है। तथा मन्तव्य पूर्ण होने पर वासवदत्ता को भी अज्ञातवास से प्रकट कर महारानी ''वरिश्ठ'' घोशित कर दिया जाता है।

राश्ट्र कवि कालिदास का तो कहना ही क्या है। उनकी महान कालजायी कृति ''कुमार संभावम्'' तो हमारे प्रहरी नगाधिराज हिमालय की वंदना से ही प्रारंभ होती है, इस ष्लोक का उल्लेख दूरदर्षन पर जब श्रीमती इंदिरा जी की हत्या का वृत बताया जाता था तो प्रायः किया जाता था –

अस्दयुतरस्या दिषि देवतात्मा,
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापिरोतोय निधीक्माहय,
स्थितः पृथिव्या इव मानदण्ड़ः।।

पूर्व से लेकर पष्चिम तक माना पृथ्वी को नापने वाला वह एक मीटर है, मानदण्ड़ है। ऐसा हिमालय एक जड़ पर्वत नहीं है, वह एक ''देवतात्मा'' है। ''रघुवंष'' में इस वंष के राजाओं के चरित्र का जैसा षिक्षाप्रद तथा भारतीय संस्कार के अनुकूल वर्णन उन्होंने किया है वैसा अन्यत्र विरल है।

कवि कहते आये हैं कि ''भारत माँ के चरण पखार रहे हैं समुद्र'' वे भी कहते हैं –

''आसमुद्र क्षितिषानाम्'' आनाक रथ वर्त्यनाम्''

समुद्र तक फैली पृथ्वी के जो मालिक हैं तथा देवासुर संग्राम के समय जिनके रथों की सीमायें स्वर्ग तक छूती है वे रघुवंषी राजा ही सच्चे प्रजापिता थे, राश्ट्रपिता थे। उनका ''मेघदूत'' भारतीय नदियों, पर्वतों, झरनों, वनप्रान्तों, मेदिरों, कृशकों, जन जातियों के अखण्ड़ भारत का जो चित्र प्रस्तुत करता है वह दुलर्भ है। ''अभिज्ञानुषाकुन्तलम्'' के पात्र सर्वदर्मन षेर षिषि के दांत गिनने वाले ''भारत के कारण तो इस देष का नाम ही भारत पड़ गया। इससे और बड़ी भारत भक्ति क्या होगी?

महाकवि भारवि के ग्रंथ ''किरांतार्जुनीय'' का संदेष है कि– ''सदानुकूलेशु हि कुर्वते रति नृपेशु आात्येशु व सम्पदः'' अर्थात राजा, राश्ट्रपति तथा मंत्री संसद इनमें परस्पर तालमेल ये राश्ट्रकल्याण के लिए अनिवार्य तत्व है। वर्तमान में ये

जो खींचतान, नये सीकरण, उठापटक, इस्तीफे का नाटकउपर्युक्त तालमेल के अभाव में ही देख रहे हैं। षायद भारवि की उपर्युक्त से प्रभावित होकर गोस्वाामी जी ने –
''जहां सुमति तहं संपदित नाना'' यह सुभाशित रचा होगा। पूरे काव्य में राश्ट्रीयता तथा अस्मिता को खोने वाले युधिश्ठर को फटकारती हुई पर तेजस्विनी कृश्ण द्रोपदी हमेषा एक ही बात कहती– वे मूर्ख पराज्य को प्राप्त होते हैं, जो षठों के साथ षठता का व्यवहार नहीं करते। जो लोग पाष्चात्य परस्त तथा अध ाानुकरणवादी हैं उनमें यह भ्रम है कि भारत में ''राश्ट्र'' की अवधारणा थी ही नहीं, जबकि हमारे यहां – ''धृतराश्ट्र नामक एक महापात्र मौजूद है। विष्व के अद्वितीय कूटनीतिज्ञ आचार्य विश्णुगुप्त कौटिल्य ''चाणक्य'' को कहते है कि– ''व्यक्ति परिवार के लिये स्वयं का, ग्राम के लिए परिवार का, जनपद के लिए गांव का और राश्ट्र के लिए सर्वस्व
का त्याग करे।''

इस संसार में सूर्य सबसे तेजस्वी है, परन्तु उससे भी तेजस्वी दो लोग हैं– एक वे जो ब्रह्मा की साक्षरकर्ता महायोगी, दूसरा वे जो युद्ध में लड़ते लड़ते वीरगति को प्राप्त हो जायें–

द्वावेतों पुरूशों लोके सूर्यमण्डल मेदिनौ।
परिव्राइयौगयुक्तः ष्चयष्च रणेंगभिमुखेहतः।।

इस प्रकार जो भारतीय भारत का साहित्य है, राश्ट्रभक्ति की, उसे परवैभव पर ले जाने की भावना से परिपूर्ण है। वैसे ''भारत'' यह षब्द ''भा+रत'' इस तरह बनता है। ''भा'' अर्थात चमक यह अर्थ देने वाले इसी षब्द से प्रतिभा, आभा, निभा, भास्कर, प्रभात, आदि षब्दराषि बनते हैं।''भा'' में ''रत'' अर्थात् ''लीन'' लगा हुआ है। प्रतिभा में लीन संलग्न रहा है यह देष और यह निर्विवाद है कि इसके प्राचीन सनातन तथा षाषवत साहित्य का ही इसमें अतिविषिश्ट योगदान है। महाभारतकार, अश्टादष, कृश्ण द्वैपायन
महामुनि, वेदव्यास का कथन है– ''मृत राश्ट्रम्राजकम'' राजा से रहित राश्ट्र मृत के समान है। राश्ट्रकवि कालिदास का दुश्यंत ''स्वसुखनिरभिलाश खियसेलोकहितोः''
अपने सुख की अभिलाशा न करके लोक के लिये जनता के लिये चिन्तित रहते हैं।

अथर्ववेद में राश्ट्रभक्ति बड़ी वीररसोचीत रूप में सविषेश वर्णित है। फूलों में जैसे सुगन्ध, चन्दन में षीतलता, षक्कर में जैसे मिठास हो तो उनकी

प्रमाणिकता है, उसी प्रकार संस्कृत तथा राश्ट्रीयता ये मानवता के दो प्रमाण पत्र हैं।

ऋग्वेद के पुरूशसुक्त के प्रथम मंत्र के अनुसार ज्ञानीजन राश्ट्रपुरूश के मुख व मस्तिश्क हैं, षुरवीर विषाला तथा पुश्ट बाहुये हैं'', व्यापारी व कृशक जिनकी आधार रूपा जंघाये हैं तथा गति व प्रगति के प्रतिक पैर हैं कर्मचारीगण।

आईये अंत में हम कविकुल गुरू तथा राश्ट्रकवि कालीदास जी के साथ राश्ट्र मंगल कामना करें –

प्रवर्तता प्रकृति हिताय पार्थिवः। सरस्वती श्रुत महता महीयताम्।
ममापि च क्षययतु नीललहितः। पुनर्भवं परिगत षक्तिरात्मभूः।।

अर्थात् राजा जनता के हित में लग जाये, विद्वानों की बुद्धि नीर क्षीर का विवेक करे तथा षिवजी मेरा जन्म मरण मिटा कर मोक्ष दे।

प्रो. महेष षर्मा,
संस्कृत विभागाध्यक्ष, षासकीय कला एवं विज्ञान महाविद्यालय
संयोजक–विष्व संस्कृत प्रतिश्ठानम्, दुर्ग जिला

----------0----------

'भारत को यद्यपि 30 करोड़ देवी देवताओं का देष कहा जाता है। तथापि जापान में देवी देवताओं की संख्या इससे कहीं अधिक है। जापान के वयोवृद्ध संस्कृत कवद्वान निकि थिमुराका के अनुसार जापान के सभी देवी देवता भारत की ही देन है। जापान की कोई स्थानीय देवी देवता नहीं है। ब्रहम्, इन्द्र, गनेष, सरस्वती, रूद्र, पृथ्वी, सूर्य, सोम, कार्तिकेय, सहस्त्रबाहू, कुबेर तथा यम आदि देवी देवता जिनको भारत में लगभग विस्मृत ही कर दिया गया है, जापान में आज तक अत्यंत पूज्य माने जाते हैं। – चमनलाल

'भारतीय सेना में भर्ती होने वाले सभी अपनी देष भक्ति की षपथ लेते समय एक हाथ गुरूग्रंथ साहिब पर रखते हैं।''क्या वे कम भारतीय हो जाते हैं।
–चंदन मित्र (संडे आब्ज़र्वर)

''एक व्यक्ति या मूर्ति पूजा से मेरी पूजा संपन्न नहीं होती। संसार में जितने धर्म हैं, सप्रदाय हैं, आचार्य हैं, सब में मेरा ही अंष है। सबके गुरूओं में गुरूतत्व के रूप में मैं ही बैठा हूं इसलिए अपने अपने गुरू की पूजा ही मेरी सच्ची पूजा है।'' –व्यास देव (ब्रह्मांण्ड़पुराण)

हम चाहे किसी भी धर्म के अनुयायी हों फिर भी हम सभी समान रूप से भारत माता की संतान हैं और हम सबके समान अधिकार, समान सुविधायें, तथा समान कर्तव्य हैं। हमारी प्रिय मातृभूमि को जो पुरातन एवं सनातन होने के साथ साथ नित नवीन है, हम अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।
– पं. जवाहरलाल नंहरू (15 अगस्त 1947)

हिन्दुत्व एक ऐसा माध्यम है जिसको अपनाकर मैं अपने को एक नेक इंसान अनुभव करता हूं।''

हरे रामा हरे कृश्णा का मंत्र जपने वाले अमेरिकी कृश्ण जार्ज हेरिसन

मंदिरों के भजन

मस्जिदों की अजां
रूह की रोषनीं के हैं से समां
नाम पर इनके नादान दुनियां मगर
खून बहाती रही घर जलाती रही।

—एकता ष्बनम

—0—

एक है भारत एक ही रहेगा,
अखण्ड़ है ये देष अखण्ड़ ही रहेगा,
चाहे धधके पंजाब, चाहे जले आसाम,
न होगा भारत से अलग इनका नाम,
कितनी ही चले गोलियां काष्मीर में,
न होगा इसका अस्तित्व किसी और में,
भारत का यह स्वर्ग भारत में ही महकेगा,
अखण्ड़ है यह देष अखण्ड़ ही रहेगा।

श्रीमती वन्दना सक्सेना, भोपाल
एम.एस.सी., एम.ए., एल.एल.बी.

—0—

एकता यात्रा में सम्मिलित सभी राश्ट्रभक्त बधाई के पात्र हैं। आप ''एकता माला'' पुस्तक के माध्यम से एकता यात्रा के उद्देष्यों को आम नागरिकों के बीच पींुचाने में सफल होगें, ऐसा विष्वास है।

गौरीषेकर अग्रवाल
उपाध्यक्ष, रायपुर विकास प्राधिकरण
दिनांक—01.02.1992

संविधान की धारा 370 देषद्रोहपूर्ण है.....

— कुन्तल कुमार सिंह चौहान, एडव्होकेट, रायपुर

आज समस्त विष्व की आंखें जम्मू काष्मीर राज्य की ओर लगी हुयी हैं। हमारी भूलों के कारण भारत माता का यह कीरीट षत्रुओं द्वारा पदाक्रान्त हैं। यदि हम इतिहास पर दृश्टिपात करें तो सृश्टि के आदिकाल से काष्मीर भारत का अंग रहा है। हमारे सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ ऋृग्वेद से हमको ज्ञात होता है कि हमारा प्रारम्भिक निवास स्थान यही प्रदेष था। हम सप्त सिन्धु के निवासी थे। उस समय की भौगोलिक स्थिति के अनुसार सप्तसिन्धु के उत्तर में भी समुद्र था और दक्षिण में भी। आज का उत्तर प्रदेष भी समुद्र था। सप्तसिन्धु का क्षेत्र पंचवद (पंजाब) और वर्तमान दक्षिण पष्चिम काष्मीर को मिलाकर बना था धीरे धीरे समुद्र हटता गया और भारत बढ़ता गया। काष्मीर का महत्व हमारे लिये न केवल भौगोलिक दृश्टि से किन्तु ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृश्टि से सर्वाधिक है। यह हमारी संस्कृति की उद्गम स्थली है। यहीं हमारे पूर्वज ऋशि मुनियों ने वेदों की रचना की। यहीं आदि षंकराचार्य ने षारदापीठ की रचना की। यहीं विष्व की सबसे ऊंची पर्वत की चोटी ''हरा पर्वत'' है जो अब दुर्भाग्य से तरण्वे सुलेमान के नाम से जाना जाता है। काष्मीर के विशय में एक अन्य कथा प्रचलित है कि सारा काष्मीर एक झील था जिसे सतीसर कहते थे। इसमें माँ पार्वती विहार करती थी।

इस प्रदेष पर षुरू से ही हिन्दुओं का राज्य था। इस भू—भाग पर बड़े बड़े मंदिर राजाओं ने बनवाये थे। जिनके अंवषेश आज भी पाये जाते हैं। यहां के एक एक कंकर में षंकर के दर्षन होते है।

कालचक्र ने कष्यप ऋशि, पाणिनी कल्हण पण्ड़ित,कालीदास, अषोक और ललितादित्य के काष्मीर में बड़े बड़े परिवर्तन किये। मुसलमानों का आक्रमण हुआ। उन्होंने अपने इस्लामी स्वभाव के अनुसार धार्मिक उन्माद में अनेक मंदिरों को नश्ट भ्रश्ट किया, बड़ी संख्या में लोगों को मुसलमान बनाया। आज हमारी पारस्परिक फूट और सामाजिक अहमन्यता के कारण इस पावन तीर्थ स्थली में हिन्दू अल्पमत में हो गया है। काष्मीर ने मुसलमानों का षासन देखा अवष्य पर इस पावन भू भाग को पंजाब केषरी महाराजारणजीत सिंह ने पुनः परकीय दासता से मुक्त करा लिया।

वर्तमान जम्मू कष्मीर राज्य का निर्माण गत षताब्दि के पूर्व महाराजा गुलाब सिंह ने किया था। लगभग एक सौ वर्शो तक यह राज्य उनके वंषजों की छत्रछाया में फलता फूलता रहा।

इंड़िया इंन्डिमेन्ट्स एक्ट के अन्तर्गत जब वर्तमान भारत स्वतंत्र घोशित हुआ तक स्वाभाविक रूप देषी रियासतों का भारत में विलय हो गया था महाराजा हरिसिंह ने भी विलय पत्र पर हस्ताक्षर कर उसे सभी दृश्टियों से भारत का अभिन्न अंग बना दिया था।

किन्तु दुर्भाग्यवष हमारी भारत सरकार द्वारा अपनायी गयी राश्ट्रीय और अन्तर्राश्ट्रीय गलत नीतियों के कारण विघटनकारी तत्व खुलेआम हाथों में 47 लिये पाकिस्तान के पक्ष में प्रचार करते घूमते हैं। आज भारत में चलने वाले किसी भी केन्द्रीय कानून तथा भारतीय दण्ड़ संहिता (ताजेराते हिन्द) दंड प्रक्रिया संहिता (जाब्ता फौज़दारी) साक्ष्य अधिनियम (षहदत कानून) व्यवहार प्रक्रिया संहिता (सी.पी.सी.), हिन्दू कोड बिल, मुस्लिम विमेन प्रोटेक्षन एक्ट आदि को यदि हम देखें तो हर कानून के प्रस्तावना में यह उल्लेखित मिलता है कि जम्मू काष्मीर को छोड़कर षेश भारत में यह कानून लागू होगा। काष्मीर की जनता को भारत के कानूनों के अन्तर्गत न्याय नहीं मिल सकता। उनके लिए पृथक पृथक कानून हैं। यह सब क्षेत्रीय स्वायत्ता के आधार पर न होकर पृथकता के आधार पर ही है।

भारत में एक नागरिकता है किन्तु काष्मीर के लिए हमारे राजनेताओं ने अलग नागरिकता स्वीकार की है। काष्मीर का प्रत्येक नागरिक भारत का नागरिक है पर भारत के प्रत्येक नागरिक को काष्मीर में नागरिक अधिकार प्राप्त नहीं है। भारत के अन्य भाग के निवासी वहां अचल संपत्ति, जमीन मकान, खेत, कल कारखाने नहीं खरीद सकते, चुनाव में नहीं खड़े हो सकते, नौकरी आदि सुविधायें प्राप्त नहीं कर सकते जो वहां के स्थायी निवासी को प्राप्त है। वे वहां बस भी नही सकते। सुप्रीम कोर्ट के अधिकार भी वहां सीमित हैं।

उपरोक्त जितने भी पृथकता परक प्रावधान वहां है उनको भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 से षक्ति मिलती है। पाकिस्तान इसका भरपूर लाभ उठा रहा है। आज जो कल्पनातीत परिस्थितियां वहां है उसी के कारण लोगों को अपनी घड़ियां पाकिस्तान की घड़ियों से मिलाये रखनी पड़ती है। पाकिस्तानी झंड़ों के साथ पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगवाये जाते हैं। महिलाओं पर अत्याचार, अपहरण, हत्यायें, लूट, डाकेजनी, आदि साधारण बातें हो गयी है। हजारों की संख्या में हिन्दू नागरिक षरणार्थी बनाकर काष्मीर से खदेड़े जा रहे हैं। यह सब देषद्रोही हरकतें धारा 370 के कारण है।

जनतंत्र में जनता की षक्ति सर्वोपरि है। यदि हमें सचमुच काष्मीर पूज्य है, अमरनाथ के प्रति श्रद्ध है, सतीसर के प्रति भक्ति है, अपने ऋशि मुनियों, पूर्वजों वीर हुतात्माओं के प्रति निश्ठा तथा आत्मीयता है, तो हमारे मन में वह तड़फन होनी चाहिए जिससे हमारे बीच से षहीदों की टोलियां हाथों में

राइफल्स उठाये, माथों पर रोलियां और कंधों पर गोलियां लटकाये आगे आवें और उग्रवादियों की गोलियों का जवाब गोलियों से दें। षौर्य और बलिदान की परंपरा ही कष्मीर की रक्षा कर सकेगी। राश्ट्रीय चैतन्य और स्वाभिमान से युक्त स्वधर्म से ओतप्रोत और हिन्दू संस्कृति से प्रेरित जनषक्ति ही पुनः एक बार शडयंत्रकारी षत्रुओं को कुचल कर भारत मां के किरीट काष्मीर की रक्षा कर सकेगी।

——————————————————0——————————————————

''भगिनी निवेदिता से रविन्द्रनाथ टैगौर अपनी पुत्री को अंग्रेजी भाशा साहित्य, आचार विचार को दिये जाने का आग्रह किया तो चेहरे से विदेषी, वेषभूशा से इसाई, भाशा से अंग्रेज परन्तु विचारों से हिन्दू निवेदिता ने उत्तर दिया – ''यह हिन्दू कन्याा है। इसे हिन्दू जीवन के संस्कार मिलने चाहिए। इसे अंग्रेजी मेम बनाने का विचार एक क्षण के लिए भी मन में मत लाइऐ''

0

भारत के सेक्युलर राज्य की दृश्टि से हिन्दू और मुसलमान बराबर नहीं हैं। हिन्दू एक ही विवाह कर सकता है पर मुसलमन के विवाह की संख्या पर रोक नहीं है। किन्तु अगर हिन्दू दूसरा विवाह करना चाहे तो उसे मुसलमान हो जाना पड़ेगा.....। ड़ा. राधा कृश्णन को यह श्रेय अवष्य दिया जायेगा कि उन्होंने अपने दो एक भाशणों में यह खुलासा कर दिया कि सेक्युलरिज़म का अर्थ धर्म निपेक्षता नहीं बल्कि असाम्प्रदायिकता है।

–ड़. राधारी सिंह दिनकर.

—0—

एकता की लौ

जी.एस. नामपल्लीवार
रायपुर

बुझ गये दीपक
कहीं दो तो क्या हुआ?
एकता की लौ,
नहीं बुझ पायेगी।

राख में दुबके हुए
षोले हैं जो
एकता की हवा
उन्हें धधकाएगी।

अलगाव का विशधर
है खड़ा फूफकारता
भय उसी का व्याप्त है
वातावरण दूशित हुआ।

हाथ मिलते खिंच गए
बढ़ते कदम भी रूक गये
डस चुका इंसान कितने
इंसानियत को डस गया।

पृथ्वीराज चौहान की अस्थियां: भारत का वज्र–सम्मान वापस लायें

मुस्लिम महिला फाउण्डेषन की ओर से मोदी को भेजे गए खत में कहा गया है, 'बाबर विदेषी और मंगोल आक्रमणकारी था। यह चंगेज खां और हलाकू जैसे मंगोलों का वंषज था जिन मंगोलों ने दुनिया के कई षहर उजाड़ दिए, लाखों लोगों का कत्ल किया। बाबर के पूर्वज हलाकू ने बगदाद पर आक्रमण कर 40 हजार मुसलमानों के साथ साथ पैगम्बर द्वारा नियुक्त इस्लाम के सर्वोच्च धर्मगुरू खलीफा की भी हत्या कर दी थी। इसी हलाकू की वजह से आज दुनिया में इस्लाम का कोई खलीफा नहीं है।'

रामलला को तम्बू में देखकर अयोध्या से भी अधिक दुखी काषी की मुस्लिम महिलायें।

पत्रकमें आगे लिखा है, 'कोई भी मुसलमान मंगोलों को कभी माफ नहीं कर सकता। इन्हीं मंगोलों के वंषज बाबर ने 1528 में राम मंदिर तोड़कर हिंदू और मुसलमानों के बीच नफरत का बीज बोया। मुस्लिम महिला फाउण्डेषन की सदर ने कहा कि मुसलमानों की इज्जत तभी बढ़ेगी जब वे श्री राम के पक्ष में रहेंगे। जो लोग मंदिर निर्माण के विरोधी हैं वे मुसलमानों को हमेषा गरीब और पिछड़ा बनाए रखना चाहते हैं।

पारिवारिक इतिहास के अनुसार हलाकू खान मंगोल साम्राज्य के संस्थापक चंगेज खां का पोता और उसके चौथे पुत्र तोलुइ खान का पुत्र था। हलाकू की माता सोरगोगतानी बेकी (तोलुइ खान की पत्नी) ने उसे और उसके भाइयों को बहुत निपुणता से पाला और परवरिष की। उसने परिस्थितियों पर ऐसा नियंत्रण रखा कि हलाकू बचपन में ही एक बडा लड़ाकू और खतरनाक योद्धा बन गया। आगे चलकर वह अपने बलबूते पर मंगोलों का चीन और रूस सहित किर्गीस्तान, उजबेकिस्तान और ईरान अफगानिस्तान तक एक बड़ा साम्राज्य स्थापित कर लिया। हलाकू खां

की पत्नी दोकुज खातून एक नेस्टोरियाई ईसाई थी और हलाकू के इलखानी साम्राज्य में बौद्ध और ईसाई धर्म को बढ़ावा दिया जाता था। दोकुज खातून ने बहुत कोषिष की कि हलाकू भी ईसाई बन जाए लेकिन वह मरते दम तक बौद्ध धर्म का अनुयायी ही रहा।

Hulagu was friendly to Christianity. Hulagu's favorite wife, Doquz Khatun, was also a Christian, as was his closest friend and general, Kitbuqa. It is recorded however that he converted to Buddhist as he neared death, against the will of Dokuz khatun.

Painting of Hulagu Khan by Rashid-al-Din Hamadani early 14th oentury.

Reign	- 1256-1262
Consort	- Doquz Khatun
House	- Borjigin
Father	- Tolui
Mother	- Sorghaghtani Beki
Born	- 15 October 1218
Died (aged 46)	- 8 February 1265
Burial	- Shahi Island, Lake Urmia
Religion	- Buddhism

Hulagu and Queen Doquz Qatun depicted as the new "Constantine and Helen", in aSyriac Bible.

बगदाद का विनाष नवम्बर 1257 ईस्वी हुआ, जब ईराक में हलाकू की 10 लाख मंगोल फौज ने बगदाद की तरफ कूच किया, जहां से खलीफा अपना इस्लामी राज चलाते थे। वहां पहुंचकर उसने अपनी सेना को पूर्वी और पष्चिमी हिस्सों में बांटा जो षहर से गुजरने वाली दजला नदी (टाइग्रिस नदी) के दोनों किनारों पर आक्रमण कर सके। उसने खलीफाओं से आत्मसमर्पण करने को कहा,

लेकिन खलीफाओं ने मना कर दिया। खलीफाओं की सेना ने हलाकू के कुछ योद्धाओंको खदेड़ दिया, लेकिन अगली मुठभेड़ में खलीफा फौज हार गई। मंगोलों ने खलीफा की सेना के पीछे के नदी के बांध को तोड़ दिए जिससे से बहुत से खलीफाई सैनिक डूब गए और बाकियों को मंगोलों ने आसानी से मार डाला।

Hulagu and Queen Doquz Qatun depicted as the new "Constantine and Helen", in a Syriac Bible.

अरब के खलीफा पर क्या बीती, इस पर दो अलग–अलग वर्णन मिलते हैं। यूरोप से बाद में आने वाले यात्री मार्को पोलो के अनुसार उसे भूखा–प्यासा मारा गया। लेकिन उससे अधिक विष्वसनीय बात यह है कि मंगोल और मुस्लिम स्रोतों के अनुसार उसे एक कालीन में लपेट दिया गया और उसके ऊपर से तब तक घोड़े दौड़ाए गए जब तक उसने दम नहीं तोड़ दिया। अरब देषों पर कब्जा जमाने के बाद रास्ते तय करने की कठिनाई के कारण और उत्तर भारत के मौसम की मार के चलते वह रास्ते में बीमारी का षिकार हो गया और स्वास्थ्य लाभ के लिए वापस मंगोलिया लौट गया। लेकिन यहां पहुंचकर रहस्यमय ढ़ंग से 1265 में उसकी मौत हो गई। अब उसके बाद उसके कबीले यूरोप के कई प्रान्तों में फैल गए लेकिन तिब्बत, कोरिया और चीन उनके पसंदीदा स्थल रहे।

क्या राजस्थान की आन,बान और षान के प्रतीक पृथ्वीराज चौहान की अस्थियां भारत लौटेंगी ?

अफगानिस्तान के गजनी षहर के बाहरी इलाके में आज भी पृथ्वीराज की समाधि ा मौजूद है। पृथ्वीराज की समाधि का अपमान कर रहे हैं अफगानी। 'आर्म्स एंड आर्मरः ट्रेडिषनल वेपंस ऑफ इंडिया' नाम की किताब लिखने वाले ई जयवंत पॉल के मुताबिक, अफगानिस्तान के गजनी षहर के बाहरी इलाके में मौजूद पृथ्वीराज की समाधि आज बहुत ही बुरी हालत में है। गोरी की मौत के 900 साल बाद भी अफगानिस्तानी और पाकिस्तानी उसे अपना 'हीरो' मानते हैं। ये लोग गोरी की मौत का बदला लेने के लिए अपना गुस्सा पृथ्वीराज की समाधि पर निकालते हैं। पॉल की किताब के मुताबिक पृथ्वीराज की मजार के ऊपर एक लंबी मोटी रस्सी लटकी हुई है। कंधे की ऊंचाई पर रस्सी में गांठ लगी हुई है। स्थानीय लोग रस्सी की गांठ को हाथ में पकड़कर मजार के बीचोबीच अपने पैर से ठोकर मारते हैं।

भारत का वज्र–सम्मान वापस लाओ?

पृथ्वीराज चौहान की अस्थियों की समाधी के बाजू में बाबर की कब्र है। राहुल गांधी ने तत्कालीन प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह और मनमोहन सिंह, नटवर सिंह और राहुल गांधी ने 2006 में अफगानिस्तान की यात्रा की थी।

तीनों नेताओं ने सेक्युलर ब्लैंकेट ओढ़ कर बाबर की कब्र को सलाम कर सम्मान दिया परन्तु बगल में पृथ्वीराज चौहान की छतिग्रस्त समाधी को देखने तक उचित नहीं समझा क्योंकि उन्हें डर था ऐसा करने से उनकी सेक्युलर छवि छतिग्रस्त हो जाएगी। क्या ये नेता महाराश्ट्र के पूर्व मुख्य मंत्री कांग्रेस के नेता पृथ्वीराज चोहान को भूल सकते हैं?

चंद बरदसयी ने चार बॉस चौबीस गज अंगुल अश्ठ प्रमाण, ता ऊपर सुल्तान है, मत चूको रे चौहान दोहे द्वारा पृथ्वीराज को संकेत दिया जिस पर अंधे पृथ्वीराज ने गौरी को षब्दभेदी बाण से मार गिराया तथा इसके पष्चात दुष्मन के हाथ दुर्गति से बचने के लिए दोनों ने एक–दूसरे का वध कर दिया। बाबर एक आक्रमणकारी था। लेकिन वोट बैंक नेताओं और मुगले आजमखानों के लिए विदेषी आक्रांता सेक्युलर और इन्हें रोकने इनसे लोहा लेने वाले इन आक्रान्ताओं के दन्त खट्टे करने तोड़ने वाले हिन्दू राजा कम्युनल हो गए हैं। अन सी इ आर

टी–इग्नू बुक्स में पृथ्वीराज चौहान को कायर कहा गया है? इन बुक्स में सिख गुरूओं और हिन्दू देवी देवताओं की इंसल्ट की गई है। भगत सिंह को देषद्रोही बताया गया है? भाजपा सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय को अब उन्हें सही करना होगा।

बाहर से आये हुए आक्रांताओं के गुणगान करना और यहाँ के राजाओं को हास्यास्पद और विकृत रूप में पेष करना जवाहर लाल नेहरू और हमारी मैकाले आधारित और वामपंथी षिक्षा प्रणाली से हमारा ""ब्रेन वॉष" होने का दुश्परिणाम है। धर्मनिरपेक्ष (?) सरकारों और वामपंथी इतिहासकारों का यह रवैया षर्मनाक तो है ही, देष के नौनिहालों का आत्म–सम्मान गिराने की एक साजिष भी है। जिन योद्धाओं ने विदेषी आक्रांताओं के खिलाफ बहादुरी से युद्ध लड़े और देष के एक बड़े हिस्से में अपना राज्य स्थापित किया उनका सम्मानजनक उल्लेख न करना, उनके बारे में विस्तार से बच्चों को न पढ़ाना, उन पर गर्व न करना एक विकृत समाज के लक्षण हैं, और यह काम कांग्रेस और वामपंथियों ने बखूबी किया है।

मैडम सोनिया गांधी से लेकर केजरीवाल, मुफ़्ती, ओमर अब्दुल्लाही, गुलाम नबी आज़ाद, मुलायम, नितीष, लालू आदि से पूछना चाहिए कि पृथ्वीराज चौहान कौन था? ये जिहादी ईसाइयत सेक्युलर सिर्फ बाबरी ढ़ांचे के छाती ग्रस्त होने और अफज़ल गुरू के लिए आंसू बहाना ही जानते हैं। छल कपट से या बन्दूक की नोंक पर हिन्दूओं का धर्मान्तरित होना उन्हें पसंद है। महात्मा गांधी की अफ्रीका से घर वापसी का हमने सम्मान किया पर धर्मान्तरित हिन्दुओं की घर वापसी का उन्हें विरोध है।

Rahul saluted Babar's tomb; Prithviraj Chauhan's mortal remains is hit by shoe in Afghanistan: Bring back Vajra-honour of India?

दधीचि की हड्डियों को वीरता का सूचक मान कर भारत के सर्वोच्च पुरस्कार "वज्र" के रूप में "परम वीर चक्र" पर एक प्रतीक के रूप में इस्तेमाल हम कर रहे हैं। अफगानिस्तान से भारत के वज्र–सम्मान कौन कब वापस लाएगा?
सिरसा, हरियाणा के एडवोकेट पवन पारीक द्वारा 5 नवम्बर 2014 को प्रस्तुत आरटीआई के उत्तर में सोनिया गांधी द्वारा निर्देषित सरकार के पीएमओ ने मामले की जानकारी नहीं की बात कहीं। लेकिन 19 जनवरी, 2015 को पवन पारीक ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा। महज 10 दिन के भीतर पीएमओ से इस बारे में पत्र आ गया। पत्र में भारत सरकार ने काबुल दूतावास को निर्देष देकर अस्थियों के संबंध में जरूरी निर्देष दिए।

राजस्थान की आन,बान और षान के प्रतीक पृथ्वीराज चौहान की अस्थियां भारत लौटेंगी। अफगानिस्तान से भारत अपना खोया हुआ सम्मान वापस लेकर आएगा। प्रधानमंत्री कार्यलय के निर्देष के बाद अब पृथ्वीराज चौहान की अस्थियां लौटने की आस जगी है। यह आस कब पूरी होगी?
http://www.newsanalysisindia.com/post/prithviraj-chauhan-ki-asthiyan-bharat-kaa-vajra-samman-vapas-layen.aspx

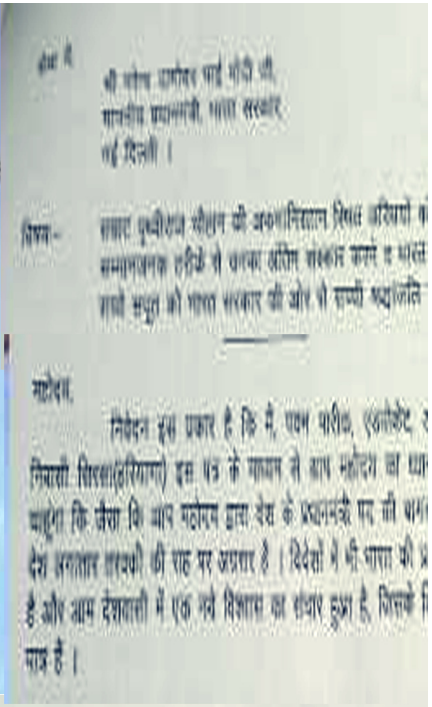

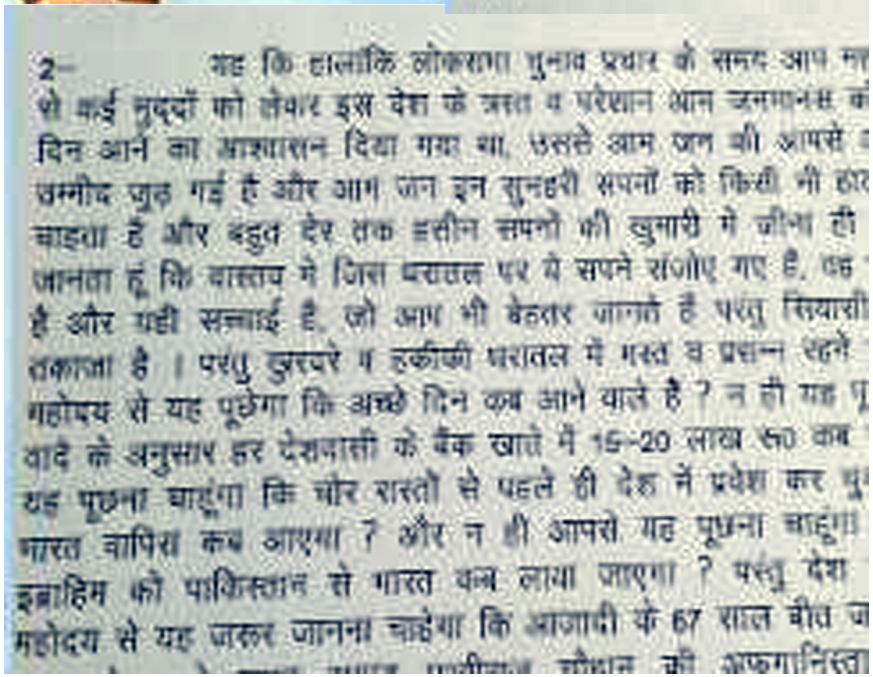

राश्ट्रीय एकता में नारी का महत्व

लक्ष्मण प्रसाद वर्मा

आज भारतीय नारी पराश्रयी नहीं है। आज नारी की जिस रूप में आवष्यकता महसूस की जा रही है, वह उसी रूप में उपस्थित होने के लिए तैयार है।

दिल्ली की श्रीमती षकुन्तला आर्य ने ठीक ही कहा है – ''राम के नाम से पहले सीता का नाम, कृश्ण के पहले राधा का नाम, षंकर के पहले गौरी का नाम लिया जाता है। यह वह देष है जहां सावित्री को उसके पिता ने अपना वर खोजने की स्वतुत्रता दी थी। यही वह देष है जहां गांगी जैसी विद्वान नारियां हुई और विद्योतिमा जैसी नारियों के कारण ही कालीदास जैसा कवि भारत को मिला।

देष के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में पुरूशों के समान ही नारी भी राश्ट्र के उत्थान में योगदान कर रही है। देष रक्षा के लिए सेना में भी अब नारी भरती हो रही हैं। रेलगाड़ी, वायुयान चलाती हैं। पुलिस के ऊंचे पदों पर हैं। दुर्गावाहिनी संगठन में सम्मिलित हो वे राश्ट्र के प्रति समपर्ण की भावना और स्वयं की रक्षार्थ प्रषिक्षण प्राप्त कर रही हैं। लोकसभा, विधान सभा, मंत्रीमण्डल आदि में महिलायें अपना कर्तव्य निभा रही हैं।

परन्तु नारी पर आज अत्याचार भी हो रहे हैं। राश्ट्र के उत्थान और राश्ट्रीय एकता में ये बातें बाधक हैं। आंध्रप्रदेष के नलगोड़ा जिले में गरीब हरिजन महिला को निर्वस्त्र कर घुमाना हमारे माथे पर कलंक है। ''मेरा पति मुझे सांकलों से बांधे रहता है।'' यह षिकायत 2 फरवरी 1992 को रतलाम की उस महिला ने पुलिस से की जो तीन दिन पूर्व हाथ व पैरों में बेड़ियों से जकड़ी होने के बावजूद घर से जैसे तैसे भाग निकली। पुलिस ने तुरन्त लोहार बुलाकर सबसे पहले उसकी बेडित्रयां कटवाई तथा षिकायत लिखी।

गरीबी की वजह से मां बाप द्वारा बच्ची को बेचना और अरब देष के किसी षेख द्वारा खरीद कर ले जाया जाना हैदराबाद जैसे कई स्थानों पर आम बात है। 11 वर्शीय अमीना को एक वृद्ध षेख निकाह करके ले जा रहा था तो उसे गिरफ्तार किया गया और बाद में रिहा हुआ।

भारत को एक धर्म–निरपेक्ष या सेक्युलर राज्य कहा जाता है। संविधान की धारा 25 एवं 26 के अनुसार धर्म में विष्वास रखने धर्म पर आचरण करने और ध र्म का प्रचार करने के लिए सभी भारतीय स्वतुत्र हैं। अतएव भारत में धर्मनिरपेक्ष का संवैधानिक अर्थ यह है कि देष में प्रचलित सभी धर्म समान रूप से स्वतंत्रता, सुरक्षा तथा समादर पाने के अधिकारी हैं। यहां कोई भी धर्म एकाधिकारी होने का दावा प्रस्तुत नहीं कर सकता। इससे यह निश्कर्श निकलता है, कि भारत धर्म निरपेक्ष राज्य नहीं बल्कि वह तो धर्म स्वतंत्र राज्य है।

धर्म निरपेक्ष का आषय धर्म से पृथक या धर्म विरोध मानकर देष के मंदिरो –मस्जिदों को तोड़ना, भजन पूजन या समाज व नमाज को प्रतिबंधित कर धर्म प्रेमियों को प्रताड़ित करना कतई संभव नहीं, न्यायोचित नहीं, व्यवहारिक नहीं। इसलिए धर्म निरपेक्षता का तात्पर्य धर्म तटस्थता मानना सर्वथा उचित है, लौकिक है, व्यवहारिक है। यह कैसी धर्म निरपेक्षता की नीति है, जिसके अन्तर्गत हिन्दू समाज से छुआछुत तथा भेदभाव उन्मूलन हेतू हिन्दू कोड वर्शो पूर्व पास कर दिया गया है, लेकिन मुस्लिम समाज के लिए आज दिनांक तक वैसा कोई कोड लागू नहीं किया गया। राश्ट्र के हित में राश्ट्रीय एकीकरण के लिए यह नितान्त आवष्यक हे कि सम्पूर्ण देष में सभी धर्म, जातियों के लिए एक ही सिविल कोड रहे एक रूपता तथा सामाजिक एकता का यह तकाजा है कि परदे की प्रथा उठा दी जाए और सभी महिलाओं को खुले वातावरण में सांस लेने का सुअवसर प्रदान किया जाय। यदि परिवार कल्याण कार्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करना चाहिए।

जब भारत को धर्मनिरपेक्ष राज्य कहा जाता है तो उसका तात्पर्य यह नहीं है कि अदृष्य षक्ति की वास्तविकता या जीवन के लिए नैतिकता के औचित्य को अस्वीकार किया जाता है। यदि भारतीय सेक्युलर का सिद्धान्त मानव जीवन के लिए धर्म की आवष्यकता तथा वैधता को स्वीकार करता है तो विद्यामंदिरों में नैतिक षिक्षा की व्यवस्था करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

–0–

दिल से निकलेगी न, मरकर भी वतन की उलफत
मेरी मिट्टी से भी खुषबू ए वतन आएगी।।

– फलक
भालेन्द्र कुमार वर्मा ''कसार''
धरसीवा, (रायपुर)

दिन दिनी भारत में एकात्मता थी, उन दिनों भारत का विष्व पर षक्ति में, षिक्षा में, षान्ति में एकछत्र आधिपत्य था। भारत जगतगुरू कहलाता था। हमारे आदर्ष का विदेषी अनुकरण करते थे, हमारी राश्ट्रीय पहचान थी, परन्तु जब हमारी एकता छिन्न–भिन्न थी हमें दुर्दिन देखने पड़े। स्वतंत्रता के लिये किये गये बलिदानों को भूल कर संस्कृति और सभ्यता पर किये गये प्रहारों को विस्तृत करके हम ''मरकट भूशण अंग'' की स्थिति में क्यों पहुंच रहे हैं? आज हम हिन्दुस्तान नहीं रहें – षायद हम सिर्फ– पंजाबी, असमी,मिजो,गोरखा,कोंकण,महाराश्ट्रीयन,हरिजन आदि हो गये हैं। इससे हमारे देष में अपने आप अलगाववाद, उग्रवाद, नक्सलवाद को बढ़ावा मिल रहा है।

''हिन्दू तो एक जीवन पद्धति है। ये हमारे जीवन का अंग है, हमारे धर्म का अंग नहीं है। हम सतनाम धर्मी हो सकते है, बौद्ध हो सकते हैं, लेकिन सबका मिश्रण सबका समुच्चय जो वह हमारा एक जातियता का होना है। धर्म हमारा अलग हो सकता है लेकिन हिन्दू का अर्थ है हिन्दुस्तान में रहने वाले जितने लोग है हिन्दू उन सबका वाचक है।

—ड़ा. राधाकृश्णन

''न्दिू धर्म सर्वधर्मो की जननी है। मुझे अपने धर्म पर गर्व है, यही ऐसा ध र्म है जिसने सभी धर्मो को गले लगाया है। जिस तरह समुद्र में बहुत सी नदियां आकर मिलती हैं उसी प्रकार बहुत से धर्मो की नदियां हिन्दू धर्म में मिल जाती हैं।

—विवेकानन्द

''हिनदू धर्म में जो लोग मूल बातें मानते चले आये हैं, उससे भी हटकर चलने की आजादी है किसी को कोई आपत्ति भी नहीं होती। परन्तु हमारे यहां फौरन आपत्ति हो जाती है यह एक बिल्कुल बंधा हुआ है।

—सैय्यद हामिद,निदेषक जामियां हमर्दद विष्वविद्यालय,

''मेरे गुरू रामकृश्ण परंमहंस ने हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइ मत मैं वह अपूर्व एकता खोजी थी जो सब चोजों के भीतर रमी हुई है।

—विवेकानन्द

''मुसलमान की बनाई जनेऊ हिन्दू पहनते हैं और हिन्दू की बनाई चुनरी मुसलमान महिलायें पहनती हैं।

—षबाना आज़मी

हर ओर लहू,आग,धुंआ,खौफ षरर है
पंजाब तेरी धरती पे ये किसका असर है
खुषियों से सजी बज्म हर घर था गुलिस्ता
पलभर में हुआ क्या, कि तमीं खून से तर है।
वास्तव में वो इंसान, इंसान है।
धर्म जिसका वफा, प्यार ईमान है।
जिसके दिल में क्षमा, स्नेह करूणा न हो
वह न हिंन्दू, न सिख, न मुसलमान है।।

—माधव मधुकर, गोरखपुर

—0—

गांधी जी के साथ मालवीय जी के मतभेद थे। मालवीय जी मुसलमानों को उचित अधिकार व संरक्षण देने के पक्ष में तो थें पर सीमा से आगे बढ़ कर उनका अनुनय करना उन्हें पसंद नहीं था।

—संपादक

रामलला को तंबू में देखकर काषी की महिलाएं भी दुखी हैं

अयोध्या में श्रीराम जन्म भूमि विवाद को लेकर चल रहे मुकदमे के वादी हाषिम अंसारी का आगे पैरवी न करने की घोशणा के बाद बनारस में मुस्लिम महिलाओं ने रामजन्मभूमि मंदिर निर्माण हेतु नई पहल कर चुकी हैं।

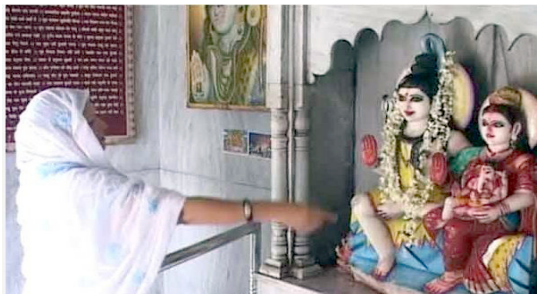

मुस्लिम महिला फाउण्डेषन की सदर नाजनीन अंसारी के नेतृत्व में कई मुस्लिम संगठनों के प्रतिनिधियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से अयोध्या में रामजन्मभूमि मंदिर निर्माण कराने की अपील की और बाबरी मस्जिद के पैरोकार हाषिम अंसारी के बयान का समर्थन करते हुए कहा कि रामलला को स्वतंत्र कराने का बयान देकर हाषिम ने मुसलमानों की इज्जत बढ़ाई है।

छह दिसंबर 1992 इतिहास का वह दिन जब मंदिर और मस्जिद को लेकर मजहबी समुदायों के बीच लकीर खिंच गई थी। फिर भी समाज में ऐसे लोग हैं, जिन्होंने गंगा—जमुनी तहजीब को बचाने के लिए मिसाल कायम किया है। ऐसा ही एक नाम नूर फातिमा, जो पेषे से वकील हैं। इन्होंने मुस्लिम समुदाय से ताल्लुक रखने के बावजूद काषी के पहाड़ी गेट के पास भगवान षिव का भव्य मंदिर बनवाया है, जो अमन का पैगाम देता है। यहीं नहीं, वह पांचों वक्त नमाज के साथ षिव की पूजा भी करती हैं।

नूर फातिमा ने बताया कि साल 2004 में उन्हें सपने में मंदिर दिखाई दिया, लेकिन इस पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। इसी तरह कई दिनों तक वह महादेव के मंदिर और उसमें सफेद माला चढ़ाकर आराधना करने का दृष्य सपने में देखती रही। फिर भी इसे भ्रम मानते हुए अनदेखी करती रहीं। फातिमा के अनुसार, कुछ दिनों बाद उनकी पति की दुर्घटना में मौत हो गई। तब उन्हें लगा कि भगवान षिव उन्हें दर्षन देकर हकीकत में आराधना को बोला था।

भास्कर में प्रकाषित एक समाचार के अनुसार 27 नवंबर 2004 को मंदिर के लिए नूर फातिमा ने पहली ईट अपने हाथें से रखी। पांच महीने बाद पहाड़ी गेट के पास आठ मार्च 2005 को भगवान षिव का मंदिर बनकर तैयार हो गया। तब से लेकर आज भी नूर फातिमा रोज भगवान षिव को सफेद फूल की माला चढ़ाकर पूजा करती हैं। उन्होंने बताया कि भगवान और अल्लाह सब एक हैं। षांति और अमन देष में रहना चाहिए उनकी यही कामना है।

अभी तक रामलला टेन्ट के अन्दर ही विराजित क्यों है ?

Chapter: 6

Hindu Muslims restore 400 Year-old Temple in Valley, but not Ram Janmbhumi Temple?

Ram-Ring worn by Tipu Sultan

Media reported on May 15, 2012, a group of Kashmiri Pandits and Muslims have begun to day the renovation of the 400-year-old Vitaal Bhairav temple in Rainawar neighbourhood of Srinagar. As part of the restoration work, the temple walls will be repaired, a new gate fitted and a wall built around the shrine's precincts, a member of the Rainawar Action Forum, which is spear-heading the project said. The temple is being renovated after remaining unattended for the last 22 years.

It is said that the revival of the temples in Kashmir is a step towards reconciliation between the communities in the Valley and would help instil confidence in the Kashmiri Pundits. It may be considered a step towards reconciliation and a move to encourage more Pandits to return to the Valley. The Vitaal Bhairav temple, which is believed to be the resting place of local deity Vitaal Bhairav, was recently in the news when a conglomeration of several community organisations demanded a CBI probe into the "illegal" sale of the temple land..

Proposed Ram Janmbhumi Temple Ram Lala at present

रामायण अखाड़ा तुलसी दास, संकट मोचन मंदिर के दिवंगत महंत वीरभद्र मिश्र और उनके मित्र डॉ. उदय षंकर दुबे के प्रयासों से चित्रमय अब इंद्रधनुशी रंगों से कोई दो सौ साल से भी ज्यादा पुरानी चित्रमय रामायण की मूल प्रति आखिर सोनारपुरा क्षेत्र के एक गृहस्थ के यहां से ढूंढ़ ली गई है।

चित्रमय रामयाण की कथित मूल प्रति की अनमोल तस्वीरों में बबूल के गोंद के साथ प्रयुक्त पेवड़ी, गेरू, रामरज आदि प्राकृतिक रंगों की चमक थेड़ी मद्धम जरूर पड़ी है, मगर आकृतियों की स्पश्टता पर इससे अंतर नहीं पड़ा है। अलबमों में रामकथा के प्रसंग क्रमवार भी नहीं हैं, किंतु पूरी रामकथा इनमें संग्रहीत हैं।

फुलवारी में बैठी जानकी जी की नासिका को अलंकृत करती नथ जहां यह बताती है कि तस्वीरें सत्रहवीं–अट्ठारहवी सदी के दौर की हैं (डॉ.दुबे के अनुसार इसके पूर्व काषी के आभूशणों की श्रृंखला में नथ षामिल नहीं थी।)

http://www.newsanalysisindia.com/wp-admin/post.php?post=4790&action=edit

गीता के 700 छंदों की नक्काषी नाषिक के मुस्लिम बंधु लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाषिक में ताम्रपत्रकार के नाम से विख्यात जमिलभाई रंगरेज ने गीता के 700 छंदों की नक्काषी करने के पूर्व गीता की अनेक प्रकाषित पुस्तकों का अध्यन किया। इसके बाद वे इस निश्कर्श पर पहुंचे कि गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाषित गीता ही सर्वश्रेश्ठ है।

Newsanalysisindia.com/

1 hr ·

नाशिक के जमिलभाई रंगरेज का नाम लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड में है,उसने गीता के छंदों की ताम्बे पर नक्काशी २००३ में की थी।

http://www.newsanalysisindia.com/.../muslim-girl-in-mumbai-wi...

h

Jamilbhai (एल) तांबे की प्लेट पर गीता के सभी 700 छंद उत्कीर्ण किया गया है

http://www.newsanalysisindia.com/wp-admin post.php?post=4861&action=edit

एकता की भावना को त्याग के तप से तपायें

–ष्यामलाल चतुर्वेदी–बिलासपुर

भारत में एकता की भावना को हारे पूर्वज अगणित ऋशि मुनियों ने स्थायी रूप से कायम रखने के लिये अपने जीवन को त्याग के तप से तपाया। सर्व भूत हितै रताः की भावना को व्यापक बनाने के लिये ग्रन्थ लिखे, आचार संहिता का निर्माण किया और आचारण में गुंफित कर दिया। बद्रीनाथ से रामेष्वर और जगन्नाथ पुरी से द्वारिका के तीर्थाटक को मुक्ति वन मार्ग बताकर देष की परिक्रमा के बहाने चप्पे चप्पे को पांव पांव चल कर देखने समझने की लगन लगा दी। पवित्र नदियों के किनारे तीर्थो की प्रतिश्ठापना की विवाहादि पद्धति को सारे देष में एकरूपता प्रदान करने बिना किसी साधन सुविधा के रमता जोगी बनकर एक सूत्र में आबद्ध कर भारत की भारतीयता को जन जन के मन मंदिर में स्थापित करने वे सतत यत्नषील रहा करते थे। फलस्वरूप राज्य कर्ता बदलते रहे लेकिन सांस्कृतिक एकता की सतत प्रवाही धारा में कोई खास व्यवधान नहीं आ सका था।

यवनों ने बलपूर्वक भारत के मानदंड़ों को तोड़ने के लिए कई आतंकवादी अनाचार किये अंग्रेजों ने कल अल छल से भारत की एकता को विच्छिन्न करने के प्रयास में छद्म तरीके से दीर्घकालीन दुश्परिणाम कारी दौर चलाया जिसका परिणा श्रिात हुआ। उनके षिक्षा के माध्याम से वैचारिक विघटन का कार्य किया जिसका नतीजा निष्चित रूप से हुआ और भी उसका प्रभाव कायम है। विघटन तभी होता है जब गठन की गांठ ढ़ीली हो। भारत की एकता बनी रहे इसके लिए वैचारिक धरातल पर कार्य करना आवष्यक है। राश्ट्रीय भाव को प्रभावषील बनाने में अपनी भाशा आचार विचार के प्रति अपनापा के भाव का विस्तार होना चाहिए।

मेरा विनम्र मत है स्वराज्य प्राप्ति के बाद जिन जिन नेताओं और उनके अनुयायियों के हाथें सत्ता का सिंहासन आया षनैः षनैः उनकी ाणी ं परोपदेष ने पैठ जमा लिया और आचरण भोग प्रधान होता गया। इसके कारण अविष्वास अनास्था और यदि कुछ करने का हौसला हुआ तो आक्रोष की उत्पत्ति हुई। इन्हीं भावों की सामूहिक षक्ति की अभिव्यक्ति उग्रवाद नक्सलवाद के नाम से फैल रही है। इसकी मिमांसा के विस्तार में जाने के बजाय हमें एकता की भावना बढ़ाने उसे स्थायी बनाने व्यापक स्वरूप प्रदान करने पर विचार करना चाहिए।

वांछित इस एकत्व की आवष्यकता का प्रगटीकरण आचार से करना होगा। मुखिया ''मुख के समान खाना पान को एक'' चरित्र का हो। उसका आचरण बिना बोले त्याग की प्रेरणा देने वाला हो। वे उतना ही बोलें जो वे कर

सकते हैं। गरीब देष के खजाने से उतना ही लेवें जो एक मामूली आदमी के जीवन यापन के लिए जरूरी। सतता में बैठे रहने या सत्तासीन को पदुच्युत कर उस स्थान पर अपना आसन जमाने की चेश्टा में ऐसा एक भी काम न करें जो देष की एकता को विच्छिन्न करने वाली प्रवृत्ति को बल देने वाला हो। मतान्तर को मूलक न बनावें।

अगणित कारण और अगणित उपाय हो सकते हैं परन्तु देष की एकता को सर्वोपरि अन्तर्मन से मानकर तद्नुकूल आचरण करना ही लगता है इसका उपयोगी उपचार है। भाशणका विशय बनाकर गम्भीर विशयों को भी व्यर्थ बना देने की दुश्प्रवृत्ति का तिरस्कार कर प्रेम और सहानुभूति से हम एकत्व के षिवत्व को साकार कर सकते हैं। भौतिकता के पिछे भागने की भावना से क्षति हुई है असमानताएं बढ़ी है इसलिए अन्तर की बढ़ोत्री ने विजातीय वादों को पनपाया है। आईये ऐसा आचरण करने का संकल्प लें..जो सर्व सुखिनः सन्तु.....की सद्भावना को साकार करे।

–0–

''समूचे देष को एक सूत्र में बांधे रखने का सामर्थ्य भारत के संविधान में है। और भी एक बात कहूं तो इसके लागू होने के बाद देष में यदि कोई समस्या पैदा हुई तो वह संविधान में कोई दोश होने के कारण नहीं मानव की संकुचित प्रवृत्ति के कारण होगी।''

–ड़ा. अम्बेडकर

''हम लोग प्रायः यह कहते हैं कि भारत में एकता में अनेकता और अनेकता में एकता है। इसका सीधा अर्थ यह है कि भारत अनेक जातियों, धर्मिक सम्प्रदायों,सामाजिक परम्पराओं, विभिन्न भाशाओं और अनेक मत विष्वासों का दकष है। हमारी सांस्कृतिक विरासत भारत के आदि संविधान रचनाकार महाराज मनु से प्रारम्भ होती है।''

–अक्षय कुमार जैन, भूतपूर्व,सम्पादक ''नवभारत टाईम्स''

''हमारे लोकतंत्र का एक बहुत बड़ा दोश यह है कि अपना वोट बैंक बनाने के लिये कोई भी दल राश्ट्र विरोधी कार्यो के विरोध में अपना मत प्रकट करने से घबराता है। भले ही उससे राश्ट्र की कितनी ही क्षति क्यों न हो।''

– विंग कमाण्ड़र ड़ा. मनमोहन बाला

''सबसे बड़ा संकट राश्ट्रीय एकता पर छाया। इतना अधिक कि इस बात पर सार्वजनिक रूप से लोगों को चर्चा करने में भी संकोच नहीं होता कि ''क्या यह देष टूटना चाहिए?''

–लालकृश्ण आडवाणी

राश्ट्रीय एकता और हिन्दी

– श्रीमत वन्दना सक्सेना, भोपाल

''मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी है, हम वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा,
सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा

– मुहम्मद इकबाल

भारत उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक लगभग 2000 किलोमीटर से अधिक पष्चिम क्षेत्र में द्वारका से लेकर पूर्वी क्षेत्र तक 2500 किलोमीटर से अधिक भू भाग में फैला हुआ है। इतने विषाल भू–भाग को एकता में बांधने हिन्दी ही सक्षम है क्योंकि प्रांतीय भाशाएं सिर्फ उस प्रांत विषेश के लोगों को बांध सकती है, समस्त राश्ट्र को नहीं।

प्राचीन काल में संस्कृत ने राश्ट्रीय एकता को बांधे रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। संस्कृत के बाद हिन्दी राश्ट्रीय एकता को बनाये रखने का काम बड़े लगन से कर रहीं है।

राश्ट्र के एकीकरण एवं सर्वमान्य भाशा से बलषाली तत्व और कोई नहीं है। हिन्दी राश्ट्रीयता का मूल सिंचती और दृढ़ करती है। ''राजर्शि टंड़न के षब्दों में ''हिन्दी ही देष की राश्ट्रीय एकता को सूत्रबद्ध करके संभाले रखने में सक्षम है।'' ड़ा. षिवसागर रामगुलाम के षब्दों में''हिन्दी प्यार और राश्ट्रीय एकता की भाशा है, यह हमेषा से जनता की भाशा रही है, और रहेगी।'' राश्ट्रीय एकता को बनाये रखने में हिन्दी ''वसुधैव कुटुम्बक्म'' भावना की ओर प्रेरित करती है। यह एक राश्ट्र एक मानव परिवार के लक्ष्य को सिद्ध करती है।

संत कन्फयुषिस'' के षब्दों में ''अपनी भाशा हीन होने से कोई देष आजाद नहीं रह सकता।'' यदि किसी देष को गुलाम बनाना है, तो उसकी भाशा छीन लिजिये। अतः अपनरी भाशा का होना हर देष के लिए जरूरी है। क्योंकि भाशा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं, वरन् वह दिलों को जोड़ती है, मैत्री और राश्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करती है। दिलों को जोड़ती है राश्ट्रीयता के लिए मन मस्तिश्क को सिंचती है। हिन्दी ही ऐसी समृद्ध भाशा है जो हर पहलू पर देष की एकता की पृश्ठभूमि पुख्ता कर रही है।

सर्वाधिक विषाल बहुभाशी लोकतंत्र होने की वजह से हमारे संविधान ने भी हिन्दी को राजभाशा घोशित किया है। क्योंकि हिन्दी सर्वाधिक समृद्ध भाशा है। इसमें एक करोड़ से भी अधिक षब्द हैं। साथ ही इसमें किसी भी भाशा के षब्दों को अपने में मिलाने की अद्भूत क्षमता निहित है। इसके अलावा हिन्दी सबसे अधिक सरल एवं सहज भाशा है, जो सबको एकता के सूत्र में बांधे रखती है।

गऊ कथा करते भगवा वस्त्रधारी मुस्लिम कथाकार

वाराणसी के अस्सी घाट पर गऊ कथा करते मुस्लिम कथाकार मो. फ़ैज़ खान

कथाकार मो. फ़ैज़ खान कहते हैं कि इस्लाम में गाय का दूध को षिफा कहा गया है, गऊ मांस को बिमारी कहा गया है। षूराय हज़ कुरआन षरीफ़ में आयत 37 में कहा गया है कि नहीं पहुंचता अल्लाह के पास रक्त और मांस, खुदा के पास पहुंचता है तुम्हारा त्याग। इस्लाम ये भी बताता है कि जिस देष में रहो उस देष की तहजीब का सम्मान करो और गाय का सम्मान करना ही हिन्दुस्तान की तहजीब का सम्मान करना है।

उनकी संस्कृत निश्ठ षुद्ध हिन्दी भाशा और हिन्दू धार्मिक वैदिक ग्रंथों पर उनकी गहराई के साथ पकड़ लोगों को अचम्भित कर रही है। गेरूआ वस्त्र, माथे पर रोली का टीका, सामने नारियल, चुनरी, गुरू को भगवान समझकर आरती और गो कषी के विरोध में षास्त्रीय परम्परा के अनुसार कथा करते ये षख्स एक नजर में कोई हिन्दू महात्मा नजर आते हैं। 34 वर्शीय धर्म उपदेषक कहते हैं कि गाय सिर्फ हिंदुओं की ही माता नहीं हैं, वह विष्वमाता हैं। उन्हें जो भी दक्षिणा मिलती है, वह उसे गायों की सेवा में लगा देते हैं।

http://www.newsanalysisindia.com/wp-admin/post.php?post=4750&action=edit

एकता का प्रतीक

हैदराबाद षहर की एक गली में इस्लामिक अध्ययन का बेहद पुराना संस्थान स्थित है जामिया निजामिया। यहां फारसी में अनुदित महाभारत तो है ही और दुर्लभ इस्लामिक पांडुलिपियां भी हैं। षिब्ली गंज स्थित यह संस्थान हैदराबाद के ऐतिहासिक चारमीनार से कोई तीन किलोमीटर दूर है। इस पुस्तकालय में मौजूद महाभारत के फारसी अनुवाद वाला यह ग्रथं 400 वर्श से अधिक पुराना है इसके अलावा पुस्तकालय में 3,000 से अधिक दुर्लभ पांडुलिपियां और विख्यात भारतीय और अरबी इस्लामिक विद्धानों द्वारा लिखी गई सैकड़ों साल पुरानी किताबें मौजूद हैं।

यहां हैं फारसी में महाभारत की दुर्लभ पांडुलिपियां

जिसमें कुल 18 लाख शब्द प्रयु
हैं. इसका आकार इलिआद ३
ओडिसी से अनुमानतः 10 गुना ब
है. धर्म का तुलनात्मक अध्ययन
लिए देश के विभिन्न हिस्सों से ४
छात्र और दूसरे देश से आए छात्र।
अध्येता जामिया निजामिया
पुस्तकालय में फारसी में अनु
महाभारत को पढ़ने आते हैं ३
इसके अलावा फारसी, अरबी
उर्दू में दुर्लभ पांडुलिपियां ३
किताबें पढ़ते हैं.

पुस्तकालय में पहुंचने से पहले यह ग्रंथ जामिया निजामिया के संस्थापक रहे मौलाना मोहम्मद अनवरूल्लाह फारूखी के निजी संग्रह में षुमार था। मुगल बादषाह अखबर के नवरत्नों में से एक अबुल फजल द्वारा अनुदित महाभारत की यह पांडुलीपि 5012 पृश्ठों में है। यह मौलाना मोहम्मद अनवारूल्ला फारूकी के व्यक्तिगत संग्रह में से एक है। मौलाना जामिया के संस्थापक थे और यह संस्थान दक्षिण भारत की सबसे बड़ी सेमिनरी है।

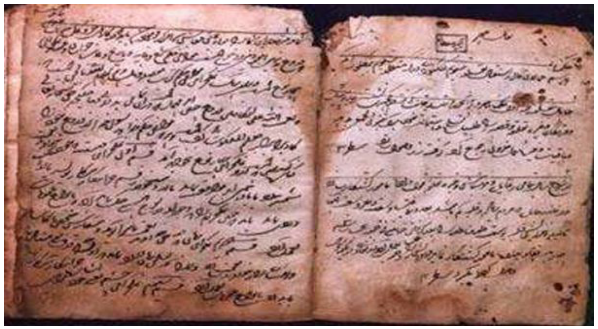

पुस्तकालय के प्रमुख फैसुद्दीन निजामी ने कहा यहां सबसे पुरानी पांडुलिपि किताब–उल–तबसेरा फिल किरातिल अषरा है जिसके लेखक मषहूर इस्लामिक अयेता अबू मोहम्मद मकी बिन तालिब थे, 750 वर्श पुरानी किताब कुरान के बारे में जो तजवीद कला के साथ है दुनिया में इस मास्टरपीस की केवल दो प्रतियां ही हैं, जिसमें से एक तुर्की के खलीफा पुस्तकालय में है.

http://www.newsanalysisindia.com/wp-admin/post.php?post=4743&action=edit

हमारी षिक्षा प्रसार और उन्नति की गवोक्तियां व्यर्थ है,यदि हमारे समाज के अनक अंग अज्ञान और उपेक्षा के अंधकार में पड़े रहते हैं।

– प.पू. गुरूजी

जब तक देष में एक कुत्ता भी भूखा है तुम सुख की नहीं कैसे सो सकते हो।

– विवेकानन्द

इस सुविस्तृत धरती की छाती पर अगर कोई ऐसा देष है, जहां आदमी अपने अर्मूत स्वप्न चिरकाल से मूर्त करते आया है तो मैं कहूंगा वह देष भारत ही है।

– रोम्या रोला (फ्रांसीसी विचारक)

अलगाववाद और उग्रवाद का जाल आज देष के विभिन्न भागों में फैला हुआ है। विदेष षक्तियों की षह में देष को खण्डित करने का देषद्रोही कुप्रयास हो रहा है। हमारी सरकार द्वारा इन षक्तियों के खात्मा के लिए जितना प्रयास होना चाहिए उतना उसके द्वारा नहीं हो रहा है। ऐसी स्थिति में देषभक्ति, एकता की भावना एवं देष के लिए सर्वस्य अर्पित करने को हम सब उद्यम रहें। ''राश्ट्रीय एकता'' पुस्तक प्रकाषित कर आप इस दिषा में जो प्रयास कर रहे हैं उसमें सफल हों यही कामना करता हूं। दिनांक–28.02.1992– गोविन्द सारंग

भा.ज.पा.संगठन मंत्री,रायपुर संभाग

एक ही षिव एक ही विश्णु भारत की चारों दिषाओं के चौरासी क्षेत्रों में विराज रहे हैं। उन्हें ह खण्डित कैसे करें। एक ही रामायण, महाभारत, भागवत का विभिन्न प्रदेषों में पाठ होता है। श्रीराम और श्री कृश्ण समस्त भारत में सर्वत्र पूजे जाते हैं। –आचार्य क्षितिमोहन सेन

–0–

स्वामी योगानन्द सरस्वती,भाजपा संसद, दिनांक–28.02.1992

''योगाश्रम'' बाराकला (भिण्ड)

उग्रवाद को एकता यात्रा बढ़ावा मिला है, कहने वाले नितान्त भ्रम में है। राश्ट्रीय ध्वज श्रीनगर के लाल चौंक में नहीं प्रत्युत उग्रवादियों की छाती पर फहराया गया है। धन्य है जोषी जी और उनके साथी। उनके अडिग साहस, असीम निर्भयता की जितनी प्रंषसा की जाए कम ही है। साक्षात यमराज (मृत्यु)के सम्मुख देहाध्यास से विमुक्त हुए बढ़ते ही गए और लक्ष्य प्राप्त किया। कांग्रेस के षासनकाल में आज डेढ़ लाख वर्ग कि.मी. भूमि पाकिस्तान और चीन के पैरों तले रौंदी जा रही है। अब भारत माता का मस्तक काष्मीर भी सिसकता जा रहा है। एकता यात्रा से काष्मीर समस्या को सुलझाने की प्रारम्भिक भूमिका तैयार हुई है।

–0–

जिस तरह अलगाववाद, उग्रवाद देष की षांति व्यवस्था के लिये प्रष्नचिन्ह खड़ा कर रहे हैं निष्चित की चिन्ता जनक है। मेरे मत से आज देष को राश्ट्रवाद एवं मानवाद के रास्ते पर आना चाहिए। राजनैतिक स्वार्थो से हटकर विचार करें, मुझे पूर्ण विष्वास है भारतीय जनता पार्टी की एकता यात्रा मार्गदर्षक होगी। स्थानीय षासन एवं नगरीय कल्याण राज्य मंत्री

म.प्र. षासन भोपाल

–सुजान सिंह पटेल

एकता के आधार स्तम्भ

–विनोद अग्रवाल,रायपुर

11 अगस्त 1947 को सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था– आज लाहोर से लेकर पूर्वी बंगाल का थोड़ा भाग छोड़ कर बांकी हिन्दुस्तान को एक करने का मौका एक हजार वर्श बाद आया है।

भारत जब सवतंत्र हुआ उस समय 554 भारतीय रजवाड़े थे जो कि भारत के दो तिहाई हिस्से में फैले हुए थे और एक तिहाई ब्रिटिष इंड़िया था। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सबको एकत्रित कर एक साथ भारत में मिलाया था उन्होंने यह अनुभव किया था कि राश्ट्रीय एकता की नींव साम्प्रदायिक
एकता में है भारतीयरजवाड़ों को भारत में मिलाने के महानतम् कार्य के कारण ही वे लोहपुरूश कहलाने लगे।

उन्होंने अृतसर में सिक्खों से बातचीत की और अक्टूबर1947 को पटियाला में उन्होंने कहा था कि– हम खालिस्थान, सिखिस्तान या जाटिस्तान जैसी मृगमरीचिका के पीछे नहीं दौड़ सकते। उन्होंने समझाया था कि कैसे और क्यों भारत विभाजन नहीं कर सकते। आप समुद्र को बांट नहीं सकते या नदी के पानी के टुकड़े नहीं कर सकते।

उनका कहना था कि ''हमारे देष की प्राचीन परंपराों का हमें जो उत्तराधिकार मिला है वह हमारे लिए गर्व की चीज है। हम सब एक ही खून और एक ही भावना के बंधन में बंधे हुए हैं। कोई हमें अलग अलग टूकड़ों में बांट नही सकता।

उन्होंने एक षक्तिषाली भारत का सपना देखा था – ''भविश्य भारत की षक्ति और विवेक पर निर्भर करेगा और यदि हमें अपनी षक्ति में विष्वास नहीं तो फिर हमें राश्ट्र के नाते विद्यमान रहने का कोई अधिकार नहीं''।

चाणक्य देषभक्त, कूटनीतिज्ञ और अर्थषास्त्री थे। चन्द्रगुप्त के समय उत्तर भारत 36 विभिन्न जनपदों में विभक्त था। सबको अपने हित की चिन्ता थी, राश्ट्रहित की कोई नहीं सोंचता था। एक एक करके जनपद यमनों की दासता स्वीकार करते चले जा रहे थे। ऐसी विशम षोचनीय संकटपूर्ण स्थिति में उन्होंने विखण्डीत भारत के जन जन में राश्ट्र के प्रति चेतना जगाई। विदेषी यमनों की दासता स्वीकार करने को तत्पर राजसत्ता के अन्याय व अत्याचारों के खिलाफ साधारण षिक्षक चाणक्य ने न केवल लोहा लिया बल्कि राजसत्ता को ही बदल दिया। 2300 वर्श पूर्व उन्होंने राजनीतिज्ञों, धार्मिक वर्ग के खिलाफ
जो कुछ कहा था,लिखा था,वह आज की परिस्थिति में भी लागू होता है।

चाणक्य द्वारा लिखित पंचतंत्र दुनियां की 80 भाशाओं में अनुवादित है। वे महान अर्थषास्त्री भी थे। उनके अनुसार जो किसान राजकीय सहायता बगैर बंजर भूमि को खेती योग्य बना दे,उसका उस पर स्थायी स्वामित्व होना चाहिए।

प्रखर राश्ट्र भक्त, स्वाभिमानी, दृढ़ निष्चयी, चाणक्य में साध्य को लक्ष्य भेद करने की अपार षक्ति थी। अहंकार और क्रोध पर तो उन्होंने विजय ही प्राप्त कर ली थी।

षहीदों को समझने पर ही राश्ट्रीय एकता

राजेष कुमार अग्रवाल,रामसागरपारा,रायपुर

सिर हथेली पर रखकर घूमने वाले आजादी के मतवालों को हंसते ''वन्देमातरम्'' कहते हुए फांसी के फन्दे पर झूलने वाले आजादी के दीवनों के बलिदानों को सही मायने में हम समझलें तो इसकी रक्षा करने के लिए भी हम उठ खड़े होंगे। अलगाववाद, उग्रवाद, नक्सलवाद फिर नहीं पनपेंगे।

जाग उठी है माटी सोई, राश्ट्रधर्म से बड़ा न कोई।
बिस्मिल और अषफाक चले, देषद्रोह की फसल जले।।

फांसी लगने के दो दिन पूर्व अपनी डायरी में बिस्मिल ने लिखा था–''अषफाक उल्ला एक कट्टर मुसलमान होकर अआर्य समाजी रामप्रसाद का क्रांतिकारी दल के सम्बंध में यदि दाहिना हाथ बन सकते है तो क्या स्वतंत्रता के नाम पर हिन्दू मुसलमान अपने निजी छोटे छोटे फायदों का ख्याल न करके आपस में एक नहीं हो सकते....?

उनकी जोषीली कविताओं की विभिन्न प्रेरक पंक्तियां प्रस्तुत हैं :–

सर फरोषी की तमन्ना आज हमारे दिल में है।
देखते हैं जोर कितना बाजुए कातिल में है।।

क्या ही लज्जत है कि रग रग में आती यह सदा।
दम न ले तलवार जब तक जान बिस्मिल में रहें।।
यदि देष हित मरना पड़े, मुझे सहस्त्रों बार भी।
तो भी न मैं इस कश्ट को, निज ध्यान में लाऊं कभी।।

मरते बिस्मिल, रोषन, लाहिड़ी, अषफाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकड़ो इनकी रूधिर की धार से।।

फांसी के फंदे पर जाते हुए बिस्मिल ने कहा था–

मालिक तेरी रज़ा और तू ही रहे,
बांकी न मैं रहूं, न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या, तेरी ही जूस्तजु रहे।

–0–

मजिस्ट्रेट का प्रष्न और बालक चन्द्रषेखर का उत्तर–

तुम्हारा नाम?– आजाद। पिता का नाम? स्वतंत्रता। तुम्हारा घर? जेलखाना। गुस्से में मजिस्ट्रेट ने 15 बेतों की सजा सुनायी और चन्द्रषेखर ''आजाद'' कहलाने लगे।

वे कहते थे आजादी हासिल करने के लिये हाथों में लहू की गर्मी चाहिये। मेरा मकसद आजादी है और यह है पत्थर की लकीर।

मैं इतना कहूंगा आजाद था,आजाद हूं,आजाद रहूंगा।
भारत के गली कूचों में आबाद रहूंगा,आजाद रहूंगा।

कानपुर के मारवाड़ी परिवार की 80 वर्शीय श्रीमती मुसद्दी की मृत्यु मार्च 1992 में हुई है। एक साक्षात्कार में यूनिर्वाता को उन्होंने बताया था कि आजाद को कढ़ी बहुंत पसन्द थी और अक्सर खुफिया पुलिस के संकट के बावजूद उनके हाथें कढ़ी खाने आया करते थे अपने फक्कड़ अंदाज में एक भोजपुरी कजरी गाया करते थे –

जेहि दिन हुई ह सुरजवाना
अरहर का दलवा, धान का भतवा
खूब कचर के खाइबे ना.....

–0–

''पंच आब'' अर्थात पांच नदियों का पानी। महान संतों और वीर योद्धाओं की जन्मभूमि। हिन्दुत्व की रक्षा करने के लिये सिख पंथ के संस्थापक गुरू नानक देव का, नवे गुरू तेग बहादुर, दसवें गुरू गोविन्दं सिंह का पंजाब। पंजाब को भारत की तलवार भी कहते हैं। इसी पंजाब की वीर भूमि में जन्म लिये थे अर षहीद भगत सिंह, मदन धीगरा, लाला लजपतराय आदि।

असेम्बली हाल में बम फेंकने की जिम्मेदारी अपने साथी बटुकेष्वर के साथ भगतसिंह ने ली थी। बम फेंकने के बाद सुरक्षित वापिस लाने का इंतेजाम आजाद ने किया था। परन्तु भगतसिंह बम फेंकने के बाद भागने की अपेक्षा गिरफ्तार होना और क्रांतिकारियों के मकसद को कोर्ट में बयान कर भारतीयों में स्वतंत्रता के लिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना पैदा करना था। उन्हे मालूम था कि उैसा करके वे फांसी पर लटकने वाले हैं परन्तु उन्हें देष के लिये यही स्वीकार हुआ। यह थी बेमिसाल देषीभक्ति।

स्वातंत्रय वीर सांवरकर के आदेष पर सब कुछ करने का साहस रखने मदनलाल धींगरा के अमर वाक्य– मैं एक हिन्दू हूं। मै अपने राश्ट्र के अपमान को पने देवता का अपमान मानता हूं। अपने लहू कि अतिरिक्त अपनी माता को मैं और क्या दे सकता हूं। भारत की सेवा ही मेरे लिये भगवान राम और कृश्ण की सेवा है।''

''मुझ पर किया गया लाठी का एक एक प्रहार ब्रिटिष सरकार के कफन की कील बनेगा।'' यह श्राप था लाला लाजपतराय का अंग्रेज सरकार को। सन् 1896 में मध्य भारत भीशण ाकाल की चपेट में था अकाल से ग्रस्त लोग ईसाइ मिषनरियों के षिकार बन रहे थे लाला जी ये सब नहीं चाहते थे। जबलपुर, बिलासपुर, रायपुर आदि जिलों के सैकड़ों अनाथ बालकों को पंजाब के आर्य समाज के अनाथालयों में उन्होंने रखा था।

''तुम मुझो खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा'' नेताजी को जवाब मिला था– ''ह इतना खून देगे कि इफाल के पहाड़ लाल हो जायेंगे।'' आजाद हिन्द फौज के जवानों का आत्मविष्वास और नेताजी के प्रति समर्पण भाव को देखिये ''गुलामी के घी और आटे से आजादी की घास अच्छी है हम पैदल चलेंगे, हम पत्ते खायेंगे,दवाईयों के बिना रह लेंगे पर हम आगे बढ़ेंगे।'' काष गांधी जी का व्यक्तिगत झूकाव पं. नेहरू की ओर नही रहता तो इतिहास ही बदल जाता।

तकलीफ तो मेरी मां का नाम है जिसे मैं बहुंत प्यार करता हूं। दूसरे साथी ने गरम छुरी से षरीर से गोली निकाली तो तीसरे साथी ने आग्रह किया– यह गोली तो मैं रखूंगा। उत्तर भारत के क्रांतिकारी का दक्षिण भारत के क्रांतिकारी के लिये यह गोली तोहफा है।

मदरसों में दिए जा रहे हैं हिंदू संस्कार

कर्नाटक में एक कांग्रेस नेता ने विष्व हिंदू परिशद का मुकाबला करने के लिए भारतीय हिंदू परिशद (बीएचपी) का गठन किया है, मंगलुरू के नज़दीक तटीय जिले दक्षिण कन्नड़ के पुत्तर कस्बे में मंत्रोच्चार के बीच बीएचपी का गठन किया गया.

षेट्टी का कहना है, ''हम पार्टी के विरूद्ध नहीं जा रहे हैं, हम समाज का विष्वास जीतना चाहते हैं और यह बताना चाहते हैं कि विष्व हिंदू परिशद जिस तरह का हिंदुत्व परोस रहा है वह सही नहीं है, यह हिंदू समाज का सम्मान नहीं बढ़ाता.''

कांग्रेस ने मुसलमानों और ईसाइयों को लुभाने के लिए हिंदुओं को किनारे कर दिया है.

मंदसौर में 17 साल पहले महिलाओं– जिनमें पांच मुसलमान हैं और दो हिंदू–ने निदा महिला मंडल (एनएमएम) बनाकर मदरसों से हिंदुत्व और इस्लाम की षिक्षा देना षुरू किया था.

डॉक्टर तलत कुरैषी

डॉक्टर तलत कुरैषी मदरसों को संचालित करने वाले निदा महिला मंडल की अध्यक्ष है.

इसकी अध्यक्ष तलत कुरैषी कहती हैं, ''हम गरीब परिवारों के बच्चों को षिक्षा देने का काम कर रहे हैं, कई हिंदू गरीब परिवार अपने बच्चों को पढ़ाना चाहते थे लेकिन जब हमने धार्मिक षिक्षा को लेकर उनकी चिंताओं को देखा तो मदरसों का पुराना पैटर्न लागू किया. ऐसा, जो काफी सस्ता था और जिसने राजा राममोहन राय, मंषी प्रेमचंद और भारतेंदु हरिष्चंद्र जैसे नामचीन षख्स दिए.''

निदा महिला मंडल 128 मदरसों को संचालित करता है और इसका मुख्यालय मदरसा फिरदौस है. गुरूकुल विद्यापीठ, नाकोडा, ज्ञान सागर, संत रविदास, एंजिल और जैन वर्धमान सरीखे नाम वाले 128 मदरसों में से 78 मदरसों में मुस्लिम छात्रों के साथ हिंदू बच्चे भी पढ़ते हैं.

तलत बताती हैं कि 14 मदरसों को सरकारी अनुदान मिलता है लेकिन समय पर नहीं. हिंदी और अंग्रेजी भाशा पढ़ना जरूरी है, जबकि तीसरी भाशा के लिए उर्दू और संस्कृत में से एक का विकल्प दिया जाता है.

''दीनी तालीम के लिए कोई बंदिष नहीं है, जो बच्चे उर्दू लेते हैं, उन्हें दीनियात और संस्कृत वाले बच्चों को हिंदू धर्म की पुस्तक पढ़ाई जाती है. चूंकि एक छत के नीचे एक माहौल में सारे बच्चे पढ़ते हैं तो उनका परस्पर धार्मिक किताबों में दिलचस्पी लेना लाजमी है.''

स्मार्ट क्लासेज़ भी
हिंदुत्व–इस्लाम की षिक्षा देने वाला मदरसा

जिला मदरसा केन्द्र के समन्वयक डॉक्टर षाहिद कुरैषी बताते हैं, ''मध्य प्रदेष में आधुनिक मदरसों में धार्मिक षिक्षा की पुस्तक जरूरी है. सिलेबस का निर्धारण भी संस्था को करना है. लिहाजा हिंदू बच्चों की संख्या देखते 'हिंदू धर्म सोलह संस्कार, नित्यकर्म एवं मान्यताओं का वैज्ञानिक आधार' षीर्शक से किताब लिखी. ''

इस किताब में नित्यकर्म, दंतधावन विधि, क्षैर कर्म, स्नान, वस्त्र धारण विधि, आसन, तिलक धारण प्रकार, हाथों में तीर्थ, जप विधि, प्राणायाम, नित्य दान, मानस पूजा, भोजन विधि, धार्मिक दृश्टि में अंकों का महत्व और नवकार मंत्र को भी षामिल किया गया है.

षाहिद बताते हैं कि मदरसों के षिक्षक हिंदू धर्म पर आधारित इस पुस्तक को भी पढ़ा रहे हैं, ''इसके जरिए दोनों ही धर्मों के बच्चों और षिक्षकों ने एक–दमसरे को जानने और समझने की पहल की है.''

उन्होंने बताया कि साढ़े 13 लाख की आबादी वाले मंदसौर जिले में लगभग 250 मदरसे संचालित किए जा रहे हैं और इनमें दोनों धर्मो के लगभग 15 हजार बच्चे (एनएमएम के 128 मदरसों के 12 हजार बच्चों सहित) पढ़ते हैं.

खास बात यह है कि पन्द्रह हजार बच्चों में से 55 फीसदी हिंदू है. लगभग 20 मदरसों में स्मार्ट क्लासेज प्रारंभ की गई हैं और पहली से चौथी तक अंग्रेजी माध्यम भी षुरू किया गया है.

पेषे से पत्रकार और पुस्तक के लेखक नेमीचंद राठौर ने बताया कि डॉ. कुरैषी के आग्रह पर संकलन तैयार तो कर दिया पर मन में षंका थी कि मदरसों में

यह किताब स्वीकार भी होगी या नहीं. लेकिन हिंदू बच्चों के साथ जब मुस्लिम बच्चों और षिक्षकों ने भी इसे पसंद किया तो खुषी हुई.

राठौर के अनुसार बीते पांच वर्शो से उनकी पुस्तक मदरसों में पढ़ाई जा रही है.

षुरूआती हिचक

मदरसा फिरदौस की छात्रा जैनब गौरी ने बीबीसी से कहा,''दोनों धर्मों की किताबों में कई सारी बातें एक सी हैं. सिर्फ नाम अलग–अलग हैं.''

जैनब को हिंदू धर्म की पूरी पुस्तक याद है. वह पूछती हैं,''हम सब जब रोटी एक खाते हैं तो अलग कैसे हुए.''

इसी मदरसे की 11वीं की छात्रा आयुशि वर्षी कहती है धार्मिक षिक्षा को लेकर कोई पाबंदी नहीं है. उसके पिता संजीव बताते हैं कि पन्द्रह सौ रूपये ही सालाना फीस में ऐसी मॉडर्न षिक्षा कहीं और नहीं मिल सकती.

मदरसा, हिंदू षिक्षा

वह कहते हैं, ''मैंने तो कभी नहीं देखा कि एक स्कूल में दोनों धर्मो की अलग–अलग षिक्षा दी जाती हो.''

मदरसा फिरदौस की टीचर नुसरत ख़ान कहती हैं, ''मदरसे में हिंदू धर्म से संबंधित पुस्तक देखकर पहले तो हमको ही कुछ अटपटा लगा. लेकिन पढ़ने के बाद हिचक दूर हो गई. हिंदू बच्चों को पढ़ता देख कई मुस्लिम बच्चे भी इसमें दिलचस्पी दिखाने लगे.''

http://www.newsanalysisindia.com/post/welcome-this-chage-madarson-mein-hindu-sanskar-karnatak-mein-cong-kee-bhartiya-hindu-parishad.aspx

लोकमान्य तिलक

–सुरेष कुमार अग्रवाल, रायपुर
उपाध्यक्ष– लायन्स क्लब फेन्डस,रायपुर

गांधी जी के षब्दों में –''लोकमान्य तिलक अनमोल हैं'' स्वदेषी भावना के साक्षात स्वरूप, और ''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है की सिंह गर्जना करने वाले तिलक ही थे।

उनके एक वकील मित्र ने पूछा था–गर्वनर की सभा में जाते समय आप अंगरखा और पगड़ी पहन कर जायेंगे या सूट पहन कर? लोकमान्य तिलक का उत्तर था– अंग्रेज हमारे देष में आये हैं यहां की जलवायु के अनुसार उन्हें अपने वेश में परिवर्तन करना चाहिए, ना कि मुझे। मैं पनी पोषाक क्यों बदलूं।

सादगी के पुजारी तिलक का संस्मरण उन्ही के षब्दों में– ''जब केसरी के लिए प्रेस खरीदा गया तो उसके टाईप के केस स्वयं मुझे अपने कंधे पर ढ़ोने पड़े.....मैं जिस बिस्तर पर सोता था, उसी को लपेटकर सामने रख लेता और उसी पर रख कर लिखता। वही हमारी मेज थी।

स्वतंत्रता के बाद आज तक कांग्रेस तुश्टीकरण की नीति पर चल रही है उसी कांग्रेस के लिये स्वतंत्रता के पूर्व के कांग्रेस नेता तिलक के सम्बंध में स्व. बी. बी.खेर का लिखा एक संस्मरण है– 1893 में पूना बम्बई और दूसरे स्थानों पर भीशण हिन्दू मुस्लिम दंगे हुए। तिलक ने इस संबंध में सरकारी नीति का विरोध करने के लिए पूना में सभा ली। जस्टिस गोविन्द रानडे और उनके षिश्य गोपाल कृश्ण गोखले ने इसका विरोध किया, क्योंकि उन्हें भय था कि ऐसा करने से मुसलमान और अंग्रेज सरकार दोनों चिढ़ जायेंगे, पर तिलक कहां मानने वाले थे। उन्होंने रानड़े और गोखले दोनों अपने पत्र ''केसरी'' में खूब खबर ली।''

70–75 वर्श पूर्व महाराश्ट्र में गणेषोत्सव का पर्व तिलक ने ही आपस मे मेलजोल बढ़ाने के उद्देष्य से प्रारंभ किया था।

–0–

स्टार टी.वी. और सी.एन.एन. के माध्यम अतंर्राश्ट्रीय टी.वी. का बढ़ता स्वरूप हमारी राश्ट्रीय एकता के लिए खतरा बन गया है। इसमें सर्वाधिक आपत्तिजनक कार्यक्रम पाकिस्तानी टी.वी. का होता है। – एक समाचार

स्वदेषी अभियान

स्वामी विवेकानन्द जी के जन्म दिवस 12 जनवरी से सम्पूर्ण भारत में ''स्वदेषी जागरण मंच'' के तत्वाधान में ''स्वदेषी अभियान'' प्रारंभ हुआ है। रा.स्व.संघ के सरसंघचालक श्री बाला साहब देवरस ने सतर्क किया है कि ''बहुराश्ट्रीय कंपनियां देष की अनमोल साधन संपत्ति का केवल दोहन ही नहीं षोशण भी कर रही है, साथ ही साथ सब प्रकार क खुफिया जानकारी भी प्राप्त करती है। ये बहुराश्ट्रीय कंपनियां तथा विष्व बैंक और अन्तर्राश्ट्रीय मुद्राकोश आदि विदेषी एजेन्सियां भारत की अर्थव्यवस्था को पंगु बनाकर अपनी मुट्ठीमें रखने के लिए आगे बढ़ रही हैं। हें इसी प्रकार से कंवल व्यापार करने आई विदेषी ईस्ट इंड़िया कम्पनी ने ही गुलाम बनाया था।

बहुराश्ट्रीय कंपनियों द्वारा निर्मित कुछ वस्तुओं क सूचि निम्नलिखित हैं। हम सब भारतीयों का कर्त्तव्य है कि इन वस्तुओं का उपयोग बिल्कुल नहीं करें। इनके विकल्प में भारतीय स्वदेषी वस्तुएं हैं उन्हें अपनायें।

विदेषी कंपनियों द्वारा उत्पादित वस्तुएं–

टूथपेस्ट–कॉलगेट,फॅरहेन्स,क्लोज अप,सिबाका,ग्लीन,एनोफार्म,
टूथ पाऊडार–कॉलगेट,फॅरहेन्स, सिबाका
ब्लेड–सेवन ओ क्लॉक,विल्मैन,विल्टेज,इरास्मिक,पाण्डस,मेन्थल।
षेविंग क्रीम–ओल्ड स्पाइस,लेदर, पामोलिव,निविया,इरास्मिक,मेन्थल।
नहाने का साबुन–लक्स,रेक्सोना,लिरिल,लाइफबॉय,ब्रीज,पीयस,पाण्ड्स,
कपड़े धोने का साबुन–सनलाइट,रिन,व्हील,सर्फ,चेक,वि,हारपिक।
पंखे–जी.ई.सी. एवं रैलीज कंपनी
टार्च एवं बैटरी–एवरेडी,जीवन साथी।
पंय–पेप्सी,कोका कोला, लहर
सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री– वेस्ले(हेयर टानिक),ब्रिलक्रीम, आदि हेयर क्रीम, पाण्ड्स,ओल्ड स्पाइस,हेलो,हिना,पामोलिव,क्लीनिक स्पेषल,क्लीनिक सनसिल्क,क्लियरसिल,मेडीकेयर,ग्लीम,पी.ओ.,ब्यूटी,आदि षैम्पू,तथा इस नाम की क्रीमें एवं फेयर एण्ड़ लवली, नीविया, मिन, डिटॉल,ए.एफ.डी.सी. सुप्रीम चार्मिस, आदि क्रीम : नायसिल, लिरिल, पाण्डस्,ओल्ड स्पाईस, जॉनसन ादि पाउडर।
रेडिमेड कपड़े– रैगलर,नाईक,डयूक,ऐडीडास,पावर व प्यूा,की टीषर्ट,जीन्स व षर्ट।
रसोईघर से संबंधित सामान–टिक्का,होमालइट,आदि दियासालाइ, मिल्कमेड, नेस्पे,फेरेक्स,गाल्टको,आदि दूध पाऊडर,सेरलेक,नेस्टम, एल.पी.एफ. आदि दूध पाऊडर,सेरेलक,नेस्टम,रेडलेबल,लिप्टन,टैस्टर चौइस,टाइगर,ग्रीनलेबल,टी टॉप,चीयर्स,डायमण्ड़,रंगोली,धुबन,सुपर कप, उत्सव,सिम्फनी,स्वानलेकर, जैड ग्लो, गोल्ड ब्लासम,डबल डायमण्ड़,ब्लू डायमण्ड़ आदि चाय।
जूते–पावर,एम्बेसेडर,क्वाडा,क्वनी,नार्थस्टार,टायर,हाईवाकर,प्यूमा,एंपायर,बाटा।
वाहनों के टायर–अपोलो,फायर स्टोन,सीएट,गुडईयर,डनलय,
अन्य– डालडा वनस्पति,साकया रिफाइंड,आयल,सनडाप,किस्टल,वनस्पति,।
तल–ब्रिटानिया,कैडबरी,ग्लूकोज,लिप्टसन ग्लूकोज आदि। बिस्कुट–5स्टार चॉकलजेट स्वाद एफलेयर,टाफियां,कोको चीप,कोकोआ,नेस्कैफे,नेस्ले आदि।

–रोषनलाल अग्रवाल,रायगढ़

घर वापसी समर्थक डॉ. आंबेडकर एवं आफ्रिका से गांधी का भारत लौटना

घर वापसी समर्थ्ज्ञक संविधान निर्माता डॉ. आंबेडकरः इस साल 14 अप्रैल को आंबेडकर की 125वीं जयंती के मौके पर राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के दोनों मुखपत्र ऑर्गनाइजर और पांचजन्य ने 200 पन्नों का स्पेषल अंक लाने का फैसला किया है, जिसमें उनके 'षुद्धतावदी' होने के बारे में बताया जाएगा, जिन्होंने इस्लामिक 'आक्रमण', इस्लाम में धर्मांतरण, साम्यवाद और संविधान के अनुच्छेद 370 आदि मसलों के खिलाफ आवाज बुलंद की।

एक आंबेडकरवादी और सामाजिक कार्यकर्ता का कहना है कि इस के जरिये संघ का इरादा दलितों को राश्ट्र की एकता के लिए अपनी तरह आकर्शित करना है।

नागपुर में हुई बैठक में संघ ने 'एक कुआं' एक मंदिर, एक ष्मषान' की नीति को दोकराते हुए आंबेडकर को लोगों को एकजुट करने वाले षख्स के तौर पर पेष करने का फैसला किया था। संघ की पत्रिकाओं में संघ से जुड़े दलित नेताओं और यहां तक कि संघ के सह–सरकार्यवाह डॉ. कृश्ण गोपाल के भी लेख हैं। इन लेखों में कहा गया है कि आंबेडकर राश्ट्रवादी थे और उन्होंने अपने समर्थ्ज्ञकों से कहा था कि वह देष को सबसे पहले ध्यान में रखें।

ऑर्गनाइजर के संपादक प्रफुल्ल केतकर ने कहा, 'उनका मानना था कि इस्लाम में भाईचारे की बात सिर्फ मुसलमानों को एकजुट करने तक सीमित है। वह राजनीतिक इस्लाम के आक्रामणकारी रवैये के जबर्दस्त आलोचक थे। जब पाकिस्तान और हैदराबाद जैसे कुछ प्रांत पिछड़ी जाति के हिंदुओं का धर्मांतरण करवा रहे थे, तो आंबेडकर ने इसके खिलाफ चेतावनी थी और कहा कि अगर ये फिर से हिंदू बनते हैं, तो इनका स्वागत किया जाएगा। इस तरह से उन्होंने भी घर वापसी का समर्थन किया था।' इस अंक में लिखे गए लेखों में कहा गया है कि आंबेडकर के बौद्ध धर्म अपनाने की मुख्य वजह विदेषी आक्रमणों के दौरान हिंदू समाज में सामाजिक सुधार में आया ठहराव था।

जातिवाद, छुआछूत राश्ट्रीय एकता में बाधक

राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) ने हिंदुओं को एक करने के जरिये राश्ट्रीय एकता के लिए नवीनतम योजना पर काम करने का फैसला किया है। संघ के लिए अगले तीन साल में 'एक कुआं, एक मंदिर और एक ष्मषान भूमि' की रणनीति अहम होगी। इसके जरिये संगठन का इरादा जाति आधार पर भेदभव को खत्म कर हिंदू धर्म में आस्था रखने वाले सभी लोगों को एकजूट करने का है। साथ ही, उन लोगों को भी फिर से हिंदू धर्म के दायरे में लाए जाने की योजना है, जिन्होंने कोई और धर्म स्वीकार कर लिया है। राश्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) देष के उत्तर–पूर्व इलाके पर फोकस करेगा और उसकी दक्षिण भारत में भी विस्तार की योजना है। साथ ही, संगठन विदेषी भाशा के बजाय क्षेत्रीय भाशाओं को ज्यादा अहमियत देगा।

नागपुर में आयोजित संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में मुख्य बातें उभर कर सामने आई हैं। और उन सभी बातों पर विस्तार से चर्चा भी हुई। इस बैठक में संघ के कुल 1,400 प्रतिनिधियों ने किस्सा लिया। तीन दिनों तक चली यह बैठक रविवार को खत्म हुई। इस दौरान संघ ने जाति से जुड़े उस सर्वे का जायजा लिया, जिसे संगठन ने हाल में एक दर्जन से भी ज्यादा राज्यों में करवाया था। कार्यकर्ताओं को जाति के आधार पर भेदभाव और इससे निपटने के तरीकों पर विचार कर उसी दिषा में अग्रसर होने को कहा गया। आरएसएस ने उत्तराखंड के प्रवासी जनजातीय समुदाय के लोगों को जोड़ने के लिए भी अभियान चलाया था, जो राजपूत राजा महाराणा प्रताप को आराध्य मानते हैं, लेकिन हाल के वर्शो में वे हिंदू परंपरा से हट गए हैं।

आरएसएस के सरकार्यवाह सुरेष भैयाजी जोषी ने बताया, 'हिंदू धर्म से जुड़े कार्यक्रमों में श्रोताओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। इससे साफ है कि इस समुदाय में एक होने की दिलचस्पी बढ़ रही है।'

इस बार प्रतिनिधि सभा में प्रतीक नगालैंड की रानी गेदिनलियू को बनाया गया, जिन्होंने ब्रिटिष हुकूमत के खिलाफ लड़ाई लड़ी और जनजातीय समुदायों के लोगों के ईसाई धर्मांतरण का विरोध किया। जाहिर है कि संघ के लिए देष के उत्तर–पूर्व हिस्से प्राथमिकता सूची में अहम है।

आफ्रिका से गांधी के भारत लौटने के सामान ही धर्मान्तरित हिन्दुओं की घर वापसी स्वागतेय

बीबीसी में प्रकाषित एक लेख है, जिसका षीर्शक हैः 'घर वापसी' जिसने बदल दिया भारत का इतिहास

नौ जनवरी 1915 को जब अरबिया जहाज़ ने मुंबई के अपोलो बंदरगाह को हुआ, उस समय मोहनदास करमचंद गांधी की उम्र थी 45 साल.

12 साल से उन्होंने अपनी जन्म भूमि के दार्षन नहीं किए थे.

(इसी प्रकार हमारे अनेक न्दिू धर्मी लो धर्मान्तरित हो गए प्रलोभन या अन्य प्रकार डरने के कारण और वे गांधी के सामान ही अपने हिन्दू परिवारों से दुरी बनाये रखे)

जब गांधी जहाज से उतरे तो उन्होंने एक लंबा कुर्ता धोती और एक काठियावाड़ी पगड़ी पहनी हुई थी. उनसे मिलने आए लोगों ने या तो यूरोपियन सूट पहने हुए थे या फिर वो राजसी भारतीय पोषाक में थे.

(इसके विपरीत जब धर्मान्तरित हमारे लोग यूरोपियन सूट पहने हुए लोगों और विदेषी भाशा रहन सहन वालों के बीच चले गए थे.)

इसी समारोह में जब गांधी की तारीफों के पुल बांधे जा रहे थे तो उन्होंने बहुत विनम्रता से कहा था, ''भारत के लोगों को षायद मेरी असफलताओं के बारे में पता नहीं है. आपको मेरी सफलताओं के ही समाचार मिले हैं. लेकिन अब मैं भारत में हूं तो लोगों को प्रत्यक्ष रूप से मेरे दोश भी देखने को मिलेंगें. मैं उम्मीद करता हूं कि आप मेरी गलतियों को नजरअंदाज करेंगे. अपनी तरफ से एक साधारण सेवक की तरह मैं मातृभूमि की सेवा के लिए समर्पित हूं.''

(इसी प्रकार घर वापसी मुहीम द्वारा लौटे हमारे लोग महात्मा गांधी जैसे ही धुशि जाहिर करते हैं तो हिन्दू विरोधी समाचार जगत और नेताओं के पेट में दर्द खयों होने लगता है?)
महात्मा गांधी के पौत्र और उनकी जीवनी लिखने वाले राजमोहन गांधी कहते हैं, ''गोखले के कहने पर गांधी बंबई के गवर्नर विलिंगटन से मिले थे और

उनके कहने पर उन्हें ये आष्वासन दिया था कि सरकार के खिलाफ कोई कदम उठाने से पहले वो गवर्नर को सूचित करेंगे. षायद सरकार भी गांधी को अपने खिलाफ नहीं करना चाहती थी, इसलिए उनके भारत आने के कुछ समय के भीतर ही उसने दक्षिण अफ़्रीका में की गई उनकी सेवाओं के लिए कैसरे–हिंद के खिताब से नवाजा था.''

(क्या इसका मतलब है की गांधी जी के भारत लौटने के पीछे सुभासचन्द्र बॉस तथा क्रांतिकारियों चन्द्रषेखर आजाद, भगत सिंह आदि से बैक फुट में आचुकी ब्रिटिष हुकूमत की कोई चाल बाजी थी? लार्ड मौन्टबेटन ने जानते हुए भी एडविना और नेहरू के रोमांटिक सम्बन्धों को कैसे सहन किया? क्या 370 धारा और कष्मीर में युद्ध विराम के पीछे माउंट बेटन का हाथ नहीं था? इस तथ्य का रहश्योद्घाटन मैंने अपनी angreji में लिखी पुस्तक के अध्याय 5 में किया है। पुस्तक का नाम है'' एक्कारसेड एंड जिहादी नेबर''.

गमछा नुमा धोती ही सिर्फ पहनने वाले साधु जैसे महात्मा गांधी को पाष्चात्य सभ्यता वाले नेहरू ही कैसे पसंद आये? मौलाना आज्ज़द से लेकर सरदार पटेल तक की पीठ में छुरा नेहरू के लिए किस अहिंसावादी ने भोंका था?)

गाधी ने गोखले की सलाह का पालन करते हुए पहले भारत के लोगों को जानने कि कोषिष षुरू की, उन्होंने तय किया कि वो पूरे भारत का भ्रमण करेंगे और वो भी भीड़ से भरे तीसरे दर्जे के रेल के डिब्बे से.

(इसका मतलब यह हुआ कि वे भारत की आजादी के उद्देष्य से लौटे नहीं थे।)

गोखले के षोक समारोह में भाग ले कर वो वापस षांति निकेतन लौटे जहां टैगोर ने उन्हें पहली बार महात्मा षब्द से संबोधित किया. वहां पर उन्होंने काषी विष्वनाथ मंदिर में दक्षिणा देने से इंकार कर दिया.

एक पंडे ने उनसे कहा,''भगवान का ये अपमान तुझे सीधे नर्क में ले जाएगा.'' इसके बाद गांधी तीन बार बनारस गए लेकिन उन्होंने एक बार भी विष्वनाथ मंदिर के दर्षन नहीं किए.

राश्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर राजपथ से प्रधानमंत्री के ''रन फॉर यूनिटी'' भाशण का मूल पाठ

मेरे साथ आप लोग बोलेंगे, मैं कहूंगा सरदार पटेल आप लोग कहेंगे अमर रहे, अमर रहे.....सरदार पटेल, (अमर रहे) सरदार पटेल, (अमर रहे) सरदार पटेल (अमर रहे)।

मंच पर विराजमान मंत्रिपरिशद के हमारे वरिश्ठ साथी, आदरणीय सुशमा जी, आदरणीय वैंकेया जी, श्रीमान रविषेकर जी, दिल्ली के लेपिटनेंट गवर्नर और सारे नौजवान साथियों,

आज सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म जयंती का प्रेरक पर्व है। जो देष इतिहास को भूला देता है, वह देष कभी भी इतिहास का निर्माण नहीं कर सकता है। और इसलिए एक जीवंत राश्ट्र के लिए, एक आषा–आकांक्षाओं के साथ भरे हुए राश्ट्र के लिए सपनों को सजा कर बैठी युवा पीढ़ी के लिए अपने ऐतिहासिक धरोहर सदा–सर्वदा प्रेरणा देती है और हमारे देष ने इस बात को भी कभी भी भूलना नहीं होगा कि हम इतिहास को विरासतों को अपने वैचारिक दायरे में न बांटे। इतिहास पुरूश, राश्ट्र पुरूश इतिहास की वो धरोहर होते हैं जो आने वाली पीढ़ियों के लिए नया उमंग और नया उत्साह भरते हैं।

आज श्रीमती इंदिरा गांधी जी की भी पुण्य तिथि है। सरदार साहब का जीवन देष की एकता के लिए आहूत हो गया। बैरिस्टर के नाते, सफल बैरिस्टर गांधी के चरणों में

समर्पित हो गए, और हिंदुस्तान के किसानों को आजादी के आंदोलन में जोड़कर के उन्होंने अंग्रेज सल्तनत को हिला दिया था। अंग्रेज सल्तनत ने भांप लिया था अगर देष का गांव, देष का किसान आजादी के आंदोलन का हिस्सा बन गया तो अंग्रेज सल्तनत की कोई ताकत नहीं है कि वो आजादी के दीवानों के खिलाफ लड़ाई लड़ सके।

कभी–कभी जब हम रामकृश्ण परमहंस को देखते हैं तो लगता है कि स्वामी विवेकानंद के बिना रामकृश्ण परमहंस अधूरे लगते हैं। वैसे ही जब महात्मा गांधी को देखते हैं तो लगता है कि सरदार साहब के बिना गांधी भी अधूरे लगते थे। यह एक अटूट नाता था। यह अटूट जोड़ी थी जिस दांडी यात्रा ने हिंदुस्तान की आजादी को नया मोड़ दिया था।

पूरे विष्व को सबसे पहले ताकतवर मैसेज देने का अवसर दांडी यात्रा में से पैंदा हुआ था। उस दांडी यात्रा में एक सफल संगठक के रूप में, एक कार्यकर्ता के रूप में सरदार साहब की जो भूमिका थी, वो बेजोड़ थी। और महात्मा गांधी ने दांड़ी यात्रा की पूरी योजना सरदार साहब के हवाले की थी। हम कल्पना कर सकते थे कि देष की आजादी आंदोलन के अलग–अलग पढ़ाव में, महात्मा गांधी के साथ रहकर के सरदार साहब की कितनी अहम भूमिका रही थी और आजादी के बाद सरदार साहब का लाभ देष को बहुत कम मिला। बहुत कम समय तक हमारे बीच रहे। लेकिन इतने कम समय में सरदार साहब ने अंग्रेजों के सारे सपनों को धूल में मिला दिया था, चूर–चूर कर दिया था। अपनी दूर दृश्टि के द्वारा, अपने कूटनीति सामर्थ्य के द्वारा, अपनी राश्ट्र भक्ति के द्वारा। अंग्रेज चाहते थे कि देष आजाद होने के बाद सैकड़ों टूकड़ों में बिखर जाए। आपस में लड़ते रहे, मर मिटते रहे, यह अंग्रेजों का इरादा था, लेकिन सरदार साहब ने अपनी कूटनीति के द्वारा, अपनी दीर्घ दृश्टि के द्वारा, अपने लोखंडित मनोबल के द्वारा साढ़े पांच सौ से भी अधिक रियासतों को एक सूत्र

में बांध दिया। जिसे सम्मान देने की जरूरत थी, उसे सम्मान दिया जिसको पुचकारने की जरूरत थी, उसको पुचकारा और जिसको आंख दिखाने की जरूरत थी उसको आंख दिखाने में भी सरदार पटेल ने कभी हिचक नहीं की, संकोच नहीं किया। उस सामर्थ्य का परिचय दिया था। और उसी महापुरूश ने, एक प्रकार से आज जब हिंदुस्तान देख रहे हैं वो एक भारत का सफलदृश्टा उसके नियंता सरदार पटेल को देष कभी भूल नहीं सकता है।

षताब्दियों पहले इतिहास में चाणक्य का उल्लेख इस बात के लिए आता है कि उन्होंने अनेक राजे–रजवाड़ों को एक करके, एक सपना लेकर के, राश्ट्र के पुनरूद्धार का सपना देकर के सफल प्रयास किया था। चाणक्य के बाद एस महान काम को करने वाले एक महापुरूश हैं, जिनका आज हम जन्म जयंती पर्व मना रहे हैं, वो सरदार वल्लभ भाई पटेल हैं। लेकिन यह कैसा दुर्भाग्य है, जिस व्यक्ति ने देष की एकता के लिए अपने आप को खपा दिया था, आलोचनाएं झेली थी, विरोध झेले थे। अपने राजनीतिक यात्रा में रूकावटें महसूस की थी। लेकिन उस लक्ष्य की पूर्ति के मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए थे, और वो लक्ष्य था भारत की एकता। उसी देष में, उसी देष में, उसी महापुरूश की जयंती पर, 30 साल पहले भारत की एकता को गहरी चोट पहुंचाने वाली एक भयंकर घटना ने आकार लिया। हमारे ही अपने लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। और वो घटना किसी सम्प्रदाय के लोगों के सीने पर लगे घाव की नहीं थी, वो घटना भारत के हजारों साल के महान व्यवस्था के सीने पर लगा हुआ एक छूरा था, एक खंजर था, भयंकर आपत्तिजनक था। लेकिन दुर्भाग्य रहा इतिहास का कि उसे महापुरूश के जयंती के दिन यह हो गया। और तब जाकर के देष की एकता के लिए, हम लोगों ने अधिक जागरूकता के साथ, अधिक जिम्मेवारी के साथ। सरदार साहब ने हमें एक भारत दिया, श्रेश्ठ भारत बनाना हमारी जिम्मेवारी है। 'एक भारत श्रेश्ठ भारत'

इस सपने को पूरा करने के लिए भारत की जो महान विरासत है वो विरासतें विविधता में एकता की है। उस विविधता में एकता की विरासत को लेकर के, जातिवाद से परे उठकर के, भाशावाद से परे उठकर के, सम्प्रदायवाद से परे उठकर के एक भारत समृद्ध भारत, ऊंच–नीच के भेदभाव से मुक्त भारत यह सपने को साकार करने के लिए आज से उत्तम पर्व नहीं
हो सकता, जो हमें आने वाले दिनों के लिए प्रेरणा देता रहे।

और युवा पीढ़ी आज इस राश्ट्रीय एकता दिवस पर पूरे हिंदुस्तान में Run for Unity के लिए दौड़ रही है। मैं समझता हूं यह हमारा प्रयास एकता के मंत्र को निरंतर जगाए रखना चाहिए। और हमारे षास्त्रों में कहा है राश्ट्रयाम जाग्रयम वयम..हर पल हमें जागते रहना चाहिए अपने सपनों को लेकर के, सोचते रहना चाहिए, उसके अनुरूप काम करते रहना चाहिए तभी संभव होता है। भारत विविधताओं से भरा हुआ देष है। अनेक

विविधताओं से भरा हुआ देष है। विविधता में एकता यही हमारी विषेश्ता है। हम कभी एकरूपता के पक्षकार नहीं रहे। हम विविधताओं से भरे हुए रहते हैं। एक ही प्रकार के फूलों से बना गुलदस्ता और रंग–बिरंगे फूलों से बने गुलदस्ते में कितना फर्क होता है। भारत उन विषेशताओं से भरा हुआ देष है, उन विषेशताओं को बनाते हुए एकता के सूत्र को जीवंत रखना, एकता के सूत्र को बलवंत बनाना यही हम लोगों का प्रयास है और यही एकता का संदेष है।

राज्य अनेक राश्ट्र एक,
पंथ अनेक लक्ष्य एक,
बोली अनेक स्वर एक,
भाशा अनेक भाव एक,
रंग अनेक तिरंगा एक,
समाज अनेक भारत एक,
रिवाज अनेक संस्कार एक,
कार्य अनेक संकल्प एक,
रहा अनेक मंजिल एक,
चेहरे अनेक मुस्कान एक,

इसी एकता के मंत्र को लेकर यह देष आगे बढ़े।

मैं हिन्दू और मुस्लिम दोनों हूँ : सलमान खान

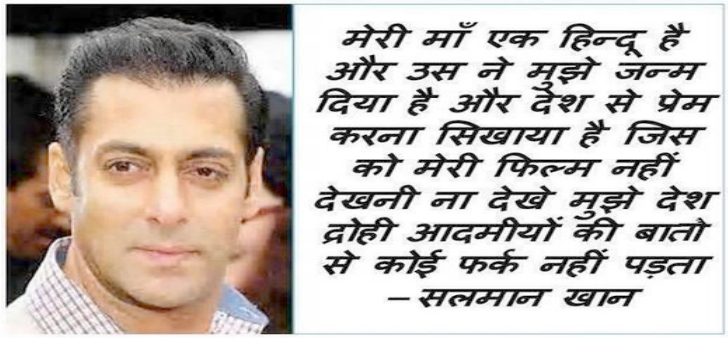

जोधपुर। सलमान जब कोर्ट पहुंचे तो वहां किसी अन्य मामले की सुनवाई चल रही थी। इंतजार में सलमान कोर्ट के एक कोने में खड़े हो गए। थोड़ी देर बाद उनके मामले की सुनवाई षुरू हुई तो वह जज अनुपमा बिजलानी के सामने आए और सिर झुकाकर अभिवादन किया।

जज अनुपमा बिजलानी ने सलमान खान से पूछा – आपकी जाति क्या है? उन्होंने अदालत, अपने वकील और अंगरक्षकों को हैरानी भरी निगाहों से देखा और कुछ सेकेंड बाद अदालत में किसी ने उन्हें सुझााया कि वह मुस्लिम बताएं। लेकिन सलमान ने जवाब दिया – मैं हिन्दू और मुस्लिम दोनों हूँ : मैं भारतीय हूँ , फिर कोर्ट ने पूछा कि भारतीय तो सभी हैं, तो सलमान ने जवाब दिया कि, मेरी मां हिंदू है, पिता मुस्लिम हैं, इसलिए मैं इंडियन हूं,

मजिस्ट्रेट– क्या नाम है?
सलमान – सलमान सलीम खान
मजिस्ट्रेट– पिता का नाम?
सलमान – सलीम
मजिस्ट्रेट– आपकी उम्र?
सलमान – 49 साल
मजिस्ट्रेट– पता?
सलमान – मुंबई में रहता हूं।

मजिस्ट्रेट– पूरा पता बताओ?
सलमान – गैलेक्सी अपार्टमेंट, (धीरे से रोड का नाम लिया और फिर बोले) मुंबई–5
मजिस्ट्रेट– क्या काम करते हो?
सलमान – एक्टर हूं।
मजिस्ट्रेट– आपकी कास्ट?
सलमान – (इधर–उधर देखते रहे। चेहरे के भाव भी ऐसे थे जैसे कुछ नहीं समझे। इस बीच उनके वकील श्रीकांत षिवदे ने कहा योर कॉस्ट। पीछे से कोई बोला मुस्लिम, लेकिन सलमान चुपचाप खड़े रहे। इस पर ष्विदे ने एक बार फिर कहा अपनी जाति बताओ) इसके बाद सलमान ने कहा कि हिंदू और मुस्लिम बोथ (दोनों) हैं। पिता मुस्लिम और मां हिंदू।

बता दें कि सलमान के पिता और स्क्रिप्ट राइटर सलीम खान ने साल 1964 में सुषीला चरक से षादी की थी। सुषीला का जन्म मराठी हिंदू परिवार में हुआ था। सलीम खान से षादी के लिए उन्होंने इस्लाम कुबूल करते हुए अपना नाम सलमा रख लिया था। हालांकि, सलीम खान की दूसरी पत्नी हेलन धर्म से क्रिष्चियन हैं।

घर को मिनी इंडिया कहते हैं सलमान खान

सलमान खान के बारे में कहा जाता है कि वे अपने घर को मिनी इंडिया कहतक हैं। दरअसल, वे ऐसा इसलिए कहते हैं, क्योंकि उनके परिवार में हिंदू, मुस्लिम और क्रिष्चियन सभी धर्मो के लोग हैं और सभी एक ही छत के नीचे रहते हैं।

अनुक्रम

1. **ज्ञान प्राप्तिः गुड़गांव का कीकर बनाम बोध वृक्ष** 01-12
2. **वाड्रा के हाथों में अलाउद्दीन चिराग** 13-24
3. **अरबपति गरीब किसान** 25-36
4. **बंजर भूमि और इराक के टैंकरो ने सोना किसके लिए उगला?** 37-46
5. **वाड्रा से प्रष्नः आदमी को कितनी जमीन चाहिए?** 47-59
6. **डी.एल.एफ.–वाड्रा के बहीखाते कानून की आंखों में झोंकने के लिए** 60-73
7. **राहुल प्रियंका के समर्थकों के बीच पोस्टर युद्ध** 74-86
8. **फाइव स्टार होटल में सात फेरे** 87-91

Printer & Publisher
Commercial Services
Behind Sindhi School,Ramsagarpara,
RAIPUR, C.G.- 492001, India.
Mo.No. - 09425207574
First Edition: 2014

DLF-Vadra: Bhrasht Tantra
Language: Hindi,
Size: 9"x5.5"
Pages 100
Hard bound cover
Price: Rs.175/- + Courier Charges Rs. 50/-
Offer Price: Rs.100/- + Courier Charges Rs. 50/-

ISBN: 978-81-930512-1-4

।। भूमिका ।।

श्री प्रेमेंद्र अग्रवाल अर्धषती से भी अधिक समय से पत्रकारिता में सक्रिय हैं। युवावस्था में अपने हिन्दी साप्ताहिक का दिल्ली से प्रकाषन कर विद्यार्थी जगत व राजनीतिक गलियारों में इन्होंने खासी हलचल मचा दी थी। उनकी गिनती राश्ट्रीय स्तर के युवा पत्रकारों में होती थी। परंतु मध्यवित्त परिवार के दायित्व और छत्तीसगढ़ का मोह प्रेमेंद्र जी को फिर छत्तीसगढ़ खींच लाया। 1950 के दषक में भारतीय जनसंघ के संस्थापक नेताओं से उनका व्यक्तिगत परिचय था। प्रान्त के वरिश्ठ जनसंघ के नेताओं से उनके आत्मीय संबंध रहे। सन् 1977 में जनसंघ के जनता पार्टी में विलय और भारतीय जनता पार्टी के नाम से उसके पुनर्नामकरण के समय तक ये संबंध बने रहे। परंतु भाजपा के सत्ता में आने के बाद उसके नये नेताओं की आसक्तियां और सरोकार बदलते चले गये। अन्य अनेक राश्ट्रवादी राजनीतिक–सांस्कषतिक कार्यकर्ताओं और लेखकों, पत्रकारों की भांति प्रेमेंद्र जी भी दरकिनार होते गये। नये सत्ताभोगियों को ऐसे असंख्य तपस्वियों के अवदान के प्रति सम्मान की भावना नहीं रह गई तो इनके जैसे राश्ट्र–समाज के सचेतकों को भी सत्ता के उन सूरजमुखियों की परवाह नहीं रह गई। परंतु जो विचार और संस्कार उस पीढ़ी के साधकों में गहराई तक घर कर गये थे वे उन्हें उन मूल्यों के लिए जूझते रहने की जिजीविशा देते रहे, जो डॉ. ष्यामा प्रसाद मुखर्जी, प्रोफेसर बलराज मधोक, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी, जगन्नाथ राव जोषी प्रभष्त भविश्यदश्टा राजनायकों ने गढ़े थे। राश्ट्रवादी साधकों के साथ भारतीय समाजवादी चिंतनधारा के उन्नायक जयप्रकाष नारायण और डॉ. राममनोहर लोहिया के साथ हुए संपर्क, संवाद और संयुक्त संघर्श की रणनीति से भारतीय राजनीति में गैर–कांग्रेसी दलों का एकीकरण हुआ, जिसके परिणामस्वरूप 1960 के दषक के मध्य में अनेक राज्यों में गैर'कांग्रेसी संयुक्त सरकारों की गठन हुआ। दुर्भाग्य से पं. दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. राममनोहर लोहिया का जीवन छोटा रह गया। दीनदयाल जी की तो मुगलसराय के समीप ट्रेन में हत्या ही कर दी गई।

आज उन सब का स्मरण इसलिए भी आवष्यक हो गया है कि केंद्र सहित अनेक राज्यों में भारतीय जनता पार्टी सत्ता में पहुंच गई है। श्री नरेंद्र मोदी के नेतष्त्व में केंद्र सरकार ने उन समस्त घोटालों और राजनीतिक प्रभाव से किये गये अनाचारों की जांच षुरू कर दी है।

उनमें एक चर्चित प्रकरण है यू.पी.ए. प्रमुख और कांग्रेस की सूत्रधार श्रीमती सोनिया गांधी के दामाद श्री राबर्ट वाड्रा द्वारा राजनीतिक प्रभाव से संचित किये गये ध न की। वह सब काले धन के महासागर में तैरते हिमखंड के मात्र एक छोटे से कंगूरे की भांति दिख रहा है। वह है श्री राबर्ट वाड्रा का देष की राजधानी से सटे गुड़गांव का डी.एल.एफ भूमि प्रकरण। इस प्रकरण के आर–पार अनेक चौंकाने वाले कारनामों की श्रृंखला है।

वरिश्ठ राश्ट्रवादी पत्रकार और मेरे पुराने आत्मीय मित्र प्रेमेंद्र अग्रवाल ने इन तमाम प्रकरणों का परस्पर गुंथा हुआ विवरण अपनी इस पुस्तक में दिया है। प्रेमेंद्र जी जानते हैं कि फिलहाल सत्ता से बाहर होने के बावजूद लगभग छः दषकों तक स्वतंत्र भारत के भाग्य—विधाता रहे नेहरू—गांधी परिवार के हाथों में आज भी कितनी असीम षक्तियां हैं। कितने प्रचुर संसाधन हैं। कितने षातिर दिमाग हैं। उनसे संभावित खतरों से भी प्रेमेंद्र अनजान नहीं हैं। फिर भी उन्होंने यह विस्फोटक पुस्तक लिखने का जोखिम उठाया है। श्री प्रेमेंद्र मानते हैं कि कुछ लोग अपने भाग्य में सुख, सुविधा और सत्ता का पट्टा लिखवाकर आते हैं, जबकि राश्ट्र और समाज के हित को अपना अभीश्ट मानने वाले कुछ मसिजीवी निरंतर संघर्श तथा जोखिमों की रक्ताभ तूलिका से लिखा गया मुकद्दर संजो कर चलते हैं। जिन्हें भारत राश्ट्र राज्य से थोड़ा भी अनुराग है वे इस पुस्तक को अवष्य पढ़ने का प्रयास करें। उन्हें कुछ प्रेरणा ही मिलेगीं दृश्टि का विस्तार भी होगा। भाई प्रेमेंद्र को बधाई के साथ ही उनके राश्ट्रप्रेम का अभिवादन।

— रमेष नैयर

पंजाब,दिल्ली और छत्तीसगढ़ में हिन्दी व अंग्रेजी के अनेक प्रतिश्ठित अखबारों के संपादक व छत्तीसगढ़ अकादमी के संचालक रहे श्री लेखक और वरिश्ठ पत्रकार ...र ट्रिब्यून, हितवाद, क्रानिकल, ...भारत, नई दुनिया, संड़े आब्जर्वर आदि प्रतिश्ठित ... के पाठक उनसे भलीभांति परिचित हैं। राजनीतिक जगत भी उनसे अपरिचित नहीं है।

आप कई विष्वविद्यालय की कार्यपरिशद और भारतीय फिल्म एवं टेलिविजन संस्थान पुणें की गवर्निंग कौंसिल के सदस्य रहे। पत्रकारिता के प्रतिश्ठित गणेष षंकर विद्यार्थी सम्मान से अलंकृत!

— प्रकाषक

Synopsis: Sunanda Tharoor is accursed, she is accused to ruin her life and she is victim due to all of us.

Sunanda Pushkar just few hours before her death tweets and sends sms to the senior journalists and wants to meet them to disclose conspiracy of **ISI, IPL and Dubai Mafias**. **Nalini Singh** as first witness speaks out. Sunanda's death flames touch **Leela Palace to hotel Aman**.

Shashi Tharoor when in **UN** doesn't sit on the gold bar loaded truck running from Iraq but saves the **Congress and Sonia Gandhi** from the **Oil for Food scam** and in reward gets the ministerial berth.

Mehr Tarar tweets for her country's ISI as well as for her latest lover Shashi Tharoor. What type of this **love Jihad** is? Her spying eye moves toward Omar also. **Dr Gupta** of AIIMS raises finger on Ghulam Nabi Azad beside Mr. Tharoor. Mehr follows the path of Arrosa Alam who has affair with Capt Amrinder Singh.

Why is Dubai focal point? **Sunny Varkey** nearer to Tharoor and **Bill Clinton** presents Sunanda Pushkar to Shashi Tharoor in Dubai. **Sex is a game** for high society celebrities and politicians.
Minister of State in the PMO, **Jitendra Singh** opens the debate on the **Article 370**. **Iraq Afghan terror** looms on Kashmir. PM Modi says a good neighbour is important for a country's happiness.

Sheikh abdullah's and Nehru's present heirs remind us: "Nehru's romance with **Edwina** gave birth to Art 370 and **PoK:** Let the priests go to Mecca, we will go to UK?

"We're a tiny 3% in the valley; even then we remain refugees in our own nation because we are not vote bank. Is it not bloody paw on the back of secular structure of our India? Kashmir a paradise lost can be found again to abrogate Article 370" —Pain of **Kashmiri Pundits**

When read conflicting **tweets** between Shashi, Sunanda and Mehr it seems and reach the final page: Shashi Tharoor's **sexual frustration leads him** into an affair with the Mehr Tarar to leave ill Sunanda.

Preface

This book reflects to a sad end to a sad life of a daughter of Kashmir who voiced for the removal of Article 370. This Article has becomes the source for separatists and jihadi neighbour to spread bloodbath and communalism in Kashmir. Due to this Kashmiri Pandits become refugees. What former Union Minister's better half had said about his controversial link with Pakistani woman journalist; what she wanted to disclose few hours before his death? Mr. Tharoor is praising Prime Minister, though he called him Hitler's Goebbels before the mysterious death of his wife. What is the reason behind this change? Lesson to women is–"stay away from philanderers and Casanovas". Womanizers may become threat to the security of the nation. Why is Gandhi-Nehru surname dust more harmful than the dust....?

Target audience for this book is all nationalists who think 'India is first'. Without independence what type of India was? Congress leader Mr. Tharoor in the video quotes ".....after all it was Mahatma Gandhi who declared before independence that sanitation was more important than independence."

How many books are on Article 370 and rehabilitation of Kashmiri Pandits? There is a need for debate on Article 370 and successfully rehabilitation of Kashmiri Pandits. Iraq Afghan terror looms on Kashmir in the name of Islamic Jihad.

Accursed Sunanda was a common woman with controversial character. In this book Shashi Tharoor and late Sunanda Pushkar are medium not destination. These are the container in the battery of this book. Which are the cells? The answer is the opening batsman in this book.

Main source of this book is not only Accursed Sunanda Case but also the Gandhi-Nehru and Sheikh Abdullah dynasty. Mahatma Gandhi gifted Nehru and Nehru gifted Sheikh Abdullah. Due to both dynasties Jihadi neighbour Pakistan executing bloody dance in the name of Kashmir after kidnapping 1/3rd of Kashmir (PoK). Mr. Modi's speeches related to Kashmir in the Lok Sabha Election inspired the author to write this book.

www.http://newsanalysisindia.com/ and other websites, newspaper and news channels are the resources which are used to write this book. Dr. Subramanian Swamy's statements are also much helpful for this. We are thankful to all of these. The author is neither the wing of Government nor keeping a

letterhead of any party or NGO. So this author is writing his 'dil ki baat' in this book to share his opinion with other known and unknown co-travellers to serve the nation.

Writing this book took hardly three months. The author is satisfied to write this book. Earning the good wishes of the viewers instead of monetary earning is our motto. Our intention is to share the book-contents with the Kashmiris also.

As a human being we share here few instances which help us for the matter of his book: (1) Accursed Sunandas's tweets against the Article 370, corrupt politicians involvement in IPL, ISI's net to catch the sexy politicians via woman journalists (2) Seeing the panic condition of Kashmiri Pandits in the streets of Delhi where our great leaders reside

Advice: First of all please read one page synopsis and two pages preface of this book. Then go to chapter 1, 2 , 5 and the last 14 respectively. This way inspires the readers to read the remaining chapters, and recommend others for the book.

Three New Facts beside others disclosed in the book:
1. Art 370 and PoK are the result of Lord Mountbatten's hided enmity with Nehru due to his romance with Edwina
2. Why is Ram Lala still under Tent in Ayodhya?
3. How the truck loaded gold bars related to Oil for Food kickback toured from Iraq to Jordan? Few % of these gold bars sold in India besides other places!
4. Russian poison used by the ISI man to kill Sunanda as this poison was used in the food prepared for Lal Bahadur Shastri in his residence.

Theme: Accursed is full of conscientious people who can't seem to find their own consciences. It's the sort of inextricable presence of evil in good Kashmiri Muslims especially which they don't acknowledge and which they try to hide. Kashmiri Pundits have become refugees in their own country due to ISI spying, infiltrations of terrorists and the presence of Article 370.

Denial of removing Article 370 encourages separatism. Still presence of this Article becomes hurdles for the progress of the people of Jammu and Kashmir results in what we may call "incursions from the unconscious, or incursions from, let's say, the other side. That which is denied is emerging. So we thought of this in terms of terrorists' jihad, and these forces from the unconscious, so to speak, erupting in this placid community.

Printer & Publisher
Commercial Services
Behind Sindhi School,Ramsagarpara,
RAIPUR, C.G.- 492001, India.
Mo.No. - 09425207574
First Edition: 2014

Accursed & Jihadi Neighbur
Language: English
Size: 9"x5.5"
Pages 202
Hard bound cover
Price: Rs.~~250/-~~ + Courier Charges Rs. 50/-
Offer Price: Rs.150/- + Courier Charges Rs. 50/-

ISBN: 978-81-930512-0-7

Part - I

Chapters	Page
1. The Accursed Daughter of Kashmir	01-15
2. Death flames touched 5 Star Leela to Hotel Aman & Oil for Food	16-30
3. Art 370 Sunanda to Supreme Court ?	31-45
4. Iraq Afghanistan Terror looms on Kashmir	46-59
5. Let the priests go to Mecca, we will go to UK	60-75
6. Hindu Muslims restore 400-year-old temple in Valley, Why not Ram Janmbhumi Temple?	76-88
7. Kashmir a paradise lost can be found again to abrogate Art 370	89-103

Part - II

8. Mysterious Death of Sunanda	104-117
9. AIIMS vs AIIMS	118-136
10. ISI Spying and Exporting Terrorism	137-152
11. Sexism vs Sexism in IPL Controversy	153-165
12. Mehr Tarar	166-175
13. Sunanda & Marilyn Manore	176-189
14. Tharoor follows UK's War Minister Profumo	190-202

Previous book of author: Silent Assassins: Jan 11, 1966 (Assassination of Lal Bahadur Shastri): Freely readable at:
http://books.google.co.in/books/about/Silent_Assassins_Jan11_1966.html?id=fQoVBQAAQBAJ&redir_esc=y
This book brings new facts, evidences and records which show that poisoning to second prime minister of India, Lal Bahadur Shastri was happened in Tashkent. Mysterious death of Shastri was a state crime not only for India but also for USSR, Pakistan, US, UK and China especially who were directly or indirectly involved in Tashkent Summit. They are silent assassins. We should know: How J F Kennedy's assassination cleared the way for the death of Shastri. Everybody has read arrest of only one Kremlin chief Cook Ahmet Sattarov. This is half truth. There was the arrest of Ahmet and other members of his team who raised finger on the arrested Indian cook for poisoning. Who was that Indian cook? Was he an employee of Indian Embassy in Mascow ? Where he went to hide himself? More questions and answeres are in this book.

NOTE: Toxic politics: The seceret history of Russian poison supply by ISI to contract killers (Supari Killers) Russian & Indian cook for poising Lal Bahadur Shastri in food at Taskent and now the same happened to Sunanda Puskar as mentioned in the book: "Accursed & Jihadi Neighbour"

Chapt- 1: Page- 1: Books written on Shastri by Kuldip Nayar, C P Srivasta and Ram Chandra Guha have not a single word or photo of Russian cook Ahmet Sattarov who was arrested by KGB on the charges of giving poison to Shastriji. ..You have read arrest of only one Kremlin chief Cook Ahmet Sattarov; truth is there was the arrest of more (Four Russian+One Indian cook)...

Page-2 : In 1990, working in the archives of the Tashkent UKGB over the article on the emergence of the Soviet drug, Sergei Turchenko accidentally stumbled upon the thin red folder viewing still secret at the -time of documents, entitled: "On the assassination of the Prime Minister of India Lal Bahadur Shastri

January 11, 1966": There was in the front page: "the chief conspirator" - senior captain Kremlin Akhmeta Sattarovicha SATTAROVA....

Mark Tsybulsky (USA) has taken an interview of Ahmet Sattarov about Vladimir Vysotsky and the same is published in June 14, 2011. It means perhaps Sattarov is still alive and active in his profession.....

Page-3: **«Poisoners Prime Minister of India»** According to Ahmet Sattarov despite the fact that they were very fast, as they said, was justified, the foreign press dubbed them «Poisoners Prime Minister of India». But in USSR newspapers including TASS, the incident nothing caused a noise. When they were driven out Bulmenya wishing to get their photos literally hung on lampposts, all the roads were filled with media representatives from around the world,".....

Page-4: **Indian cook poison Shastri: Ahmet:** After some time in the basement caused the cook Indian, who prepared the dish of Indian cuisine for banquets. Ahmet Sattarov and his team believed that the poisoning Shastri - the work of that man, because in each other were confident, as they said, all one hundred percent-

Above mentioned version of Ahmet Sattarov indicates:

[1] Ahmet Sattarov did not deny the poisoning to Shastriji.

[2] Ahmet and his team suspected Indian cook who was the personal cook of then Indian ambassador in Moscow. Ahmet and other arrested members of his team raised finger on the arrested Indian cook for poisoning Shastri. ...Who was that arrested Indian cook? Where he is since Jan 11, 1966?.....

Page-5: Shastri's death finding committee was formed by then USSR government and that committee was sent from Moscow to Tashkent for investigation as Ahmetr Sattarov with other chefs of his team was sent for cooking.....Arrested cooks were released before forming that committee and before finding its report. Why?...Even though arrested all cooks were released by the KGB, suspense is still.....Arrested cooks would have no personal enmity with Shastriji. Ahmet Sattarov had also no criminal record.... Whoever might be culprit-Russian or Indian cook that was hired by contract killers? Even that nobody wanted and now wants to take even one step towards finding the forces behind the killing. Hanging one culprit is not important. Important is to make nude the mighty monster behind the killer.

That may be CBI, ISI, KGB, or political giant of India or foreign country. It was and still is the matter of investigation. It is not the matter of hiding the facts.

Page-6 : In January 1966 in Tashkent held a meeting between the heads of governments of India and Pakistan..... It should be noted that the European protocol was very different from the Muslim and Buddhist. Most expensive dishes were prepared, among which were found in the reserve of the Ministry of Trade of Uzbekistan dinner sets the emir of Bukhara

Page-7: After the meeting at which the armistice was signed, a banquet was held "a-buffet". Upon completion of the entire staff, valivshiysya down from fatigue, assembled to congratulate on the successful conclusion of the meeting and hand over government certificates. Ahmet and some other waiter in Moscow pledged to submit to government awards. Happy, they all went to the hotel.....In the morning Ahmet was awakened by an officer of the KGB and reported on the death of the Prime Minister of India Lal Bahadur Shastri. KGB officer said: "there is suspicion that the Indian prime minister had been poisoned,"

At first Ahmet Sattarov thought this joke, but when he heard the noise throughout the hotel, he realized how things seriously.

After questioning, Ahmet Sattarov said "Me and three other headwaiters Kremlin, among whom I was a senior, put in "Seagull" and immediately handcuffed. All this was accompanied by flashes of cameras of the international press. We have served the four most senior officials attending the meeting, so immediately came under suspicion. "

According to him they were brought to the village Bulmenya - it is about thirty kilometers from the city, put in the basement three-storey mansion, forbidden to talk to each other, placed security.

After some time in the basement led an Indian cook who prepared Indian cuisine for the banquet. They all believed that the poisoning Shastri – the handiwork of the man, because in each other were confident as they say, one hundred percent.

The strain was so great that one of his colleagues whiskey before their eyes were covered with gray hair, but Ahmet still occasionally stutter. For six hours they spent in the basement. Then finally opened the door and entered a delegation led by Kosygin. Apologized to them, he said that they were free. .....

Page-8: Despite the fact that they were very fast, as they said, was justified, the foreign press dubbed them “poisoners Prime Minister of India”. And only USSR newspapers to show restraint, the incident nevertheless caused a lot of noise....When they were driven out Bulmenya wishing to get their photos literally hung on lampposts, all the roads were filled with media representatives from around the world.... What Indian journalists, members of Indian delegation in Tashkent were doing and why did they hide their faces and camras at that time?.....Please remember Ahmet Sattarov did not say any word about the presence of Two Russian Lady for tasting the food. Only Indian journalist member of the delegation ‘Khas aadmi’ of Shastri is said the presence of those ladies.....Ahmet Sattarov stayed on as chief maitre d’hotel of the Kremlin 12 years - from 1959 to 1972, and for this prestigious service nearly lost his head.....Following points are here noteable: (1) Ahmet Sattarov thought that incident of poisoning might not occur at the reception banquet. (he is not denying of poisoning at the dacha of Shastri)

(2) Hardly. All products that fall on the table and a refrigerator were subjected to careful laboratory analysis, full service personnel under the supervision of the KGB sharp-sighted (this is not said about dacha of Shastri)

(3) Ahamet Sattarov said, “We gave a formal sign non-disclosure of 25 years. But the Kremlin is not nuclear, but a political object, so I know I have often seen on television, when I served banquets. And of course, knew about my family service.”

(4) Ahmet Sattarov’s duty was to supervise the waiters at the time of service. Simply put, he stood and commanded: submit then submit it. Sometimes, however, he was connected to the work. It means there might be possibility of mixing poison in the food by his assistant chef? Further possibility of poisoning was at the dacha of Shastri.

Preface - **Silent Assassins: Jan 11, 1966**

Contents of this book do not stop to hunt the silence! New facts, evidences and records showed that poisoning to lal Bahadur Shastri was happened in Tashkent. My IITian son suggested me that besides news articles I should write the books. According to him especially in America and other European countries, there is a habit of reading the books. This is the central point for writing this book.

Fortunately Adarniya Sudarshan Jee, former Sarsanghchalak of RSS visited Raipur in the last week of August of 2012. I personally presented three starting chapters of the book to Sudarshan Jee. After one week I came to know that he appreciated the same. This encouraged me for going to fast in completing the book. Now we have only remembarance of Sudarshan Jee. He died here in Raipur on September 15, 2012.

We should know: How J F Kennedy’s assassination cleared the way for the death of Shastri. For avoiding political assassinations, it is necessary to know how the head of the countries assign the assessins through their intelligence agencies such as CIA, FSB (KGB), ISI and others. If we could know the conspirators of mysterious death of Netaji Subhash chandra Bose then Dr. Shyama Prasad Mukherji would have been saved. If we could know the conspirators of Dr. Shyama Prasad Mukherjee then life of Lal Bahadur would have been saved. So I think that reading this book would be beneficial for readers and the country as well.

Mysterious death of Shastri was a state crime not only for India but also for USSR, Pakistan, US, UK and China especially who were directly or indirectly involved in Tashkent Summit. They are silent assassins.

Tashkent Summit was an international event. Mysterious death of the guest country’s Prime Minister there left so many questions before the world in which we are living. How the life could be saved of the great leaders?

On the basis of continuous net surfing, reading the books and articles, I am writing since 2005 about ‘the murder of Lal Bahadur Shastri’ in various websites including my own site: http://www.newsanalysisindia.com/

Now I have given the final shape to my all findings in this book. From the beginning since Jan 11, 1966 peoples in India relied heavily on the information

given by the Soviet authority and the government of India. Writings of Kuldip Nayar and C P Srivastav who were the part of Indian delegation at Tashkent are also not different. But my findings provided a far broader scope of the events around the death of Shastri due to heart attack by poison.

I have attempted to be diligent in giving proper credit to the authors for their material. Because I was attempting to paint an accurate picture of the landscape of the era, I would, on occasion, include facts taken from books, articles, and websites without remembering their exact source. If I have inadvertently failed to properly acknowledge words taken from other authors, I sincerely apologize.

How may I forget to give thanks to my senior friend learned journalist former editor of various Hindi and English dailies, Director of Granth Akadami of C.G. Government Shree Ramesh Naiyar who reminded me again and again for publishing the book 80% contents of which I had already written before three years. I have no hesitation to write that some time I felt who am I, if the government and the leaders of my country never tried sincerely to find out the truth.

Excuse me, listen me just a minute, if we see bluish death body in the road where wiping wife of the dead asking for autopsy and an enquiry, what will we do? There will be probe and agitation. What had we done to see the bluish body of our beloved Prime Minister lal Bahadur Shastri and how we reacted on doubt shown by Lalita Shastri? There was no probe, no FIR, no postmortem

Believe me at the time of writing this book, tears of lalita Shastri automatically came into my eyes. You may touch, you may see, you may feel, you may read these drops of tears in my book. Sorry, sorry if I have done any fault to write this book! I know when I send few outlines of this book to parliamentarians and other leaders they may keep silence, because this book don't help them in getting votes. Still if we keep silence then also the contents of the book does not stop to hunt the silence!

---- Premendra Agrawal

CONTENTS

Part - I

Chapters		
1.	Truth of Two Neighbors	1-34
2.	Kennedy's assassination cleared the way for Shastri's death	35-52
3.	Chakravyuh In Tashkent	53-73
4,	Death Night	74-97
5.	Tashkent Summit to Deceive India	98-124
6.	Poisoning Shastri by Russian Ladies ?	125-154
7.	Poison factory and death knell	155-182
8.	Shastri's life and Astrology	183-216
9.	Heart Attack by Poisoning	217-240
10.	Harold Wilson	241-256
11.	Timing discrepancies hint assassination?	257-276

Part - II

12.	Shastri's Death fact finding committee	278-308
13.	Leonid Shebarshin and Polyakov	309-325
14.	Dr. R N Chugh	326-336
15.	RTI means Right to Forgotten	337-351
16.	Successor Race	352-366
17.	PM Post to Indira	367-385
18.	Left leaning	386-404
19.	CIA _ ISI	405-425
20.	Memory Hole	426-438
	Source:	440

Book (Silent Assassins: Jan 11, 1966) available:
Old price: ~~Rs. 500.00~~
Price: INR 250.0000
Including Courier Charges

Commercial Services
Behind Sindhi School,Ramsagarpara,
Raipur,CG.-492001,India.
Mo.No. - 09425207574